सर्वेक्षण दर्पण

वर्ष 2013 अंक 10

भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
देहरादून

सर्वेक्षण दर्पण

वर्ष–2013 अंक–10

संरक्षक
डॉ. स्वर्ण सुब्बा राव
भारत के महासर्वेक्षक

परामर्श
श्री बी. पी. नैनवाल
अपर महासर्वेक्षक

संपादक
श्री धूम सिंह
सहायक निदेशक (रा.भा.)

संपादन सहयोग
सरोज बलूनी, हिन्दी अनुवादक, पूनम काला, हिन्दी अनुवादक
के. एस. नेगी, हिन्दी अनुवादक, शान्ति प्रकाश, पेन्टर,
जसबीर सिंह, खलासी, कंप्यूटर सहयोग अनुज कुमार, खलासी

✷ सम्पर्क सूत्र ✷

सहायक निदेशक (रा.भा.)
भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग
डाक बाक्स सं.–37, हाथीबड़कला इस्टेट देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड)

कृपया इस प्रकाशन के सम्बन्ध में अपने विचार/सुझाव sgo.hindi.soi@gov.in पर भेजें।

हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश

अनुच्छेद–351

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द–भण्ड़ार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

* * * * *

सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देहरादून अपनी हिन्दी गृह पत्रिका ''सर्वेक्षण दर्पण'' का दसवां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। यह महासर्वेक्षक कार्यालय के साथ ही विभाग के सभी जोन/क्षेत्रों/भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्रों व मुद्रण वर्गों के रचनाकारों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए भी सुखद अनुभूति देने वाला क्षण है। जिस प्रकार सीखने की कोई सीमा नहीं होती ठीक उसी प्रकार ज्ञान का आदान–प्रदान करने की भी कोई सीमा नही होती। यह निर्भर करता है आपके मनोबल पर, मनोबल जितना ऊंचा होगा, सफलता उतनी ही निकट होगी।

राजभाषा हिन्दी देश का गौरव है। इसके प्रचार एवं प्रसार की जिम्मेदारी हम सबकी है। हम अपनी मातृ भाषा का जितना सम्मान करेंगे उतना ही हमारे सम्मान में वृद्धि होगी। हमें अपने कार्य के साथ ही राजभाषा हिन्दी के सभी कार्यक्रमों व प्रत्रिका के प्रकाशन हेतु सक्रिय योगदान देना चाहिए।

अतः मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न लेख/रचनाएं, रूचिकर एवं ज्ञानवर्धक होगी। साथ ही मैं सर्वेक्षण दर्पण अंक–10 से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों लेखकों, रचनाकारों को बधाई देता हूँ जिनके योगदान से पत्रिका का सफल प्रकाशन हुआ है।

(डॉ. स्वर्ण सुब्बा राव)
भारत के महासर्वेक्षक

संपादकीय

भारत के महासर्वेक्षक कार्यालय की गृह पत्रिका ''सर्वेक्षण दर्पण'' का दसवां अंक आपके हाथों में सौंपते हुए बड़े ही गौरव की अनुभूति हो रही है भारतीय सर्वेक्षण विभाग की यह पत्रिका पिछले दस वर्षों से अधिकारियों और कर्मचारियों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी हुई है। मुझे खुशी है कि पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने उत्तरदायित्व और सम्मान को भी एक सुन्दर स्वरूप में व्यक्त कर पाते हैं।

भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है जब तक विज्ञान अनुसंधान और साहित्य केवल अंग्रेजी में ही उपलब्ध रहेगा, उसकी उपलब्धता एवं उपयोगिता कुछ लोगों तक ही सीमित रहेगी। अगर हमने इसकी उपयोगिता को आम जन तक पहुंचाना है तो उसे जनता की भाषा में ही जनता के सामने रखना होगा। हमारे देश में नित नवीन अनुसंधान हो रहे हैं, यह अनुसंधान अपनी भाषा में जन–जन के जीवन में उतरेंगे तभी हम समर्थ हो पाएंगे। गत अंकों की भांति इस अंक में भी सबकी मौलिक रचनाएं यथा लेख, संस्मरण, यात्रावृत्तांत लघु कहानियां, कविताएं इत्यादि सम्मिलित हैं।

मैं आपसे यह भी आग्रह करना चाहता हूं कि राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के लिए आप इसी प्रकार सततः सहभागी बने रहेंगे और हम आपके सहयोग के अनुसार पत्रिका में उत्तरोत्तर सुधार करते रहेंगे साथ ही हम आगामी अंक 11 के लिए सुधी पाठकों के अमूल्य सुझाव/मार्ग निर्देशन तथा रुचिकर रचनाओं की प्रतीक्षा में रहेंगे।

धूम सिंह
सहायक निदेशक (रा0भा0)

भारत के महासर्वेक्षक, डॉ. स्वर्ण सुब्बाराव, 26 जनवरी 2013 के अवसर पर कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए ।

भारत के महासर्वेक्षक, डॉ. स्वर्ण सुब्बाराव, एवं महासर्वेक्षक कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी आपदा पीड़ितों के लिए राहत सामग्री को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए।

महासर्वेक्षक कार्यालय में माननीय श्री जयपाल रेड्डी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री, भारत सरकार के दौरा कार्यक्रम के अवसर पर, डॉ. स्वर्ण सुब्बा राव, भारत के महासर्वेक्षक एवं उपस्थित अन्य अधिकारीगण ।

पर्यावरण दिवस के अवसर पर भारत के महासर्वेक्षक एवं अन्य अधिकारीगण कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण करते हुए।

महासर्वेक्षक कार्यालय द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देहरादून स्तर पर आयोजित 'चित्र के आधार पर कहानी लेखन प्रतियोगिता का दृश्य।

नराकास, देहरादून की छमाही बैठक में नराकास पत्रिका 'दूनवाणी' का विमोचन करते हुए भारत के महासर्वेक्षक, एवं अध्यक्ष, न.रा.का.स. डॉ. स्वर्ण सुब्बा राव, तथा राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद के प्रतिनिधि श्री के. पी. शर्मा एवं सदस्य–सचिव न.रा.का.स. ।

भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय में यूनिकोड पर आयोजित कार्याशाला का दृश्य।

राजभाषा पुरस्कार वितरण एवं सांस्कृतिक समारोह के अवसर पर मेजर जनरल आर. सी. पाढ़ी, अपर महासर्वेक्षक दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए।

राजभाषा पुरस्कार वितरण एवं सांस्कृतिक समारोह के अवसर पर मंचासीन मेजर जनरल आर.सी. पाढ़ी, अपर महासर्वेक्षक एवं अन्य अधिकारीगण ।

भारत के महासर्वेक्षक कार्यालय की गृह–पत्रिका 'सर्वेक्षण दर्पण' का विमोचन करते हुए मेजर जनरल आर. सी. पाढ़ी एवं अन्य अधिकारीगण ।

राजभाषा पुरस्कार वितरण एवं सांस्कृतिक समारोह के अवसर पर उपस्थित महासर्वेक्षक कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

हिन्दी समारोह के अवसर पर श्री बी. पी. नैनवाल, अपर महासर्वेक्षक, राजभाषा हिन्दी की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए।

मेजर जनरल आर. सी. पाढ़ी, अपर महासर्वेक्षक श्रीमति जसपाल कौर प्रद्योत, निदेशक, प्रशासन एवं वित्त, को हिन्दी श्रुतलेख प्रतियोगिता के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान करते हुए ।

मेजर जनरल आर. सी. पाढ़ी, अपर महासर्वेक्षक स्थानीय प्रशासन एवं वेतन अनुभाग को चल वैजयन्ती प्रदान करते हुए।

मेजर जनरल आर. सी. पाढ़ी, अपर महासर्वेक्षक हिन्दी समारोह के अवसर पर महासर्वेक्षक कार्यालय के अधिकारियों कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।

श्री बी. पी. नैनवाल, अपर महासर्वेक्षक, मेजर जनरल आर. सी. पाढ़ी, अपर महासर्वेक्षक, को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख / रचनाएं	लेखक / रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	भारतीय सर्वेक्षण विभाग	मेजर जनरल आर. सी. पाढी	1
2.	मानचित्र हर किसी की आवश्यकता	ब्रिगेडियर के.जी. बहल	4
3.	द ग्रेट आर्क के शिल्पकार–सर विलियम लैम्बटन	मनीष कुमार के. ढोके	7
4.	यमुना बचाओ	बी. पात्र	10
5.	दपर्ण	राजीव सिंह	12
6.	ललकार	चौधुरी महः आरिफ	12
7.	एहसास	आनन्द प्रकाश	13
8.	जरा हंस लो	श्रीमति मोनिका सिंह	14
9.	अवसाद (डिप्रेशन)	डॉ. एन.के. तिवारी	15
10.	हम कभी न बदलेंगे	मकबूल जान	17
11.	कबीर की सीख	श्रीमति सोमबाला	17
12.	तथ्य निराले	श्रीमति मोनिका सिंह	18
13.	प्रेम का सम्मान	श्रीमति सोमबाला	19
14.	अहमदाबाद, द्वारकाधीश व सोमनाथ की यात्रा	मानसिंह सिंगरौर	20
15.	समय	डॉ. एन के तिवारी	22
16.	भगवान की देन	सुनील डी बनकर	22
17.	सार्वजनिक सेवा के लिए त्याग	दिनेश शर्मा	23
18.	यह जीवन क्या है?	हंसराज सोनकर	24
19.	दो मुट्ठी जाड़ा	श्रीमति मोनिका सिंह	25
20.	उचित–अनुचित	अमित कुमार वर्मा	26
21.	बिखरता बचपन (थाम लो हाथ)	जय बल्लभ	28
22.	दहेज	राकेश जैन	28
23.	चिरस्मरणीय स्वर्णिम यात्रा वृत्तांत	श्रीमती चिन्मयी नाग	29
24.	वो त्रासदी के पल	श्रीमती सुमंगला चचड़ा	37
25.	अपनों की तलाश में	श्रीमती सुमंगला चचड़ा	39
26.	अति तृष्णा न कीजे	डी पी एस माटा	40
27.	केदारनाथ में तबाही	टीकम सिंह	42
28.	दर्द दामिनी	सुरेश चन्द्र	43
29.	'एक अनुभव' मै और मेरे पिता	के. एस. नेगी	44
30.	हिंदी शब्दों का अशुद्ध त्रुटिपूर्ण प्रयोग सरकारी लापरवाही और उपेक्षा के कुछ उदाहरण	डॉ. नीलम कुमार बिड़ला	45
31.	तीर्थ स्नान	राकेश जैन	46

32.	लोन	राकेश जैन	46
33.	'काजा' की रोमांचक यात्रा	अनिल मेहता	47
34.	वृद्धवस्था	श्रीमती शुभा वी नायर	59
35.	भोर	श्रीमती शुभा वी. नायर	59
36.	बेटी एक एहसास	राजेश वर्मा	60
37.	भारत का विज्ञान और प्रौद्योगिकी में योगदान	धीरज कुमार श्रीवास्तव	61
38.	गज़ल	डॉ नीलम कुमार बिड़ला	62
39.	समय का महत्व	अनुराग भटनागर	62
40.	सुविचार	धीरज कुमार श्रीवास्तव	63
41.	देहरादून	डी.पी. माटा 'कोमल'	64
42.	नव जागरण	बिपिन चन्द पान्डेय	64
43.	मां भारती	अमरदेव बहुगुणा	65
44.	समय की कद्र करें	श्रीमति सोमबाला	66
45.	पंच परमेश्वर	भगत सिंह भण्डारी	67
46.	धनु–थ्उड़ा (धनुष–बाण की प्रतियोगिता) एक पौराणिक विलुप्त प्रायः कला	सतीश चंद्रा	69
47.	उत्तराखण्ड आपदा–प्रकृति की चेतावनी	बचन सिंह	71
48.	हंसगुल्ले	जसबीर सिंह	73
49.	गज़ल	डॉ नीलम कुमार बिड़ला	74
50.	आरोग्य संबंधी दोहे	श्रीमती पूनम काला	74
51.	महासर्वेक्षक कार्यालय में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन एक संक्षिप्त रिपोर्ट।	हिन्दी अनुभाग	75

.....

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार
संबंधित लेखकों के निजी विचार हैं।
संपादक अथवा भारतीय सर्वेक्षण विभाग का
उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

.....

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

मेजर जनरल आर. सी. पाढी
अपर महासर्वेक्षक
महासर्वेक्षक का कार्यालय ।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग सर्वेक्षण और मानचित्रण के कार्य में देश की केन्द्रीय इंजीनियरिंग एजेंसी है जिसकी स्थापना ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के राज्य क्षेत्रों को संघटित करने हेतु मदद के लिए 1767 में की गई थी। यह भारत सरकार के प्राचीनतम इंजीनियरिंग विभागों में से एक है। इसके गौरवमयी इतिहास में विलयम लैम्बटन और जार्ज एवरेस्ट द्वारा विशाल वृहत् त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण का संचालन करना एक महत्वपूर्ण घटना है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग स्वयं को भू–स्थानिक आंकड़ों के सिद्धान्तों की (प्रगति) उन्नति, प्रैक्टिस, संग्रह और अनुप्रयोगों के लिए समर्पित करता है और डाटा उत्पादकों और प्रयोक्ताओं के मध्य सूचना, विचारों और प्रौद्योगिकीय नवीनताओं का सक्रिय आदान –प्रदान कर प्रोन्नत करता है, जो आने वाले समय में कम कीमत पर ऐसे उच्च संभव रिजोल्यूशन के डाटा को सुगमता से प्राप्त कर सकेंगे।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अधिकारी हिमालय का मानचित्रण करते हुए।

संक्षिप्त इतिहास

भारतीय सर्वेक्षण विभाग देश के प्राचीनतम वैज्ञानिक संस्थानों में से एक है। अठारहवीं शताब्दी में जब ब्रिटिश भारतीय उपमहाद्वीप पर पहुँचे तो देश का कोई प्रामाणिक मानचित्र उपलब्ध नहीं था केवल विभिन्न पर्यटकों द्वारा बनाए गए रेखाचित्रों की प्रतिलिपियाँ उपलब्ध थी। अतः देश की सीमा (विस्तार) के बारे में और अधिक जानने के उद्देश्य से और राजस्व उपार्जन का अभिलेख (रिकार्ड) रखने हेतु 1767 में भारतीय सर्वेक्षण विभग की स्थापना की गई। भारतीय सर्वेक्षण विभाग का उददेश्य देश के विभिन्न क्षेत्रों का विस्तृत स्थलाकृतिक मानचित्र तैयार करना था। विभाग के इतिहास में 1800वीं ई0 में संस्था द्वारा 'वृहत त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण' सहित कई अन्य ऐतिहासिक परियोजनाओं

पर कार्य करना महत्वपूर्ण घटनाएं है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग की परियोजना के तहत माऊट एवरेस्ट की ऊँचाई सर्वप्रथम जार्ज एवरेस्ट द्वारा ही दर्ज की गई हालांकि इस पर्वत का नाम बाद में उन्हीं के नाम पर रखा गया।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग विभिन्न मंत्रालयों और राज्य सरकारों के साथ उनकी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के आधार पर कार्य करता है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने शहरी विकास मंत्रालय (शहरों और कस्बों के गाइड मानचित्र के लिए), जल संसाधन मंत्रालय (भारत की नदियों के जलग्रहण क्षेत्र के मानचित्र के लिए), समेकित तटीय क्षेत्र परियोजना (आईसीजेडएमपी), कोयला और, खनन मंत्रालय (कोयला खदान क्षेत्रों का मानचित्रण एवं अध्ययन) में सहयोग किया है। मानचित्रण के लिए विभिन्न वैज्ञानिक समर्थित सर्वेक्षण जैसे मैगनेटिक सर्वेक्षण भी भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा ही किया गया है। पेडस्टल मानचित्रण भी संस्था के कार्यों में है परन्तु अब यह राज्य का विषय है।

मानचित्रण एक अनवरत प्रक्रिया है मानव द्वारा मानवीय और प्राकृतिक कारणों से भू–आकृतियों में कई परिवर्तन होते हैं, इसलिए समय–समय पर मानचित्रों को अद्यतन करने की आवश्यकता होती है। 2005 के उपरान्त सरकार की नई नीति के अनुसार, राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता किए बिना, सार्वजनिक क्षेत्र में भू–स्थानिक आंकड़ों की जानकारी प्रदान करना अनिवार्य है। जो एक चुनौती है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग विभिन्न परियोजनाओं को निजी भू–स्थानिक ऐजेंसियों को आउटसोंसिंग कर रहा है।

बाएः 1923 की भारतीय सर्वेक्षण विभाग के यूनिट का प्रतीक चिह्न(मोनेाग्राम)।
स्रोतः चीनी तुर्कीस्तान के मानचित्र पर ओरेएल स्टेइन का कार्य–'विवरण।
दांएः भारतीय सर्वेक्षण विभाग का वर्तमान प्रतीक चिह्न (मोनेाग्राम)।

ओपन सीरीज मानचित्र (ओ.एस.एम.)

वर्ष 2005 में राष्ट्रीय मानचित्रण नीति के अनुसार भारतीय सर्वेक्षण विभाग दो प्रकार के मानचित्र तैयार करेगाः रक्षा उद्देश्यों के लिए मानचित्र तथा वे मानचित्र जो किसी वर्गीकृत श्रेणी में शामिल नहीं हैं। ये मानचित्र सामान्य जनता द्वारा प्रयोग में लाए जाते हैं ये ओपन सीरीज मानचित्र कहलाते हैं। ये मानचित्र विभिन्न पैमाने यथा–1:50,000,1:25,000 और 1:10,000 पैमाने पर उपलब्ध हैं। इन मानचित्रों को नवीनतम जी.आई.एस. प्रौद्योगिकी तथा तकनीक के प्रयोग द्वारा तैयार किया जाता है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग निकट भविष्य में काफी संख्या में मानचित्रों को अपनी वेबसाइट पर अपलोड करेगा।

मूल फोटोग्राफ 1930 में मेजर जनरल आर. सी. ए. एज के सौजन्य से, स्रोत www.lib.lsu.edu

प्राइवेट संगठन

वर्तमान में विभिन्न भू–स्थानिक संगठन सर्वेक्षण और मानचित्रण के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। हम इन ऐजेंसियों को यह अनुदेश देते हैं कि वे भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मानचित्रों को आधार बनाकर कार्य करें ताकि मानचित्रण के कार्य में पुनरावृत्ति न हो। इससे उन्हें आसानी से आधार डाटा उपलब्ध हो जाएगा तथा उनका नया डाटा विभाग को भी उपलब्ध हो जाएगा। विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन सर्वेक्षण और मानचित्रण की अनेक अंतर मंत्रालय परियोजनाएँ भविष्य में जारी की जाएंगी। आने वाले वर्षों में और अधिक कार्य करने के लिए भू–स्थानिक विधाओं को तैयार किया जाना चाहिए।

चुनौतियां

सर्वेक्षण और मानचित्रण के कार्य ने काफी प्रगति की है लेकिन उपलब्ध मानवशक्ति में कमी आई है। सरकारी नीतियों के अनुसार भारतीय सर्वेक्षण विभाग में प्रशिक्षित मानवशक्ति की नई भर्तियां नहीं हैं। नई प्रौद्योगिकी के साथ कदम से कदम मिलाकर कार्य करना भी एक चुनौती है इसलिए इन परिवर्तनों के लिए मानवशक्ति को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग एक सेवा संगठन है तथा जनसाधारण और प्रयोगकर्ताओं की इच्छाओं को जानना ही अपने आप में एक चुनौती है।

हमें अभी काफी आगे जाने की आवश्यकता है तथा इस संबंध में हमें अधिकारी वर्ग, निर्णयकर्ताओं तथा सामान्य जनता को रोजमर्रा की जिंदगी में मानचित्रण तथा इसकी उपयोगिता के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने की आवश्यकता है।

* * * * *

कुल मिलाकर जीवन जो है वह अनसुलझी समस्याओं,
विजय व पराजय का ही मिश्रण है।
समस्या यह है कि प्रायः जीवन से जूझने के बजाय उसका विश्लेषण करने लगते हैं।
लोग अपनी असफलताओं से कुछ सीखने के बजाय या
उसका अनुभव लेने के बजाय उसके कारणों की चीर–फाड़
करने लगते हैं। मेरा यह मानना है कि कठिनाइयों एवं संकटों के माध्यम से ईश्वर हमें आगे बढ़ने अवसर प्रदान करता है।
इसलिए जब आपकी उम्मीदें, सपने व लक्ष्य चूर–चूर हो गए हों तो उसके भीतर तलाश कीजिए, आपको छिपा हुआ कोई सुनहरा अवसर अवश्य मिलेगा।

डॉ. अबुल पकीर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम भारत के पूर्व राष्ट्रपति

मानचित्र हर किसी की आवश्यकता

ब्रिगेडियर के.जी. बहल
उप महासर्वेक्षक (सेवानिवृत्त)
महासर्वेक्षक का कार्यालय ।

10 अप्रैल, सम्पूर्ण देश में 'सर्वेक्षण दिवस' के रुप में मनाया जाता है। केवल भारतीय सर्वेक्षण विभाग में ही नहीं बल्कि सभी राज्य सरकारें और संघ शासित क्षेत्र इस दिवस को उचित प्रकार से मनाते हैं सर्वेक्षण के इतिहास में इस दिन का विशेष महत्व इसलिए है क्योंकि इसी दिन 10 अप्रैल 1802 से मेजर विलियम लैम्बटन ने जी टी एस का कार्य प्रारम्भ किया था और मद्रास वैधशाला के नजदीक कैप कैमरिन से बेंगलूरु तक आधार रेखा के मापन द्वारा ग्रेट आर्क को मापने का कार्य प्रारम्भ किया और आर्क को बाद में हिमालय के उत्तर में बहुत परिशुद्धता से मसूरी की पहाड़ियों में बिनोग तक बढ़ाया।

सर्वेक्षण का यह कार्य अति दुर्गम भू–भागों, कठिन क्षेत्रों, तीव्र ढलान वाली पहाड़ियों, चौड़ी और गहरी नदियों, घने जगलों, जंगली जानवरों और घातक मच्छरों के बीच किया गया। सबसे पहले अज्ञात रास्तों से इस प्रकार के आर्क को देखने और बिन्दुओं की दूरी को जोड़ने, कठिन अभिग्रहण करने तथा भूमि पर मापन के वृहत् साहासिक एवं भागीरथ प्रयास किया गया। इस कार्य को करने में युद्ध की ही भांति बहुत से व्यक्तियों ने अपनी जाने गंवाई है। हम उन कार्मिकों को सलाम करते हैं जिन्होंने इस महान कार्य को अनेक परेशानियों कठिनाईयों एवं बाधाओं का सामना करते हुए अपनी जान की बाजी लगाकर बड़े साहस, समर्पण एवं कर्तव्यनिष्ठा से पूरा किया है।

सर्वेक्षण का संबंध सामान्य रूप से भूमि को नापना और तदनुसार उन्हें कागज पर चित्रित करना है जिससे कि पृथ्वी की सतह की विशेषताओं की पहचान जहां तक ईमानदारी से संभव हो मानचित्र पर पैमाने की सीमाओं के भीतर चित्रण करना है। इसलिए उपयोग कर्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के पैमाने पर अनेक मानचित्र तैयार किए गए है। यही कारण है कि किसी क्षेत्र की सभी वांछित विशेषताओं को चित्रित करने के लिए सभी को विभिन्न पैमाने पर इलाके की विविधताओं को एक नियंत्रण में बांधने की बुनियादी आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। 10 अप्रैल 1802 को मेजर लैम्बटन ने जो ज्योडीय नियंत्रण प्रारम्भ किया वह भारत में सर्वेक्षण का आधार बना।

ज्योडेसी से अभिप्राय पृथ्वी के आकार, आकृति और संरचना की जांच करना है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग में ज्योडीय कार्य को सामान्यतया विभाग कहा जाता है जिसमें प्राथमिक (ज्योडीय) त्रिकोणमितीय अक्षांश, देशान्तर और गुरुत्व का निर्धारण किया जाता है। उनसे पृथ्वी का परिशुद्ध रेखाचित्र प्राप्त किया जाता है जिससे त्रिकोणीयन द्वारा निर्धारित बिन्दुओं को इसकी वक्र सतह पर यथार्थ रूप से स्थापित किया जाता है। निधारित बिन्दुओं की यह पद्धति सभी स्थालाकृतिक और राजस्व सर्वेक्षण को एक साथ नियंत्रित करती है। वृहत् पैमाने पर सही सर्वेक्षण के लिए एक अच्छा ढांचा कार्य आवश्यक है और परिशुद्ध सर्वेक्षण कार्य के लिए कार्य की प्रकृति के अनुसार विभिन्न संशोधनों को कार्य व्यवहार में लाना आवश्यक होता है। यह काम जितना आसान दिखता है उतना आसान नहीं हैं इसमें निम्नलिखित प्रकार के संशोधन सम्मिलित हैं :–

1) ऊँचाई निर्धारण के लिए परिशुद्ध तलेक्षण;
2) तटीय क्षेत्रों के लिए ज्वारीय प्रागुक्तियाँ;
3) चुम्बकीय सर्वेक्षण;
4) गुरुत्वीय बल का प्रेक्षण;
5) अक्षांश और देशान्तर निर्धारण के लिए खगोलीय प्रेक्षण;
6) भूकम्प और मौसम–विज्ञान संबंधी प्रेक्षण;

कई प्रकार की उपयोगी गतिविधियां है जिनके अन्तोगत्वा उचित प्रकार से सम्मिलित क्रमानुसार व्यवहारिक प्रयोग द्वारा जिऑड/गोलाभ का सही आकार प्राप्त किया जाता है। उपरोक्त सभी संशोधनों के अनुप्रयोग के अतिरिक्त मुख्य वस्तु 'आधार रेखा' है– आरम्भ में खींची गई रेखा प्रारम्भिक त्रिकोण की एक ओर की भुजा बन जाती है जो सर्वेक्षण में कोण और लम्बाई मापने के लिए उपयोगी होती है उसे त्रिकोणीयन कहा जाता है। त्रिकोणीयन इस लिए कि सम्पूर्ण व्यवस्था त्रिकोणों पर आधारित है जोकि आगे बढ़ते हुए बहु विकल्पि हो जाती है जिससे कि विस्तार के लिए त्रिकोणों की प्रत्येक रेखा आधार रेखा के रूप में कार्य करती है। प्रारम्भ में आधार रेखा को फैलाया जाता है और इसके पश्चात निश्चित अन्तरालों पर उपकरणों आदि से बहुत सटीकता से मापकर इसकी जॉच की जाती है जिसका मिलान और उसकी परिशुद्धता की जॉच की गई हो। भूमि पर मापन नियमित अन्तराल पर तापमान, दबाव और स्तर की सूचना लेकर अनुभवी व्यक्तियों द्वारा किया जाता है।

जैसा कि हम सब जानते हैं, पृथ्वी गेंद की तरह गोल है किन्तु वह इसकी तरह समतल नहीं है। यह सब ओर से उबड़–खाबड है, ऊँचे नीचे मैदान हैं, नदियां हैं और बीहड़ क्षेत्र की विविधता से पूर्ण है। परन्तु माप लेने के लिए कुछ समतल सतह की आवश्यकता होती है जो कि लगभग पृथ्वी के आकार के समान होनी चाहिए। गोले को हम सब जानते हैं और पृथ्वी का आकार एक चपटे गोलाभ के समान है और जिऑड एक गुरुत्वीय समविभव सतह द्वारा प्रत्यात्मक रुप में हैं। जिऑडल सतह पूर्णतया किसी गणितीय अभिव्यक्ति द्वारा प्रदर्शित नहीं की जा सकती परन्तु जब एक आयताकार दीर्घवृत्तज उसके लघु अक्ष पर घुमाया जाता है तो तब इस गोलाभ द्वारा अच्छी प्रकार चित्रित की जा सकती है। 1830 में सर जार्ज एवरेस्ट ने सम्पूर्ण भारतीय उप महाद्वीप में जिऑड के अनुरुप एक गोलाभ का आविष्कार किया इसका अक्ष कल्यापुर से होकर

गुजरने के कारण कल्यापुर इसके केन्द्र के रुप में है। इसका उपयोग न सिर्फ भारत में बल्कि पाकिस्तान, नेपाल, म्यांमार, श्री लंका, बांग्लादेश, भूटान और अन्य दक्षिण एशियाई देशों द्वारा किया जाता है। नियंत्रण कार्य की आवश्यकता किसी भी प्रकार के मानचित्र यथा–सैटेलाइट इमेजरी द्वारा अथवा राज्य सरकारों द्वारा तैयार किए गए राजस्व मानचित्र तैयार करने के लिए होती है। भारत में नौ सेना के लिए आवश्यक मानचित्र नौ सेना जल सर्वेक्षण विभाग द्वारा तैयार किए जाते हैं। वायु सेना के लिए मानचित्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति भारतीय सर्वेक्षण विभाग करता है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा विभिन्न प्रकार के मानचित्र तैयार कर प्रकाशित किए जाते हैं। राज्य सरकारें राजस्व तथा अन्य कार्यों के लिए तथा अन्य एजेंसियां/कार्यालय भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मानचित्रों को आधार मानकार मानचित्र तैयार करते हैं।

राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सीमाएं केवल भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा ही प्रमाणित की जाती हैं। मानचित्र के पैमाने के आधार पर मानचित्रों का वर्गीकरण किया जाता है जैसे–भौगोलिक मानचित्र छोटे पैमाने पर तैयार किए जाते हैं। राजनैतिक मानचित्र, रेलवे तथा सड़क मानचित्र 1:1 मि., 1/250,000 पैमाने पर स्थलाकृतिक मानचित्र, कैदेस्थल मानचित्र, शहर मानचित्र, परियोजना मानचित्र, गाइड मानचित्र आदि सभी प्रकार के व्यवहारिक उपयोग के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग मानचित्र उपलब्ध कराता है। कुछ मानचित्र जिन्हें सुरक्षा की दृष्टि से सरकार द्वारा प्रतिबंधित घोषित किया गया है, को कुछ विशिष्ट फार्मों में की गई मांग के आधार पर विभागीय प्रयोग के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग से प्राप्त किया जा सकता है।10 अप्रैल का यह दिन भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा ओपन डे के रुप में मनाया जाता है तथा इस दिन विभाग द्वारा मानचित्रों के संबंध में सूचना प्रदान की जाती है। आगन्तुकों को यह भी बताया जाता है कि मानचित्र किस प्रकार तैयार किए जाते हैं तथा इनको तैयार करने में कितने प्रयास सम्मिलित होते हैं इसके अतिरिक्त इस दिशा में अपनाई गई नवीनतम तकनीक की भी जानकारी दी जाती है।

हर एक व्यक्ति को अपने रोजमर्रा के कार्यों के लिए मानचित्रों की आवश्यकता पड़ती है तथा मानचित्रों के प्रयोग से जीवन को आसान और बेहतर बनाया जा सकता है। मानचित्रों का प्रयोग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में किया जाना चाहिए।

* * * * *

सोचें हिन्दी में, लिखें हिन्दी में, पढ़े हिन्दी में तो हिन्दी
दिन–प्रतिदिन उन्नति करती जाएगी।
याद रखें कि भाषा की क्षमता उसके प्रयोग पर ही निर्भर करती है।

डॉ. हरिवंश राय बच्चन

दि ग्रेट आर्क के शिल्पकार–सर विलियम लैम्बटन

मनीष कुमार के. ढोके,
सर्वेक्षक
महाराष्ट्र एवं गोवा, भू–स्था. आं. के., पुणे

सर विलियम लैम्बटन भारतीय सर्वेक्षण के शिल्पकार हैं, जिन्होंने दि ग्रेट आर्क की संकल्पना दुनिया के समक्ष प्रस्तुत की थी। वह एक विश्व प्रसिद्ध खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, जीओग्राफर और अभियंता थे। उनके बारे में मुझे भारतीय सर्वेक्षण विभाग में नियुक्त होने के पश्चात् जानकारी मिली। हमेशा से ही मुझे उनके बारे में जानने एवं जानकारी एकत्रित करने की जिज्ञासा रहती थी। मुझे उनके द्वारा किए गए कार्यों पर हमेशा से अभिमान रहा है एवं हमारा भारतीय सर्वेक्षण विभाग भी उनके किए गए कार्यों को आज भी याद करता है।

सर विलियम लैम्बटन का जन्म Crosby Grange, नार्थएलर्टन के पास नार्थ यॉर्कशायर में हुआ। उनके पिता पेशे से किसान थे। बचपन से ही उनको गणित में काफी रूचि थी। उन्हें सन् 1781 में ग्रामर स्कूल में पढ़ने का मौका मिला और फिर उनका चयन इंसिगनशिप (स्थान का नाम) में 33 रेजिमेंट ऑफ फोर्ट में हुआ। वे बैरेक मास्टर के पद पर नोवा स्कोटिया में भर्ती हुए। वे जब 33 रेजिमेंट में थे तब उन्होंने अमेरिका वार ऑफ इनडिपेन्डेन्स में भाग लिया जिसके परिणाम में उन्हें यॉर्कटाउन में बंदी बनाया गया। वहां से छूटने के बाद वे न्यू ब्रून्सविक आए और वहां उन्होंने अमेरिका एवं कनाडा के मध्य सीमा निर्धारण के सर्वेक्षण का कार्य किया। सन् 1795 में ड्यूक आफॅ योंक के आदेश से सारे सिविलियन ऑफिसरों को रेजीमेंट से निष्कासित कर दिया गया, जिनमें उनका निष्कासन भी शामिल था। 13 वर्ष की रेजीमेन्ट सर्विस से सेवानिवृत्ति के पश्चात् वे 33वीं रेजिमेंट कलकत्ता में शामिल हुए। 33वीं रेजिमेंट कलकत्ता उस समय सर आर्थर वेलेस्की के कमांड में थी। सन् 1796 में उन्हें लेफ्टिनेंट के पद पर पदोन्नत किया गया और भारत में उनकी तैनाती की गई।

सन् 1799 में कर्नल मैकेन्जी के नेतृत्व में चौथा आंग्ल–मैसूर युद्ध प्रारंभ हुआ। जिसमें अंग्रेजों की विजय हुई और मैसूर ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हो गया। सर विलियम लैम्बटन ने ब्रिटिश सरकार के सामने सर्वेक्षण का प्रस्ताव रखा, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के वास्तविक अधीन स्थल/क्षेत्र को जानना था। ब्रिटिश सरकार ने उनके प्रस्ताव को मंजूरी दी एवं सर विलियम लैम्बटन ने सर्वेक्षण का कार्य उसके दो वर्ष बाद प्रारंभ किया। उन्होंने सर्वेक्षण के लिए Geodesy प्रणाली का प्रयोग किया, जिसकी खोज William Roy (Great Britain) ने की थी।

सर विलियम लैम्बटन ने क्षेत्र मापन का सर्वेक्षण आरंभ बेस लाइन ऑफ सेन्ट थॉमस माउन्ट मद्रास से किया और त्रिकोणीय का कार्य करते हए मैंगलोर तक गये। सन् 1806 में उन्होंने अपना अक्षांशीय मापन 100 मील नॉर्थवार्ड मैंगलोर तक किया, जहाँ ब्रिटिश साम्राज्य का क्षेत्राधिकार समाप्त होता था। सर्वेक्षण का कार्य करते हुए वे हैदराबाद

से नागपुर की ओर आए, इसी दौरान वे हिंगणघाट में 13 वर्ष तक रहे थे। 70 वर्ष की आयु में वह हिंगणघाट में गंभीर रुप से बीमार हुए तथा 20 जनवरी 1823 को उनकी मृत्यु हुई। जब इसकी जानकारी मुझे हुई तो मैंने मन में सोचा की उनका समाधी स्थल तो वहाँ जरुर होगा एवं समाधी स्थल के दर्शन की मेरी जिज्ञासा और प्रबल हो गई। मैं जब अवकाश पर अपने घर (भद्रावती, जिला–चंद्रपुर) गया तब अगली सुबह मैंने अपना कैमरा लिया और अपने मित्र को लेकर निकल पड़ा, सर विलियम लैम्बटन की समाधी की ओर जो हिंगणघाट में स्थित है। हिंगणघाट स्थल मेरे घर से लगभग 60 किमी की दूरी पर स्थित है। सबसे पहले हम जाम नामक स्थल पर पहुँचे जो हिंगणघाट से 7 किमी की दूरी पर है। मैंने वहाँ उतरकर कुछ जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की पर व्यर्थ ही रही। हम फिर बस पकड़कर हिंगणघाट की ओर निकल पडे। बस की यात्रा के दौरान मैंने सहायता के लिए अपनी भांजी, जो कि 11वीं विज्ञान की छात्रा है को फोन किया जो वहीं हिंगणघाट में रहती थी। मुझे लगा कि वह हिंगणघाट की रहिवासी है तथा वह हमें आसानी से सब जगह घुमाने में मदद कर सकती है।

इसके बाद हिंगणघाट में पहुँचने पर मैंने अपनी भांजी (श्रेवता पिसे) से पूछा कि सर विलियम लैम्बटन की समाधी के बारे में कुछ पता है? तो उसने बताया की यह नाम तो मैंने पहली बार सुना है। लेकिन उसने मुझे बताया कि यहाँ एक टाका ग्राउंड है, जिसमें काला गोटा नाम का पत्थर है। जब मैंने वहां जाकर देखा तो वहां आस–पास अतिक्रमण और गंदगी थी। लेकिन मैंने सोचा की ऐसी जगह पर समाधी स्थल कैसे हो सकता है? अपने मन में तो मैंने कुछ और ही सोच रखा था और हम आगे बढ गए। फिर मैंने सोचा कि चलो इस जगह के कुछ बुजुर्गों से इस बारे में जानकारी ली जाए। लेकिन मेरे हाथ निराशा ही लगी, किसी को भी सर विलियम लैम्बटन के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। घूमते–घूमते दोपहर के 2.00 बज गये थे। लेकिन समाधी स्थल की जानकारी हासिल नहीं हो पा रही थी। फिर मैंने अपना रुख तहसील कार्यालय की ओर किया, मैंने सोचा की वहां भूमि अभिलेख विभाग से ही कुछ जानकारी जरुर प्राप्त हो सकती है।

मैं पूरी तरह स्तब्ध रह गया कि इतने महान कार्य करने वाले व्यक्ति के समाधी स्थल की जानकारी स्थानिकों को नहीं है। मैंने हार नहीं मानी और मैं तहसील कार्यालय के भूमि अभिलेख विभाग में पहुँचा। जब मैं उस कार्यालय में पहुंचा तो वहाँ काफी भीड़ थी। मैंने कुछ अधिकारियों से मिलकर अपना परिचय दिया और उनसे सर विलियम लैम्बटन के समाधी स्थल की जानकारी मांगी। अधिकारियों से बातचीत करके यह तो पता चला कि सर विलियम लैम्बटन की समाधी हिंगणघाट में ही स्थित है, तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा और मेरे चेहरे पर मुस्कान की लहर दौड़ गयी। फिर अधिकारियों ने जब मुझे बताया कि उनका समाधी स्थल टाका ग्राउंड में काला गोटा नाम से प्रसिद्ध है तो मैं स्तब्ध रह गया एवं मेरी खुशी निराशा में बदल गई। अधिकारियों ने मुझसे कहा कि अगर आपको इससे अधिक जानकारी चाहिए, तो वह एक कर्मचारी के पास है जो वर्तमान में अवकाश पर है, उन्होंने मेरे साथ एक कर्मचारी को उनके घर तक भेजा। हम सब मिलकर उस कर्मचारी के घर पहुँचे जो अवकाश पर थे। उनके घर जाने पर देखा तो उनके एक पैर में प्लास्टर लगा था। इस कारण वह अवकाश पर थे। जब मैंने उनसे अपने बारे में जानकारी दी और वहाँ आने का कारण बताया तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

उनसे मिलने पर हमें काफी जानकारी उपलब्ध हुई। उन्होंने जानकारी देते समय इस बात पर विशेष ध्यान दिया की सर लैम्बटन की समाधी की दयनीय अवस्था है तथा प्रशासन भी उस स्थल के लिए उदासीन है।

उससे जानकारी प्राप्त करने के बाद हम समाधी स्थल की ओर निकल पड़े। जब हम फिर से टाका ग्राउंड पहुँचे तो सर लैम्बटन का समाधी स्थल कहीं नजर नहीं आ रहा था क्योंकि आस–पास इतने मकानों का निमार्ण हो चुका था कि समाधी स्थल (काला गोटा) दिखाई नहीं दे रहा था । जब हम गलियों से निकल कर आगे की ओर गये, तो उनका समाधी स्थल दिखाई देने लगा, एक ओर तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था क्योंकि जिस कार्य के लिए मैं निकला था उसमें सफलता प्राप्त हुई। उनके समाधी स्थल पर पहुँचने पर ''भारतीय सर्वेक्षण के जनक'' को शीश झुकाकर श्रद्धांजलि दी दूसरी ओर मैं इसलिए निराश था कि इतने महान कार्य करने वाले व्यक्ति के समाधी स्थल की दशा इतनी दयनीय है। जहाँ तक पहुँचने में कई गलियों से होकर गुजरना पडता है व समाधी स्थल की देखरेख की व्यवस्था भी नदारद है। समाधी स्थल के चारों ओर इतनी गंदगी थी कि वहां ज्यादा समय तक रुका नहीं जा सकता था। मैंने वहाँ जाकर कुछ तस्वीरें निकाली जो इसके साथ संलग्न है। आस–पास का सर्वेक्षण किया तो वहाँ मुझे अपने विभाग का GTS BM भी दिखाई दिया, जो कि 1907 का था। लेकिन उस GTS BM का उपयोग वहाँ के स्थानिक अपने कपड़े सुखाने हेतु कर रहे थे।

सर विलियम लैम्बटन की समाधी 300 वर्ग फुट पर निर्मित की गई है जिस पर 52 चौकोर काले पत्थर लगाये गये हैं एवं स्मारक के ऊपर 34 काले पत्थरों से एक चौकोर स्तंभ खड़ा किया गया है। पुरातत्व विभाग ने भी कुछ वर्षों पहले उसके चारों ओर सीमा निर्धारण कर एक दिवार खड़ी की है। शाम के 4.00 बजे फिर मैं वहाँ से निकल गया। इसके बाद मैं उन सभी (भूमि अभिलेख के कर्मचारियों/अधिकारियों) को धन्यवाद देने वापस लौटा जिन्होंने मुझे यहाँ तक पहुँचने में सहायता की थी ।

दि ग्रेट आर्क के 100 वर्ष पूर्ण होने पर उनके किये गये कार्यों के लिए अमेरिका, कनाडा और इंग्लैंड जैसे कई देश विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करते आ रहे हैं वहीं अपने देश में इतने महान व्यक्ति के समाधी स्थल की दयनीय दशा है। भारतीय सर्वेक्षण का कार्य करते हुए ही उनकी मृत्यु हुई। इसके बाद मैंने अपनी भांजी के घर जाकर थोडा विश्राम किया और फिर शाम 5.00 बजे बस द्वारा अपने घर की ओर निकल पड़ा। बस की यात्रा के दौरान मेरे मन में बार–बार यही सवाल उठता रहा कि जब मैं उनकी समाधी पर पहुँचा तो इतना निराश था तो सात समुद्र पार से आने वाले सैलानी जब भारत आते होंगे, तो हिंगणघाट में समाधी स्थल की दयनीय दर्शन करके देश के प्रशासन के प्रति क्या चित्रण करते होंगे? सर विलियम लैम्बटन की समाधी स्मारक की जानकारी देने एवं स्थल तक पहुँचने में मेरी इन लोगों ने काफी सहायता की, यह हैः–मेरे मित्र मनोज देवगडे (भद्रावती, जिला–चंद्रपुर), मेरी भांजी श्रेवता पिसे (हिंगणघाट), भूमि अभिलेख विभाग, हिंगणघाट के कर्मचारी श्री राकेश शीवा चव्हाण और श्री नारायण चंदुजी बलखंडे। इन सभी को मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ तथा मैं इनका आभारी हूँ।

* * * * *

यमुना बचाओ

बी. पात्र
अधिकारी सर्वेक्षक,
महासर्वेक्षक का कार्यालय।

हिंदु शास्त्रों में गंगा, यमुना, सिन्धु, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा, कृष्णा, कावेरी, ऋषिकुल्या, वैतरणी, कोसी, गोमती, घाघरा, सरजु एवं सोन आदि पवित्र नदियों का वर्णन है। हिंदु शास्त्रों में इन नदियों को मातृ नदी का अलंकरण दिया गया है। हिंदु शास्त्रों के अनुसार इन नदियों में प्रतेह व पुण्य तिथियों के अवसर पर स्नान करने से पुण्य प्राप्ति होती है। इन नदियों में से गंगा व यमुना का नाम पृष्ठ भूमि में रहता हैं। इन नदियों का पानी स्वच्छ होने के कारण उन्हें पवित्र माना जाता है। देश विदेश में भी गंगा व यमुना के पानी की स्वच्छता को माना गया है। गंगा और यमुना भारत के ऐतिह एवं गौरव का प्रतीक है।

यमुना नदी उत्तराखण्ड राज्य में हिमालय स्थित यमुनोत्री ग्लेशियर से उत्पन्न हो कर अंत में इलाहाबाद स्थित संगम पर गंगा के साथ सम्मलित हुई है। यह नदी उत्तराखण्ड, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश राज्यों में प्रवाहित होती है। इसकी कुल लम्बाई करीब 1300 कि0मी0 है, जिसमें से लगभग 22 कि0मी0 दिल्ली में प्रवाहित होती है। यह नदी हिमालय से उत्पन्न होने के कारण सदैव निरधारा में प्रवाहित है।

यमुना का पानी यमुनोत्री से हरियाणा के हथिनीकुण्ड बैराज तक स्वच्छ व साफ रहता है परन्तु तत्पश्चात़ उसके किनारों पर स्थित विभिन्न शहरों के ड्रैनेज का पानी छोडे जाने के कारण प्रदूषित है। यमुना नगर, करनाल, पानीपत, सोनीपत, बागपत, दिल्ली, नोएडा, वृन्दावन, मथुरा, आगरा, फिरोजाबाद, इटावा, औरेया, हमीरपुर एवं इलाहाबाद के ड्रैनेज एवं सिवरेज पानी के द्वारा प्रभावित होकर प्रदूषित हो गया है। यमुना का पानी हाथिनीकुण्ड बैराज के बाद प्रदूषित होकर क्रमशः दिल्ली पहुंचने के पहले ही 55 प्रतिशत प्रदूषित हो जाता है। विशेषकर हरियाणा का यमुना नगर, पानीपत आदि शिल्पांचल से दैनिक करीब 200 मिलियन लीटर कीचड़/सिल्ट यमुना में प्रवाहित होता है। यमुना के पानी को साफ करने के यंत्र कार्य नहीं कर पाते। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार ये इकाईयां असफल होने के कारण वह प्रदूषित जल जमुना में प्रवाहित हो जाता है। यमुना के पानी को धनुवा स्केप के पास परीक्षण किया गया था जहां पर प्रदूषण की मात्रा अत्यधिक पायी गई है। किन्तु यमुना के पानी को वजीराबाद जलकल में शुद्ध करने के उपरान्त दिल्ली में सप्लाई किया जाता है। परन्तु दिल्ली से सर्वाधिक प्रदूषित होकरयह प्रदूषण करीब 96 प्रतिशत तक पहुंच जाता है। जो कि पीने योग्य नहीं रह जाता।

तत्पश्चात् चम्बल, सिन्ध, धासन, बेतवा एवं केन आदि नदियों से प्रवाहित स्वच्छ जल यमुना में सम्मलित होने के कारण यमुना की प्रदुषण मात्रा कुछ घटकर संगम के निकट 70 प्रतिशत दिखाई देती है। गंगा व यमुना को प्रदुषण मुक्त करने हेतु असी–दशंधि में बहुत चर्चा चली एवं परियोजना बनाने का प्रस्ताव रखा गया था। हिंदु धर्म सभाओं ने भी इस महत्वकांक्षा का जोरशोर से प्रचार किया। भारत सरकार ने गंगा व यमुना को इस प्रदूषण से मुक्त करने हेतु प्राथमिकताएं दीं। इसके तहत सन् 1993 में

यमुना प्रदूषण एक्शन प्लान का गठन किया गया है। यमुना की सफाई हेतु यमुना प्रवाहित समस्त राज्यों में स्थित शहरों में सफाई परियोजना की ईकाईयों की स्थापना की गई। ये सफाई इकाईयां दिल्ली, मथुरा, आगरा, फिरोजाबाद, ईटावा, औरेया, हमीरपुर एवं इलाहबाद में कार्य कर रही हैं। यह देखने में आया है कि ये सफाई इकाईयां सफल रूप में काम नहीं कर पा रही है। इसलिए यमुना सफाई की समस्त परियोजनाएं विफल हुई हैं।

सरकार के गले की हड्डी बने नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) ने भी अब यमुना सफाई की परियोजनाओं में सरकार को विफल घोषित कर दिया है । नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक ने साफ शब्दों में सुप्रीम कोर्ट में कहा है कि हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश में यमुना नदी में प्रदूषण रोकने के लिए चलाई जा रही सभी परियोजना इकाईयां नाकाम हैं । वे नदी में प्रदूषण नियंत्रण का महत् उद्देश्य पूरा नहीं कर पायी हैं। इसके जवाब में केन्द्र सरकार ने यमुना सफाई के लिए सन 1993 से की जा रही कवायद एवं इसमें 1306 करोड़ की धनराशि के एक्शन प्लान का दूसरा चरण भी पूरा हो जाएगा। हालाकि परियोजनाओं को लागू करने और नदी को प्रदूषण मुक्त करने की सारी जिम्मेदारी केन्द्र सरकार ने राज्यों और स्थानीय एजेंसियों के सिर डाल दी है। यानि पिछले 19 साल में खर्च की गई धनराशि 1306 करोड, परन्तु नतीजा शून्य। नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक और केन्द्र सरकार ने यमुना सफाई पर प्रेषित सुप्रीम कोर्ट में दाखिल अपने हलफनामा में कहा है।

सुप्रीम कोर्ट पिछले 19 वर्षों से यमुना को प्रदूषण मुक्त करने की परियोजनाओं की निगरानी कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट के 27 फरवरी के आदेश का पालन करते हुए, केन्द्र सरकार, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक और कुछ राज्य सरकारों ने हलफनामे दाखिल किए हैं। उत्तर प्रदेश सरकार का हलफनामा तो परियोजनाओं की अद्यतन रिपोर्ट पेश करता है जबकि नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक ने उन्हें नाकाम बताया है। नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक ने अपनी 2000 की रिपोर्ट से लेकर वर्ष 2011–2012 तक की रिपोर्ट में भारत में जल प्रदूषण की रिपोर्ट का पूरा ब्योरा दिया है, जो बताता है कि इन नदियों की सफाई कुछ भी ठीक नहीं हुई है एवं जल प्रदूषण यथा–तथा है। हलफनामा के साथ रिपोर्ट के अंश प्रस्तुत किए हैं।

नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक ने अपने वर्ष 2011–2012 की रिपोर्ट में कहा है कि जल प्रदूषण के परफामेंस आडिट के मुताबिक हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश में चल रही सभी परियोजनाएं यमुना में प्रदूषण रोकने के महत् उद्देश्य को पूरा नहीं कर रही हैं। इससे पहले वर्ष 2000 में गंगा एक्शन प्लान के आडिट में नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक ने यमुना एक्शन प्लान की परियोजनाओं का भी आंकलन किया गया था। उस समय भी तीनों राज्यों की वहीं स्थिति थी। वर्ष 2004 में नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक ने दिल्ली में यमुना की स्थिति का ऑडिट किया। इस रिपोर्ट में यमुना की हालत गंभीर बताई गई थी। वर्ष 2011–2012 की रिपोर्ट में नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक ने उत्तर प्रदेश में कानपुर, गाजियाबाद और लखनऊ की परियोजनाओं को नाकाम बताया है और गोमती, गंगा एवं हिंडन के पानी को बीमारियों का घर कहा है।

इधर सुप्रीम कोर्ट के 27 फरवरी के आदेश के बाद यमुना बचाओ आन्दोलनकारी मुखर हो उठे एवं यमुना बचाने हेतु एक विशाल पदयात्रा की शुरूआत वृन्दावन से शुभांरभ की। करीब 1 लाख श्रद्धालुओं ने इस पदयात्रा में भाग लिया एवं दिल्ली तक यमुना के किनारे पदयात्रा की और 10 दिन के बाद दिल्ली पहुंचकर एक विशाल प्रदर्शन सभा की। तत्पश्चात् यमुना बचाओं संबंधित एक स्मरण पत्र भारत सरकार को सौंप कर उसमें यमुना बचाने कि मांग जाहिर की। उस स्मरण पत्र में यमुना को प्रवाहित किये गये समस्त ड्रैनेज को शीघ्र बंद करना, सभी सफाई परियोजना की इकाईयों को पूरी तरह कार्यक्षम करना एवं यमुना की सफाई हेतु हथिनीकुण्ड बैराज से पर्याप्त पानी छोडकर यमुना की सफाई समय–समय पर पूरी तरह करने का आग्रह किया ताकि यमुना को प्रदूषण मुक्त किया जाए एवं भारत के महान ऐतिह को बचाया जा सके। इस स्मरण पत्र में यमुना बचाओ आन्दोलनकारियों ने यमुना एक्शन प्लान को मजबूत करने की मांग की।

* * * * *

दपर्ण

राजीव सिंह, खलासी
मेरीन ज्योडेसी विंग
ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा।

देख दर्पण देखने वाला
मंद–मंद मुस्काए
स्वर्ण तेज को भूले न
मन का मैल मिटता जाए।

ऊंचे अम्बर को भिगाने
मन की लहरें उमड़ी जाए
तट बन्धों को तोड़कर
नई दिशा में बहती जाए।

तपती भूमि को तृप्त कर
जीवन का संचार करे
सबहों को दे भरपूरी
और नई पहचान बने।

देख स्वप्न दर्पण का
यथार्थ का मुझे अनुभव हुआ
यकायक जब देखा मैंने
दर्पण के समक्ष था मैं खड़ा हुआ।

ललकार

चौधुरी महः आरिफ,
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय,
कोलकाता

आजकल दुनिया में जो हो रहा है
क्या तुम नहीं जानते ?
दामिनी जैसी प्रतिभा क्यों खो जा रही हैं
जिस्म को मौत आती है लेकिन
रूह को मौत आती नहीं
रस्ते जो छोड़ गए कब फिर मिलेंगे
न जाने तुम न जाने हम
पर वो ऊपर बैठे सब जाने
भूलोगे तुम भूलेंगे हम
पर वो गर्दिश में रहेंगे बनके तारे
कल तक जो कसम खाए थे तुम
आज फिर क्यों इनकार कर रहे हो
इम्तहां लेने से पहले
इन्तकाल हो रहा है हर रोज
तुम्हारी हमारी हर पल
जो पलके मिट गई होगी आज इकरार
फिर से बनेगा हर काम का इजहार
लौटेगी फिर से जीवन की रफतार।

एहसास

आनन्द प्रकाश
सहायक
महासर्वेक्षक का कार्यालय ।

बात उस समय की है जब एक बालक कक्षा 10वीं में पढ़ता था व उसका पढ़ाई में बिल्कुल मन नहीं लगता था तथा वह सारा–सारा दिन दोस्तों के साथ घूमता और लोगों से लड़ाई–झगड़ा करता रहता। ऐसा कोई दिन नहीं जाता था, जिस दिन कोई उलहाना देने उसके घर न आए। घरवाले उससे बहुत परेशान रहते थे। मॉ उसे समझाती थी पर उसकी समझ में कुछ नहीं आता था। घरवाले बहुत ज्यादा परेशान हो गए तो उन्होंने उसे पढ़ने के लिए शहर भेज दिया। सोचा होगा कि शायद इस तरह वह सुधर जायेगा। लेकिन उसकी आदतों में कोई सुधार नहीं हुआ। अब सिनेमा देखना, फिजूलखर्ची करना भी उसकी आदत में शुमार हो गया। जब पैसे खर्च हो जाते तो गांव पहुंच जाता और घरवालों से जितने पैसे मांगता मिल जाते। वे कितने कष्ट सहकर उसे पैसे देते, इस बात का उसे जरा भी एहसास नहीं था वे समझाते भी तो वह उनकी बातों पर ध्यान नहीं देता।

जनवरी का महीना था। भयंकर सर्दी पड़ रही थी। उसके पास दो स्वेटर थे जो सर्दी से बचने के लिए पर्याप्त थे। एक दिन उसने एक दोस्त को नई जैकेट पहने देखा तो उसने भी नई जैकेट खरीदने का मन बना लिया लेकिन समस्या थी कि उसके पास उतने पैसे नहीं थे। उसने स्कूल की फीस के पैसों से नई जैकेट खरीद ली। अब फीस जमा न होने के कारण स्कूल ने उसे कहा कि पहले फीस जमा करो फिर क्लास में बैठने को मिलेगा।

वह लड़का नई जैकेट पहनकर फीस के पैसे मांगने गांव चला आया । रात का भोजन करने के बाद जब वह आराम करने लेटा तब मॉ आई और बोली, बेटा, खेत में देखकर आ, तेरे पिताजी अब तक खाना खाने नहीं आए, लगता है खेत में अभी तक पानी नहीं लगा, जाकर उनको खाना दे आ। उसने कहा, ''नहीं मां, सर्दी बहुत है, मैं नहीं जाऊॅगा।'' लेकिन मॉ के अधिक कहने पर वह पिता जी को खाना देने खेत पर चला गया। उसने दो स्वेटर पहन रखे थे ऊपर से गर्म कंबल ओढ़े था, फिर भी सर्दी से सारा बदन कॉप रहा था। किसी तरह वह खेत तक पहुंच गया। वहां पिताजी खेत में पानी लगा रहे थे। खेत अभी आधा ही सिंचा था। उसने पिता जी को आवाज लगाई, तो वे खेत से निकलकर बाहर आये, उनकी हालत देखकर वह दंग रहा गया। ऐसी भयानक सर्दी में भी उनके शरीर पर केवल एक फटा–पुराना कुर्ता और एक हाफ स्वेटर ही थी तथा उस स्वेटर की भी ऊन जगह–जगह से लटक रही थी। टांगो में केवल एक पुराना नेकर थी। पिता जी आधे गीले थे और ठंड से उनका बदन कंपकंपा रहा था। वे उसके पास आए और डांटते हुए बोले, ''ऐसी सर्दी में तुम क्यों आए हो, तुम्हें आने की क्या जरूरत थी। अगर तुम्हें सर्दी लग गई तो....? खाना तो मैं सुबह आकर भी खा लेता।'' पिताजी के इस स्नेह को देखकर वह भावुक हो उठा। उसने तुरन्त आग जलाई तथा पिताजी से कहा, ''आप आग के पास बैठिऐ, आपकी ठंड कुछ कम होगी।'' पिताजी बोले, ठीक है, तुम घर जाओ, सर्दी बहुत है। अच्छी तरह रजाई ओढ़कर सो जाना।

वह घर आकर लेट गया। नींद कोसों दूर थी। उसे अपने आपसे घृणा हो रही थी, सोच रहा था, पिताजी कितनी मेहनत करके उसे पढ़ा रहे हैं। खुद फटे–पुराने कपड़े पहनते हैं लेकिन उसे नए कपड़े पहना रहे हैं और रूखी–सूखी खाकर उसका भविष्य उज्जवल बनाने की सोच कर रात–दिन मेहनत कर रहे हैं। वह पूरी रात सो नहीं पाया, उसे एहसास हुआ कि वह घरवालों की ढेर सारी उम्मीदों की हत्या कर रहा हैं, वह आया तो था पैसे लेने, पर उसके मन में खुद के लिऐ घृणा हो गई कि अब पैसे मांगने के लिए पिताजी के सामने जाना संभव न था।

सुबह नहा–धोकर, उसने इस प्रतिज्ञा के साथ शहर की बस पकड़ ली कि वह घरवालों का सपना साकार करेगा तथा अच्छा इंसान बनकर दिखाऐगा। उसने पूरी लगन और मेहनत से पढ़ाई शुरू की। खर्च के पैसे कम पड़ जाते तो मजदूरी कर लेता। आज आलम यह है कि वह लड़का एम. एससी, एम. एड. और टीईटी करने के बाद वह अपने पैरों पर खड़ा है। वह अपने पिता का बड़ा आभारी है, जिन्होंने उसे जीने की नई किरण दी, उसे नई चेतना और स्फूर्ति दी।

* * * * *

जरा हंस लो

मोनिका सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक, म.स.का.

1. मोनू – यार गोपू, तूने अपने दोनों कुत्तों के क्या नाम रखें ?
   गोपू – रोलेक्स और टाइमेक्स।
   मोनू – ये तो घड़ियों के नाम हैं।
   गोपू – समझा कर यार, ये वाच डॉग हैं।
2. दो आदमी रेस्टोरेंट में चाय पी रहे थे।
   पहला आदमी–क्या कहा आपने भाई साहब थोड़ा तेज बोलो, मैं जरा ऊँचा सुनता हूं।
   दूसरा आदमी–भाई साहब, मैं कहां बोल रहा हूं। मैं तो बिस्कुट चबा रहा हूं।
3. देश की तीन बड़ी खान के नाम बताओ....?
   जी, आमिर खान, सलमान खान और शाहरुख खान सर....।
4. सर, आपके कहे अनुसार सभी ग्रह अपनी कक्षा में घूमते हैं तो फिर वे पढ़ते कब हैं ?
5. रमन – कौन सी मक्खी सबसे ताकतवर होती हैं ।
   अरुन – विटामिन बी ।

* * * * *

अवसाद (डिप्रेशन)

डा. एन. के. तिवारी,
महासर्वेक्षक का कार्यालय।

वर्तमान में अवसाद एक ऐसा मानसिक रोग है जिसके कारण देश में आत्महत्याओं की दर दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। देश में हर चार मिनट में एक आत्महत्या होती है। आत्महत्या करने वाले पॉच व्यक्तियों में एक गृहणी होती है। सरकार द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार सन् 2011 में इससे पिछले साल के मुकाबले 0.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सन् 2010 में जहॉ देश में 1,34,599 लोगों ने अपनी जान दी थी, वहीं 2011 में यह संख्या बढ़कर 1,35,585 हो गई है। आत्महत्याओं के मामले में पुरूष–महिला अनुपात 65:35 रहा। वहीं लड़के–लड़कियों (14 वर्ष की उम्र तक) में यह अनुपात 52:48 रहा। आत्महत्या करने वालों में 71.01 प्रतिशत पुरूष शादी–शुदा थे, और 68.2 प्रतिशत महिलाएं विवाहित थी। ऑकड़ों के अनुसार अपनी जान लेने वालों में 38.3 प्रतिशत स्वरोजगार में लगे थे, जबकि 7.7 प्रतिशत बेरोजगार थे। आत्महत्या के ये ऑकड़े बताते हैं कि समाज में बढ़ती हुई प्रतियोगिता/स्पर्धा एवं महत्वकॉक्षा तथा उन्हें पाने में असफल होने के कारण व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य खराब होता जाता है। परिणामस्वरूप वह अवसाद से ग्रसित हो जाता है, और जब यह अवसाद अपने चरम–सीमा में होता है तब ही आत्महत्या जैसे कदम व्यक्ति उठाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार **''एक स्वस्थ व्यक्ति वह है जो कि सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दृष्टि से हष्ट–पुष्ट या ठीक हो''** जबकि मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति मानसिक द्वंदों से मुक्त हो, और अपनी और दूसरों की भावनात्मक जरूरतों को भलीभांति पहचानता हो। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य व्यक्तित्व और भावनात्मक नजरिये के संतुलित विकास का फल है। इसी विकास का संतुलन डगमगाने से मानसिक रोगों की उत्पत्ति होती है। मानसिक रोग कई प्रकार के होते हैं, तथा उनकी तीव्रता के आधार पर उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता हैं :–

1. **साईकोसिस–**(जैसे स्कीजोफ्रेनिया, मेनिक–डिप्रेसिव, पैरानायड–रियक्शन आदि।)
2. **साईकोन्यूरोसिस/न्यूरोसिस**– (जैसे एनेक्जाययी न्यूरोसिस, हिस्टीरिया, ऑबसेसन–कम्पलशन एवं फोबिया आदि।)

अवसाद (डिप्रेशन) एक तरह का मूड विकार है जिसमें मन–बेवजह गहरी उदासी से घिर जाता है, कुछ अच्छा नहीं लगता और दुनियां से ऊब हो जाती है। चारों तरफ अँधेरा ही अंधेरा दिखता है, तथा मरीज में जीने की इच्छा नहीं होती हैं वह आत्महत्या के लिए प्रेरित हो जाता है। यही कारण है कि 30–40 प्रतिशत व्यक्ति जो आत्महत्या करते हैं वे अवसाद से ग्रसित होते हैं। अधिकतर ऐसे व्यक्ति अंतर्मुखी होते हैं तथा उनका बाहर की दुनियॉ से समायोजन ठीक नहीं होता है। समस्याओं से लड़ने के लिए उनमें मनोबल का अभाव होता हैं। अवसाद का तन पर भी असर पड़ता है और व्यक्ति मन और शरीर दोनों से रोगी हो जाता है। यह किसी भी तरह का पागलपन नहीं है और न ही चरित्र या व्यक्तित्व की कमजोरी बल्कि एक मानसिक रोग है, जिसे दवा एवं मनोचिकित्सक की सलाह चाहिए। यह किसी भी उम्र के व्यक्ति में हो सकता है।

अवसाद(डिप्रेशन) दो प्रकार से उत्पन्न होता है एक एक्सोजेनस जो कि बाहरी कारणों से होता हैं, दूसरा एंन्डोजेनस– जो कि मन–मस्तिष्क में रासायनिक विकार से उत्पन्न होता है। डिप्रेशन के बाहरी कारणों जैसे– बचपन में माता–पिता की आकस्मिक मृत्यु, मॉ–बाप के बीच तलाक, प्रेम–प्रसंग में असफलता, व्यापार में असहनीय घाटा, मानसिक तनाव, बढ़ती हुई मंहगाई एवं भ्रष्टाचार, स्त्रियों में मेनोपॉज, एकांकी जीवन–यापन, अत्याधिक कुँठा, शहरी वातावरण से असमायोजन, आर्थिक स्थिति का कमजोर होना, कम–शिक्षा, एवं सामाजिक बहिष्कार आदि आते हैं। जबकि एंडोजनेस डिप्रेशन न्यूरो–ट्रॉसमीटर की कमी, वंशागत कारणों से होता है तथा कुछ व्यक्तियों में निराशावादी प्रवृत्ति होने के कारण पर्सनलटि डिप्रेशन कहा जाता है। दूसरी ओर स्कीजोफ्रेनिया में होने वाले अवसाद को भी पर्सनेल्टि ''डोपामिन'' नामक रसायन से जोड़ा गया हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त कुछ शारीरिक बीमारियॉ, वायरल, छूत के रोग, जैसे फ्लू, कैंसर, मस्तिष्क का विघटन, हार्मोनिक–विकार जैसे थायराइड ग्रंथि का ठीक से काम न करना भी अवसाद को जन्म देता है। इसके अतिरिक्त कुछ दवाइयॉ जैसे रक्तचाप कम करने वाली दवा रेसरपिन तथा स्टीराएड औषधियों के सेवन से न्यूरो–ट्रॉसमीटर की कमी लाकर अवसाद का कारण बन जाता है। अवसाद (डिप्रेशन) के मरीजों में हर समय थकावट का अनुभव होना, नींद कम आना, बाधित नींद, हर समय उदासी छायी रहना, और अकारण ही ऑखों से ऑसू गिरने लगते हैं, शरीर के किसी भी अंग में बराबर दर्द रहना, सिर का भारी होना, बदहज्मी, कब्ज रहना, दस्त की शिकायत होना, शरीर का वजन गिरना, किसी से मिलने–जुलने की इच्छा का अभाव होना, अत्यधिक खाने की प्रवृत्ति होना, कामोत्तेजना और रति–क्रिया में रूचि का न होना, मन में असुरक्षा की भावना का होना, आदि अवसाद के लक्षण होते हैं। अवसाद की स्थिति का निदान यदि समय रहते न किया जाये तो यह आत्मघाती हो जाती है, अतः आवश्यक है कि कारण का पता लगा कर इसका यथा–समय इलाज कराया जाए। अवसाद का इलाज इस बात पर निर्भर करेगा कि वह एक्सोजेनस कारण से है या एंडोजेनस से है। यदि वह एक्सोजेनस कारणों से है तो इसका इलाज साईकोथेरेपी है, जो कि एक कुशल मनोरोग चिकित्सक ही कर सकता है। दूसरी ओर एंडोजेनस डिप्रेशन की समस्या रसायनिक कारणों से होती है। इसलिए इसका इलाज भी उसी पर केंद्रित होगा। प्रयास यह रहता है कि जैव–रसायनों के संतुलन को सामान्य बनाया जाये। इसके लिए मरीज को ट्राईसायक्लिक एंटी–डिप्रसेंट दवाईयॉ दी जाती हैं, इसके अतिरिक्त बिहेवियर थेरेपी से भी अवसाद का इलाज किया जाता है। मेनिक–डिप्रेसिव रोग में लिथियम दवा दी जाती है। यदि मरीज में अवसाद की तीव्रता अधिक है तो उसे अस्पताल में भर्ती भी कराना पड़ता है। अवसाद के मरीजों का इलाज ई.सी.टी. (इलैक्ट्रो कनवलसिव थैरेपी) से भी किया जाता है। इससे 75–85 प्रतिशत मरीजों को ठीक करने में सफलता प्राप्त हुई है। अवसाद (डिप्रेशन)एक पूरी तरह साध्य रोग है, परन्तु यह तभी संभव है जब मरीज का परिवार एवं उसका डाक्टर उसका पूरा–पूरा साथ दे। सबसे पहली एवं आखिरी जरूरत उसके खोए हुए आत्मविश्वास को पुनः जागृत करने की होती है, इसमें सफलता मिल जाये तो मरीज को अवसाद से बचाया जा सकता है, उसको समान्य जीवन में लौटाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अवसाद

के मरीज खुद भी अपने प्रयास से इस रोग को ठीक कर सकते हैं, इसके लिए उनको अपनी समस्या का कारण समझना चाहिए तथा अपनी समस्या, दुखः–सुख, मन में उमड़ती भावनाओं को बॉध कर नहीं रखना चाहिए बल्कि उन्हें अपने विश्वासपात्र प्रियजनों से शेयर करना चाहिए तथा उसका निदान ढूंढ़ना चाहिए। अपने गुणों एवं उपलब्धियों के बारे में गौरवान्वित होंए उन्हें नजरअंदाज न करें। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखें। अनावश्यक मानसिक तनाव से बचे, इसके लिए नियमित व्यायाम, योगाभ्यास करें, यथार्थवादी बने। इससे अवसाद से दूर रहने में सफलता मिलेगी। इसके बावजूद यदि अवसाद से निजात नहीं मिलती तो मनोरोग चिकित्सक की सलाह लेने में देर नहीं करनी चाहिए।

* * * * *

हम कभी न बदलेंगे

मकबूल जान,
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
केरल एवं लक्षद्वीप भू–स्था आं केन्द्र

बदल गए सब, पर हम नहीं
चल दिए सब मंजिल की ओर
पर रह गए हम जहां थे वहीं
कारवां पे कारण गुजर गया
उड़ती धूल हम देखते रह गए
तेज आगे बढ़ने वालों को
बस हसरतों से निहारते रह गए
जिंदगी में मुकाम ऐसे भी आए
हम बस मुस्कुराते रह गए
हाले दिल अपन सुनाया तो
दुश्मन भी जार–जार रो पड़े
न पैनल है, न ही चानल है,
अपना ही एक स्टेशन अलोन है।
अपने ही उसूलों में जकड़े,
कुर्सी पर ऐसे हम जम गए
आगे बढ़ना हमारे नसीब में कहां
जहां थे बस वहीं के वहीं रह गए
मन है गमगीन, कहानी है संगीन
सपने भी कभी देखते है हम रंगीन
अनुवादकों की कहानी ही है विचाराधीन।

कबीर की सीख

सोमबाला
खलासी (ग्रुप सी)

यह भी देख, वह भी देख
देखत–देखत ऐसा देख,
मिट जाय धोखा रह जाये एक ।

साज उसी का है जो बजाना जानता है
गीत उसी का है जो गाना जानता है
आश्रम उसी का है जो रहना जानता है
परमात्मा उसी का है जो पाना जानता है ।

आये थे जिस बात को, भूल गये वह बात
आगे ले कर क्या चलो, खाली दोनों हाथ।

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय
औरन को शीतल करें, आपहूँ शीतल होय
कागा काको धन हरे, कोयल काको देत
मीठा शब्द सुनायके, जग अपनो करि लेत।

बहुत पसारा मत करे कर थोड़े की आस
बहुत पसारा जिन किया वे भी गये निराश।

भगीरथ की प्रभुप्रीती तपस्या,
गंगा धरती पे लायी
घर घर में बहे प्रेम की गंगा,
रहे न कोई दिल खाली।

हर दिल बने मंदिर प्रभु का,
यदि गुरुज्ञान ज्योति जगा ली
मेरे भैया दोनों नारायण,
मैं हूँ ईश्वर की लाड़ली ।

तथ्य निराले

(सकंलन कर्ता)
मोनिका सिंह
प्र.श्रे.लि.

1. मांसाहारी जीवों में अन्य जानवरों की तुलना में शेर का दिल आकार में सबसे छोटा होता है।
2. शेष सारे संसार में कुल मिलाकर जितनी झीलें हैं, उससे भी कहीं अधिक झीलें अकेले कनाडा में हैं।
3. मृत सागर के पानी में इतना ज्यादा नमक है कि उसमें डूबना उस समय तक नामुमकिन है, जब तक किसी को पानी में नीचे से पकड़ न लिया जाए।
4. अजोव का समुद्र, दुनिया का सबसे उथला सागर है। जिसकी अधिकतम गहराई मात्र 13 मीटर है।
5. विश्व की सभी प्रमुखतम भाषाओं में अंग्रेजी में सबसे अधिक शब्द हैं। इनकी कुल संख्या 8 लाख है।
6. यदि आसपास पानी उपलब्ध हो तो रेकून नामक एक अमरीकी जीव अपना भोजन प्रायः धोकर खाना पसंद करता है।
7. दुनिया भर में धरती से फूटने वाले करीब 700 प्राकृतिक फव्वारे हैं। इनमें से 300 तो अकेले अमरीका के यलोस्टोन नेशनल पार्क में हैं।
8. संसार के कुल खजूरों के अस्सी प्रतिशत की आपूर्ति अकेला इराक करता है।
9. किवी पक्षी की चोंच की नोंक इतनी संवेदनशील होती है कि वह मिट्टी की गहराई में मौजूद कीड़े का पता लगा लेती है।
10. शुतुरमुर्ग के बच्चे पहले वर्ष में डेढ़ मीटर तक लम्बे होते हैं।
11. यदि अंटार्कटिका की पूरी बर्फ पिघल जाए तो समुद्रों का जलस्तर 60 मीटर तक बढ़ जाएगा। फिलहाल संसार की सभी नदियों और झीलों में जितना पानी है, उसका 200 गुना अंटार्कटिका में बर्फ के रुप में जमा है।
12. अल्बानिया में अगर सिर को ऊपर नीचे हिलाएंगे तो इसका मतलब होगा'नहीं। और अगल,बगल हिलाएंगे तो मतलब होगा आप 'हां' कह रहे हैं। है न उल्टा पुल्टा।
13. वयस्क शरीर का 60 से 75 प्रतिशत भार पानी के कारण होता है। दिमाग का 75 प्रतिशत हिस्सा और खून का 92 प्रतिशत हिस्सा पानी होता है।
14. अगर पानी का घनत्व 1.00 माने तो खून का घनत्व 1.06 होता है। यानी खून पानी की तुलना में कोई खास गाढ़ा नहीं होता।
15. आमतौर पर जादुई चिराग वाले अलादीन को अरबी बच्चा माना जाता है। लेकिन अरेबियन नाइट्स' की 1001 कहानियों की शुरुआत इस वाक्य से होती है, अलादीन एक छोटा चीनी लड़का था।

प्रेम का सम्मान

सोमबाला
खलासी (ग्रुप सी)

एक महिला के घर के बाहर तीन बुजुर्ग आकर बैठ गए। उनकी लंबी सफेद दाढ़ी थी। घर की मालकिन ने उन्हें पहचाना नहीं। 'मुझे नहीं लगता कि मैं आपको जानती हूँ, पर आप सब भूखे होंगे। कृपया अंदर आ जाइए और कुछ ग्रहण कीजिए।'
'क्या आपके पति इस समय घर पर हैं ?' उन्होंने पूछा।
'नहीं।' महिला ने जवाब दिया।'फिर हम नहीं आ पाएंगे।'
शाम को जब महिला का पति घर आया तो उसने बुजुर्ग आदमियों के बारे में बताया। यह सुनते ही वह बोला, 'उन्हें जाकर बुला लाओ और कहो कि अब तुम्हारे पति वापस आ गए हैं।'
महिला ने बाहर जाकर जब उन तीनों को घर के अंदर आने का निमंत्रण दिया तो वे बोले, 'हम एक घर में एक साथ नहीं जा सकते।'
'ऐसा क्यों ?' महिला ने पूछा।
एक बुजुर्ग ने अपने साथियों की और इशारा करते हुए कहा, 'इसका नाम धन है, दूसरे का नाम सफलता है और मेरा नाम प्रेम है। अब अंदर जाओ और अपने पति से पूछो कि वे हममें से किसे अंदर बुलाना चाहेंगे?'
महिला ने वापस लौट कर अपने पति को सारी बात बताई।यह सुन वह बहुत खुश हुआ। यह तो अच्छी खबर है तुम जाओ और धन को बुला लाओ। कितना अच्छा होगा, जब वे हमारा घर धन और संपत्ति से भर देंगे।
उसकी पत्नी को वह विचार पसंद नहीं आया। 'क्यों न हम सफलता को निमंत्रित करें?' वह बोली।
पति–पत्नी की बातें उनकी बहू सुन रही थी। उससे रहा न गया और वही बोल उठी, 'क्यो न हम प्यार को निमंत्रण दें ? इससे हमारा घर प्रेम से भर जाएगा।'
'हमें अपनी बहू की बात माननी चाहिए।' व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा।
महिला ने बाहर आकर पूछा, 'आप में से किसका नाम प्रेम है ? आप चलिए मेरे साथ, आपका हमारे घर में स्वागत है।'
प्रेम उठे और महिला के साथ चल दिए। वे दो बुजुर्ग भी साथ में उठे और उनके पीछे चलने लगे। महिला ने आश्चर्य से पूछा, 'आप क्यों आ रहे हैं ? मैंने तो सिर्फ प्रेम को बुलाया था।'
बुजुर्गों ने जवाब दिया, 'अगर तुमने धन और सफलता में से किसी एक को बुलाया होता तो बाकी दो बाहर रह जाते। परन्तु तुमने प्रेम को बुलाया, इसलिए हम भी आंएगे। प्रेम जहां जाता है, हम भी उसके साथ जाते हैं।'

जहां प्रेम है, वहीं धन और सफलता है यही कामना है तुम्हारे लिए जहां दर्द और दुःख है, वहां शांति और दया बसे। जहां स्वयं की काबलियत पर शक हो, वहां तुममें एक नया जोश पैदा हो, जो तुम्हें अपने गुणों से परिचित कराए।

अहमदाबाद, द्वारकाधीश व सोमनाथ की यात्रा

मानसिंह सिंगरौर
सहायक, मध्य क्षेत्र,
सर्वे कॉलोनी,विजय नगर
जबलपुर (म.प्र.) 482002

हिन्दुस्तान के किसी भी भू–भाग से अहमदाबाद रेल/बस/वायु मार्ग द्वारा पहुँचा जा सकता है। वहाँ से 30–35 कि.मी. की दूरी पर गाँधीनगर स्थित है जहाँ पर जाने के लिये टैक्सी 400–500 रुपये में मिल जाती है व एक घंटे में पहुँचा जा सकता है। सेक्टर 9 में गुजरात, दमन एवं द्वीव जी.डी.सी., सर्वे ऑफ इंडिया का कार्यालय स्थित है। जिसे देखकर एक अच्छी अनुभूति का अनुभव होता है। वहाँ पर सर्वे ऑफ इंडिया का गेस्ट हाउस भी है जिसमें अत्याधुनिक साज–सज्जा के साथ ठहरने व खाने की अति उत्तम व्यवस्था है। यह हॉली डे होम की तरह काफी साफ–सुथरा है जिस कारण रास्ते की थकान दूर हो जाती है व विभाग के प्रति एक अच्छी अनुभूति का अनुभव होता है। अपने गेस्ट हाउस से 2–3 कि.मी. की दूरी पर अक्षरधाम मंदिर है जहाँ पर वाटर शो देखने योग्य है तथा अहमदाबाद में ही गाँधीजी का साबरमती आश्रम भी है इसके अलावा भी अन्य दर्शनीय स्थल हैं।

अहमदाबाद से लगभग 400 कि.मी. की दूरी पर द्वारकाधीश मंदिर स्थित है जहाँ 8 से 9 घंटे में रेल द्वारा जाया जा सकता है। द्वारकाधीश में किसी भी प्रकार की बेईमानी नजर नहीं आती है, आटो वाला 10/–प्रति व्यक्ति लेकर स्टेशन से मंदिर के पास पहुँचा देगा जहाँ पर बहुत सारी धर्मशालाएं, मठ एवं आश्रम हैं जिनका किराया 300 से 500 रुपये के मध्य है।

द्वारकाधीश में नगर पालिका द्वारा स्थानीय स्थलों को दिखाने हेतु बस की व्यवस्था की गई है जिसका प्रति व्यक्ति किराया 60–70 रुपये है। पहली ट्रिप सुबह 8.00 बजे से 2.00 बजे तक तथा दूसरी ट्रिप 2.00 बजे से 8.00 बजे तक चलाई जाती है। एक–दो दिन पूर्व टिकट आरक्षित कर लेना चाहिए। यह बस रुकमिणि मंदिर, नागेश्वर, ज्योतिर्लिंग, गोपी तालाब तथा भेंट द्वारका जो समुद्र के उस पार टापू पर स्थित है स्टीमर से जाना पड़ता है। स्टीमर का किराया रु. 10/–लगता है। भेंट द्वारका में 9 बार आरती व 12 बार भोग लगता है। वापस आने के पश्चात् द्वारकाधीश में विश्राम करें व अगले दिन सोमनाथ जाने के लिये टिकट आरक्षित कराया जा सकता है। द्वारकाधीश से सोमनाथ लगभग 230 कि.मी. है। किराया साधारण बसों का रु. 160/–व वातानुकूलित बसों का रु. 300/–से 400/–तक है। यह बसें रास्ते में पड़ने वाले दर्शनीय स्थलों को दिखाते हुये सोमनाथ पहुँचाती हैं। रास्ते में गाँधीजी की जन्म स्थली, पोरबन्दर पड़ता है। बस का रास्ता समुद्र के किनारे–किनारे से बना हुआ है। पूरे रास्ते समुद्री हवाओं का उपयोग कर पवन चक्की लगाकर विद्युत उत्पादन किया जा रहा है एवं सड़कें भी काफी समतल व दिल्ली जैसी हैं जिस कारण वाहन काफी रफतार से चलते हैं। पूरे रास्ते समुद्र का

किनारा देखते हुये लगभग 6 घंटे में बस सोमनाथ पहुँच जाती है। सोमनाथ मंदिर के 300 मीटर की दूरी पर बस रुकती है वहाँ पर रुकने हेतु सोमनाथ मंदिर का ट्रस्ट है जिसे जाने के पूर्व आरक्षित कराया जा सकता है। डबल बेड रूम रु. 300/–में आरक्षित किया जा सकता है। जिसमें केवल 3 व्यक्तियों को रुकने की ही अनुमति ट्रस्ट द्वारा दी जाती है व नियमों का कड़ाई से पालन किया जाता है। रेलवे का रिटायरिंग रूम रु. 200/–में मिल जाता है तथा होटल भी 400/–से 1000/–के मध्य मिल जाते हैं। मंदिर के अंदर कैमरा, बैल्ट इत्यादि ले जाना व छोटे कपड़े पहनकर जाना वर्जित है। रात्रि 8.00 बजे लाइट एण्ड साउण्ड शो होता है। मंदिर रात्रि 9.00 बजे तक खुला रहता है। मंदिर से सिटी बसें चलती हैं जो 6/–किराया लेकर वेरावल तक ले जाती हैं जहाँ पर मत्स्य उद्योग हैं तथा बड़ी–बड़ी नावें जिनकी कीमत लगभग 40 लाख से 80 लाख तक होती है वह बनाई जाती हैं जिन्हें सिटी बस द्वारा देखा जा सकता है जो कि देखने में काफी अच्छा लगता है।

सोमनाथ से 70–80 कि.मी. की दूरी पर गिर फोरेस्ट हैं जहाँ पर एशियाटिक लॉयन देखने को मिल जाते हैं सासण में जिप्सी द्वारा फोरेस्ट विभाग ने जंगल में भ्रमण कराने की व्यवस्था कराई है। जिसका किराया 1500/–है तथा 30 कि.मी. लगभग जंगल में जिप्सी द्वारा घुमाया जाता है जहाँ पर स्वतंत्र रूप से विचरण करते हुये एशियाटिक शेर, हिरन, काले हिरन, नीलगाय व अन्य जंगली जानवरों को देखा जा सकता है। जंगल में स्वतंत्र रूप से विचरण करते हुये जंगली जानवरों को देखकर मन खुशी से आनंदित हो उठता है। सासण से 15 कि.मी. की दूरी पर गिर फोरेस्ट का मुख्य द्वार व पर्यटन केन्द्र है जहाँ पर फोरेस्ट विभाग द्वारा पर्यटकों को जंगल में बस द्वारा घुमाया जाता है बस में प्रति व्यक्ति किराया 75/–तथा वातानुकूलित बस में किराया 130/–है जो आधे घंटे जंगल में भ्रमण कराते हैं। यहाँ पर एशियाटिक लॉयन के दिखने की संभावना 99% होती है क्योंकि यहाँ पर गिर फोरेस्ट है जहाँ पर पर्यटकों को लॉयन दिखाने की विशेष व्यवस्था है परन्तु यह ध्यान रहे कि यहाँ तक पहुँचने के लिये प्राइवेट गाड़ी करके या निजी गाड़ियों से ही जायें अन्यथा पूरे दिन में एक या दो बार ही परिवहन विभाग की गाड़ियाँ आती–जाती हैं। यह जंगल के मध्य में स्थित है जिस कारण यातायात के लिये अच्छे साधन नहीं हैं।

सोमनाथ से गिर फोरेस्ट 70–80 कि.मी. जाने में लगभग एक से डेढ़ घंटे लगते हैं दोनों तरफ आम व चीकू के घने बगीचे लगाये गये हैं जिनके पेड़ों व फलों को देखकर मन में हरियाली स्वतः ही उत्पन्न होने लगती है। आम व चीकू की फसल अच्छी होने के कारण इनके फल काफी मात्रा में मिल जाते हैं और यह अनुभव होता है कि यहाँ के फल देश के अन्य भागों में भी भेजे जाते हैं। गुजरात राज्य पूर्ण रूप से ड्राई एरिया है जहाँ पर मद्यपान पूर्ण रूप से प्रतिबंधित है।

सोमनाथ से द्वीव लगभग 100 कि.मी. दूर हैं। सरकारी बस सुबह 9.00 बजे जाती है व 1.00 बजे पहुँचती है किराया प्रति व्यक्ति रु. 100/–है। स्कार्पियो व अन्य वाहन रु. 2200/– से 2500/–में होते हैं जो सुबह लेकर जाते हैं, शाम को सोमनाथ में छोड़ देते हैं। द्वीव में काफी लम्बा समुद्री बीच है जहाँ पर स्नान कर लोग समुद्री लहरों का आनन्द लेते हैं। द्वीव केन्द्र शासित प्रदेश है यहाँ की सम्पूर्ण व्यवस्था केन्द्र सरकार द्वारा

की जाती है। द्वीव भी घूमने के लिये अच्छा स्थान है ध्यान रहे यदि सरकारी बस से जाते हैं तो द्वीव घूमने हेतु रु. 600/–से 700/–में छोटा आटो या अन्य वाहन करना पड़ेगा तभी वहाँ के किले, चर्च इत्यादि को देखा जा सकता है।

* * * * *

समय

डॉ. एन के तिवारी
महासर्वेक्षक का कार्यालय

उत्पत्ति है,
बचपन है,
जवानी है,
बुढ़ापा है,
संघर्ष है,
सफलता है,
गम है,
खुशी है,
यश है,
अपयश है,
सृष्टि है,
तीर्थ यात्रा है,
प्रलय है,
सृष्टि संचालक है,
जीवन है,
अंत है ।

भगवान की देन

सुनील डी बनकर, खलासी
महाराष्ट्र एवं गोवा भू–स्था आं केन्द्र

मैं एक भगवान की देन।
जिसको देखे दुनिया के नैन।
भला क्या बुरा क्या नहीं था पता।
सुख–दुख सर्व संग चला बांटता।
जान पड़ी संसार की नजर।
धनवान की ही होती सदा कदर।
दिन–दिन को तुच्छ मानती संसार समुंदर।
दिन–रात रोटी खातिर ना सोती हाय इनकी नजर
बेदर्द जालिम यह जमाना, हर वक्त धन का नशा।
उनकी खुशी में दिन–दिन की होती व्याकुल दशा
कलयुग में धन है तो मान है।
नहीं उसके पास सच्चा ईमान है।
बेचारा है गरीब मगर, सागर जैसा जिगर है।
समेट खुशियां मुट्ठी में, देकर खुशियां जाता मर।
ये जमाना सौ खुशियों में एक खुशी।
दिन –दुबले के पड़ने दे हथेली।
भर जाएगा दुगनी खुशियों में दामन
यहीं तो सच्चे मानवता का वचन।
हर इन्सान है भगवान की देन,
हर जन्म में चुकाना भगवान का लेन।
मानव तू मानवता का धर्म निभाता जा
धर्म यह तेरा सतत कर्म किए जा किए जा।
मैं एक भगवान की देन
जिसको देखे दुनिया के नैन.....।

सार्वजनिक सेवा के लिए त्याग

दिनेश शर्मा
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

बर्मा में श्वेबू गाँव के पास एक बड़ा बाँध बनाया गया था। आसपास के गाँवों के किसानों ने उसे बनाने में सहयोग किया था। वर्षा समाप्त हो जाने पर किसानों के खेत बाँध के पानी से सींचे जा सकेंगे, यही आशा थी। परन्तु सभी आयोजनों के साथ भय लगा रहता है। अचानक रात में घोर वृष्टि हुई। नदी में बाढ़ आ गयी ऐसा प्रतीत होने लगा कि नदी का जल किनारा तोड़ कर बाँध में प्रवेश कर जाएगा और यदि बाँध टूट गया–यह सोच कर ही किसानों के प्राण सूख गये। बांस के बने घर बाढ़ के प्रवाह में कितने क्षण टिकेंगें? मनुष्य और पशुओं का भी विनाश होगा, वह दृश्य सामने दिखाई पड़ने लगा। चौकीदारों ने लोगों को सावधान करने के लिए हवा में गोलियां छोड़ी। गाँव के लोग बाँध की देख–रेख में जुट गये, मिट्टी, पत्थर, रेत बाँध के किनारे तेजी से डालने लगे।

बाँध कहीं से कमजोर तो नहीं है। यह देखने का काम सौंपा गया, माँग नामक व्यक्ति को। घूमते हुए माँग ने देखा कि बाँध में एक स्थान पर लम्बा पतला छेद हो गया है और उसमें से नदी का जल भीतर आ रहा है। कुछ क्षण का भी समय मिला तो यह छेद इतना बड़ा हो जायेगा कि उसे बन्द करना सम्भव नहीं होगा। दूसरा कोई उपाय तो नहीं था, माँग उस छेद को अपने शरीर से दबाकर खड़ा हो गया। ऊपर से वर्षा हो रही थी। शीतल वायु चल रही थी और जल के तेज प्रवाह को रोक कर माँग खड़ा था। उसका शरीर धीरे–धीरे शीत से अकड़ रहा था। उसकी हड्डियों में असहनीय दर्द होने लगा और कुछ देर के बाद वो मूर्छित हो गया। किन्तु उसकी देह (शरीर) छेद से पानी के प्रवाह को रोके हुए था।

माँग गया कहाँ! गाँव के लोगों ने खोज की, क्योंकि बाँध की सुरक्षा की जिम्मेदारी माँग पर थी और उसने कोई सूचना गाँव वालों को दी नहीं। लोग स्वयं बाँध देखने निकल पड़े। थोड़ी देर में ही उन्हें माँग का चेतनाहीन शरीर दिखायी दिया।माँग! परन्तु माँग तो मूर्छित था। उत्तर कौन देता। लोगों ने उसकी देह को वहां से हटाया तो बाँध में से नदी के पानी का अत्यन्त तेज प्रवाह आने लगा। लोगों ने माँग को वहां से हटाया और जल प्रवाह को रोकने का इन्तजाम करने लगे और मूर्छित माँग को चिकित्सा के लिए ले गये। माँग की इस वीरता और त्याग की कथा बर्मी माताएं आज भी अपने बालाकों को सुनाया करती हैं।

*****

भारत में एक भाषा हिन्दी ही राष्ट्रभाषा का स्थान ले सकती है।

डॉ ग्रियर्सन

यह जीवन क्या है?

हंसराज सोनकर
प्रबंधक कनिष्ठ
दक्षिणी मुद्रण वर्ग, हैदराबाद।

इस संसार में मनुष्य का जन्म होता है और उसे एक दिन इस संसार से जाना है। यह कोई तर्क या विचार–विमर्श करने की बात नहीं है। यह पुस्तकों में लिखी बात भी नहीं है । चाहे कोई कितना ही ज्ञानी हो या अज्ञानी हो, सबको यह बात मालूम है। ज्ञानी को भी जाना है और अज्ञानी को भी। अमीर को भी जाना है और गरीब को भी शिक्षित को भी जाना है अनपढ़ को भी संत को भी जाना है पापी को भी जाना है। इस बात को कोई बदल नहीं सकता यह बात सबके साथ है। जबसे इस सृष्टि की रचना हुई , तब से यह नियम लागू है कि जो इस संसार में आया है, वह एक न एक दिन संसार से जाएगा। जब इस संसार से सबको जाना ही है तो फिर मनुष्य के लिए क्या शेष रह गया? कौन सी चीज बाकी रह गई एक चीज है जिसे कहते हैं 'जिन्दगी 'यह जिन्दगी क्या है। एक तरफ है जन्म और दूसरी तरफ मरण इन दोनों के बीच का जो समय है वह है जिन्दगी! इस जिन्दगी में –जन्म और मरण के बीच में, मनुष्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है ? जीवन में कितनी ही चीजें घटित होती रहती हैं, पर सबसे बड़ी बात है कि उसका श्वास निरंतर चलता रहता है। जब तक यह श्वास चलता रहता है, तब तक मनुष्य जीवित है। जब श्वास रुक जाता है, तब उस मनुष्य कि लिए सब कुछ समाप्त हो जाता है। विचारणीय तथ्य यह है कि यह श्वास कौन चलाता है?

दुनिया में लोग परस्पर विभिन्नताओं को देखते हैं, ''तुम इस धर्म को मानते हो या हम उस धर्म को मानते हैं। तुम इस देश के निवासी हो या उस देश के हैं।'' परंतु इस संसार में हर एक मनुष्य का जन्म एक समान तरीके से होता है। ऐसा नहीं है कि हिंदू किसी और तरह से जन्म लेता है या ईसाई किसी और तरह से जन्म लेता है। चाहे कोई किसी भी धर्म को मानने वाला हो, सब एक ही तरह से इस संसार में आते हैं और एक ही तरह से इस संसार से जाते हैं।

मूल बात है इस श्वास की। लोग यही सोचते हैं कि इस श्वास में ऐसी क्या बड़ी बात है। जब किसी बच्चे का जन्म होता है, तो एक छोटा–सा समय होता है, जब कमरे में मौजूद हर एक व्यक्ति चुपचाप होता है। सब शान्त रहते हैं। अभी किसी का ध्यान इस ओर नहीं गया है कि यह लड़का है या लड़की ? हर एक व्यक्ति का ध्यान सिर्फ एक जगह केन्द्रित है कि बच्चे का श्वास चल रहा है या नहीं? बच्चा जीवित है या नहीं ? जीवन की यही पहचान है कि मनुष्य का श्वास चल रहा है या नहीं ? अस्पतालों में भी ब्रेन–वेव और हार्ट–वेव दर्शाने वाली बड़ी–बड़ी मशीनें लगी रहती हैं। अंतिम क्षणों में डॉक्टर जांच करने के लिए पहले उन बिजली की मशीनों को देखता है कि ये काम कर रही हैं यह नहीं? फिर जांच करता है कि व्यक्ति का हृदय धड़क रहा है या नहीं और सबसे अंत में देखता है कि व्यक्ति का श्वास चल रहा है या नहीं?

सचमुच यह श्वास कितना बड़ा आशीर्वाद है, हम लोग यह भूल जाते है। कितनी

कृपा मनुष्य पर हुई है कि उसे यह जीवन मिला, यह शरीर मिला और हर पल उसके अंदर यह सुंदर श्वास बिना कोई यत्न किए अपने आप चलता है। अगर श्वास लेना मनुष्य पर निर्भर होता है तो वह तो शायद श्वास लेना ही भूल जाता। इसका महत्व अंतिम समय में पता चलता है, जब एक–एक श्वास लेने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। चाहे कोई कितना भी धनी हो, धीरे–धीरे जब प्राण शरीर से निकलने लगते हैं, तब उसे समझ में आता है कि जिस श्वास को वह हरदम लेता रहता था, जिसके बारे में उसने अपनी जिंदगी में कभी सोचा तक नहीं था, वह एक और मिल जाए। जितनी भी मनुष्य में शक्ति है, वह अपनी सारी शक्ति को एकत्र कर के एक–एक श्वास लेने का प्रयत्न करता है। उस दिन उसे श्वास की कीमत पता चलती है क्योंकि यह श्वास भगवान की कृपा से, अपने आप आता है और अपने आप जाता है। अपने पीछे वह एक ऐसा समय छोड़ जाता है, जो उस व्यक्ति के लिए कभी दुबारा नहीं आएगा। लोग अपनी शिक्षा और उपलब्धियों पर गर्व करते हैं। अपने सर्टिफिकेट दीवार पर फ्रेम कराकर लगाते हैं। बात यह है कि तुमको एक सर्टिफिकेट और भी मिलेगा, लेकिन तुम उसे कहीं लगा नहीं पाओगे। उसे कहते हैं–'डेथ सर्टिफिकेट' जो डॉक्टर देगा। और तब देगा जब वह देख लेगा कि तुम्हारा श्वास नहीं चल रहा है। वह सर्टिफिकेट तुम्हारे किसी काम नहीं आएगा।

हममें से कितने व्यक्ति हैं, जो इस पर विचार करते हैं। एक–एक दिन करके धीरे–धीरे संपूर्ण जीवन व्यतीत हो जाता है। क्या हम जीवित होने के महत्व को समझ पाते हैं? क्या हमें मालूम है कि हमारी एक–एक श्वास में अपार आनंद भरा हुआ है और हम उसे जीते–जी प्राप्त कर सकते हैं। हमारी जिंदगी में वह समय कब आएगा जब हम अपने हृदय का प्याला पूरी तरह से भर सकेंगे? क्योंकि यह जीवन तो हर क्षण बीत रहा है, पर आनंद पाने की हमारी कामना अभी भी ज्यों की त्यों बनी हुई है।

✧✧✧

दो मुट्ठी जाड़ा

मोनिका सिंह
प्र.श्रे.लि.

कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। सभी लोग ठंड से ठिठुर रहे थे। आग और ऊनी कपड़े बहुत ही सुहाते थे।

बादशाह ने बीरबल से पूछा, 'तुम बता सकते हो जाड़ा कितना है?' बीरबल चकरा गए।

बादशाह ने फिर से पूछा, 'जाड़ा कितना है ?' बीरबल सोच रहे थे कि क्या उत्तर दें ? तभी उनकी नजर बाहर ठंड से सिकुड़ रहे उस व्यक्ति पर पड़ी जिसकी मुट्ठियॉ ठंड के कारण भिंची हुई थीं। बीरबल के दिमाग में तुरंत उत्तर आ गया।

वह बोले, 'हुजूर, जाड़ा दो मुट्ठी है।' बादशाह ने पूछा, 'कैसे ?' 'वो देखिए।' बीरबल ने बादशाह को वह आदमी दिखा दिया जो मुट्ठी बांधे खड़ा था।

बीरबल की चतुराई देखकर बादशाह मुस्करा दिए।

✧✧✧

उचित–अनुचित

अमित कुमार वर्मा
विधिक अनुभाग, म.स.का.

किसी भी कार्य को करने में दो विचारधाराएं काम करती हैं। एक का सम्बन्ध है जर्मनी के तानाशाह हिटलर से, जो यह कहा करता था कि इस पृथ्वी पर सही और गलत की एकमात्र निर्णायक है–सफलता। तात्पर्य स्पष्ट है सफलता प्राप्त होनी चाहिए, साधन कोई भी और कैसे भी हों। दूसरी विचाराधारा का संबंध महात्मा गांधी से, जिनका कहना था कि पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पवित्र साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए। विश्व इन दोनों महान व्यक्तियों में किसका सम्मान करता है, इस प्रश्न का उत्तर ही यह स्थापित कर देता है कि जो सही या उचित है वह मान्य भी है और शाश्वत भी। यदि हम सुकरात के जीवन का अध्ययन करें तो हमें अनुभव होगा कि यदि किसी दास को भी इस प्रकार जीवन व्यतीत करने को विविश किया जाए, तो वह भी भाग जाएगा। महान दार्शनिक सुकरात ने जीवन से पलायन करने के लिए मृत्यु का वरण नहीं किया था, बल्कि गलत काम करने की अपेक्षा उसने मृत्यु का आलिंगन करना अधिक उचित समझा था।

क्या सही है, क्या गलत है, इस सम्बन्ध में विवाद हो सकता है, विशेषकर आधुनिक वैज्ञानिक युग में कुछ कार्यों का औचित्य–अनौचित्य देश, काल एवं व्यक्ति की मान्यताओं पर निर्भर होता है, परन्तु कुछ बातें एवं मान्यताएं शाश्वत होती हैं। सुकरात की प्रतिबद्धता उन्हीं के प्रति थी। इसी को लक्ष्य करके अब्राहम लिंकन ने कहा है कि हमको विश्वास होना चाहिए कि औचित्य वास्तविक शक्ति का हेतु बनता है। इसी विश्वास के सहारे हमें अन्त तक अपना कर्तव्य पालन करते रहना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द जीवन और जगत में प्राप्त होने वाली विविधताओं में सामंजस्य स्थापित करने के पक्षधर थे। वह कहते थे कि विज्ञान और अध्यात्म के मध्य संगति स्थापित करो। विभिन्न सिद्धान्तों, मतवादों, पंथों, मजहबों, गिरिजाघरों, मठों, मन्दिरों आदि की बातों की चिन्ता मत करो, क्योंकि प्रत्येक मानव में निहित सारतत्व की तुलना में बाह्याचार सम्बन्धी बातों का महत्व बहुत कम है। मानव में सारतत्व अथवा अध्यात्म का तत्व जितना ही विकसित किया जायेगा मानव उतना ही अधिक शक्तिशाली बनेगा। सच्चा मानव वही है जो आन्तरिक रूप से शक्तिशाली होता है। पहले अपने उपर विश्वास करो, तब परमात्मा में विश्वास करो। मुट्ठी भर आत्म–विश्वासी, शक्तिशाली व्यक्ति विश्व का नव–निर्माण कर देंगे। आपको भी उन्हीं भाग्यशाली एवं शक्तिशाली व्यक्तियों में अपनी गिनती करानी है। विवेकानन्द का कहना था कि पारलौकिक ज्ञान एवं प्रेम सार्थक तब होते हैं, जब हम यथार्थ से, इस लोक से जुड़े रहें और हताश हुए व्यक्तियों के प्रति दया एवं करूणा की अनुभूति करते रहें।

जीवन के मूल्यों का जीवन के वास्तविक स्वरूप का दर्शन अध्यात्म के क्षेत्र में कम जीवन की वास्तविकताओं में अधिक होता है। आवश्यक यह है कि हम आत्मविश्वासी एवं दृढ़निश्चयी बनें तथा अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा के साथ करने का अभ्यास करें, आध्यात्मिकता तब सार्थक होती है जब वह यथार्थ का पोषण करती है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि समस्त चिन्तन एवं सार्थक अनुभूतियों का सार यह है कि हम अपने को इस योग्य बनाने का प्रयत्न करें कि हम उन अहितकर एवं पापमयी शक्तियों का सामना कर सकें,

जो समाज में अंधकार फैलाकर अंधकार का लाभ उठाना चाहती है। दूसरे शब्दो में हम सत्य के मार्ग पर अडिग रहें और अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से करें तो हम समाज में फैली बुराईयों एवं कुरीतियों से लड़ सकते हैं।

कम लोग सुविधामय मार्ग पर चलने के अभ्यस्त होते हैं। हम उचित के अनुसरण के अनुगमन का संकल्प लेकर उसी पर चलते हैं। सुविधाएं उचित के प्रतिकूल पड़ने पर बाधाएं प्रतीत होने लगती है। नकल न करने का संकल्प करके परीक्षा देने वाले को नकल की सुविधाएं काटने को दौड़ती हैं। जो व्यक्ति नियम विरूद्ध कार्य नहीं करना चाहते हैं, उनको बड़े से बड़ा प्रलोभन भी नियम विरूद्ध कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं कर सकता है। महात्मा गॉधी अहिंसात्मक स्वतंत्रता संघर्ष के प्रति प्रतिबद्ध थे। वह प्रायः कहा करते थे–मुझे हिंसा द्वारा प्राप्त स्वराज्य स्वीकार नहीं होगा। उन्होंने कभी भी मार्ग नहीं बदला और अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही हमें आजादी दिलायी। कहने का तात्पर्य यह है कि वही कार्य उचित है जिसको करने का आपने मन बना लिया है तथा आपकी आत्मा भी उसको उचित मानती है। इस संबंध में एक कहानी का जिक्र करना आवश्यक है। एक परीक्षा में एक परीक्षार्थी जिसको 104 डिग्री बुखार था, को एक अलग कमरे में अकेले बैठा दिया गया। कक्ष निरीक्षक ने जानना चाहा–क्या तुमको सहायतार्थ कोई पुस्तक चाहिए, उस युवक ने सहज भाव से मना करते हुये कह दिया कि थोड़े से अंकों के पीछे मैं अपना ईमान खराब नहीं करूॅगा। यदि हमारा युवा वर्ग ऐसी सोच रखे तो हमारे समाज का नक्शा ही बदल जाएगा और स्वराज्य के साथ सुराज्य शब्द भी जुड़ जाएगा। परन्तु दुर्भाग्यवश यह कहने वाले भी काफी व्यक्ति मिल जाएंगे कि वह बालक मूर्ख था, द्वार पर आई हुई सुविधा को मना करके उसने भगवान के प्रति अपराध किया। मार्क ट्वेन ने कहा है कि हमेशा सही काम करो, इससे कुछ लोगों को यह सोचकर संतोष होगा कि अभी सत्य एवं ईमान बने हुए हैं तथा कुछ लोगों को यह सोचकर आश्चर्य होगा कि अभी भी ऐसे मूर्ख मौजूद हैं जो ईमानदारी के नाम पर अपना नुकसान करके, परेशान नहीं होते हैं।

अनुचित का त्याग एवं उचित का ग्रहण करने वाला व्यक्ति लाभ–हानि पर विचार नहीं करता है। वह तो उचित कार्य इसलिए करता है, क्योंकि उसने ऐसा ही करना सीखा है तथा उसे इसी में प्रसन्नता एवं संतुष्टि मिलती है एवं उसकी आत्मा इसकी ही गवाही देती है। इस कोटि का व्यक्ति शायद ही नुकसान–फायदे की बात करता है। एक पुरानी कहावत है–जिस व्यक्ति को स्वर्ग की चिन्ता नहीं होती वह तो स्वर्ग में ही होता है। उचित के प्रति सजग व्यक्ति असत्य को सुनता है और उसका वध कर देता है। वह उस मार्ग पर चलता है जिस पर परमेश्वर चला है वह उसी मार्ग पर परमेश्वर का हाथ पकड़कर चलता है तो उससे अनुचित कार्य हो ही नहीं सकता।

यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन पूरी ईमानदारी एवं सत्यता से करें तो शायद एक स्वच्छ एवं शुद्ध समाज का निर्माण हो सकता है। हम दूसरों से अपेक्षा करने की जगह स्वयं को उचित एवं सत्य के मार्ग पर रखें दूसरे तो स्वयं उसका अनुसरण करने लगेंगे। एक बहुत ही पुरानी और प्रचलित कहावत है–आप भला तो जग भला।

*****

बिखरता बचपन

(थाम लो हाथ)

जय बल्लभ
प्लेट कीपर ग्रेड–।।

क्या धूप क्या बरसात
तूफान या ठिठुरती रात।

उनकी किस्मत में तो बस
भूखा पेट उघड़ा गात।

न भाते उनको फूलों के रंग
न रास आता तितलियों का साथ।

खो गया भूख में बालपन
कचरे में रोटी ढूंढते नन्हें–नन्हें हाथ।

कहीं भट्टी में जलता बचपन
कहीं जूते सीता, कचरा ढोता।

मायूसी के सागर में खोता
भोला मन भोली बात।

आओ न बिखरने दो
कल के कर्णधारों को।

थाम लो उनके हाथ
शिक्षा का एक दीप जलाकर।

उनको ऐसी राह दिखा दो
मिले जो सुखद जीवन का अहसास।

बस ऐसा कुछ सिखला दो
उनका जीवन सफल बना दो।

दहेज

राकेश जैन
उत्तरी मुद्रण वर्ग

बापू काम से नहीं लौटा
लक्ष्मी भूखी सो गई
कविता इतिहास के पन्नों में खो गई
सरस्वती निरक्षर है, पर गुणों की साक्षर है
विद्या तो पढ़ी लिखी थी
फिर क्यूं वो ब्याहने नहीं आया
उसका पिता दहेज नहीं दे पाया
अमृता ने विषपान कर लिया
बदनामी के डर से
चली गई थी धोखे में, एक दिन वो घर से
रश्मि धूमिल है, संध्या डूब गई
सुमन मुरझा गई, लता टूट गई
बिखर गई है माला, ठंडी हुई है ज्वाला
सीता तिरस्कृत है, मौहब्बत लुट गई
रो रो के अन्धी हो गई है सुनयना
वाणी भी सदमें से गूंगी हो गई
सूख गई है गंगा, अब जमना की बारी है
चालीस की हो गई शुभागो,अभी तक कुंवारी है
शीला न बचा पाई अस्मत अपनी
करम जली की किस्मत अपनी
तृप्ति को प्यास है, चंचल उदास है
आशा को आज तक, पिया मिलन की आस है
गीता पर भी कसे जाते है तंज
इसी बात का तो है रंज
दहेज की छुरी, ममता पर भी चल गई
दीपाली बुझ गई रूपाली जल गई
तुम राष्ट्र की नव पीढ़ी हो
आसमानों की सीढ़ी हो
देश का काया कल्प करो
नौजवानों संकल्प करो
जात पात का परहेज नहीं
दुल्हन लाएगें दहेज नहीं।

चिरस्मरणीय स्वर्णिम यात्रा वृत्तांत

श्रीमती चिन्मयी नाग
छायांकन संवारकर्ता ग्रेड –।।
पश्चिमी मुद्रण वर्ग, दिल्ली

यह कहावत प्रचलित है कि हिन्दुस्तान है, कश्मीर से कन्याकुमारी तक। किन्तु तब भूल जाते हैं कि बंग सागर के मध्य में एक राज्य 'अंडमान एवं निकोबार' भूस्वर्ग से कम नहीं है। यहां भारत के दक्षिण का अंतिम बिन्दु 'इंदिरा प्वाइंट' के रूप में मौजूद है।

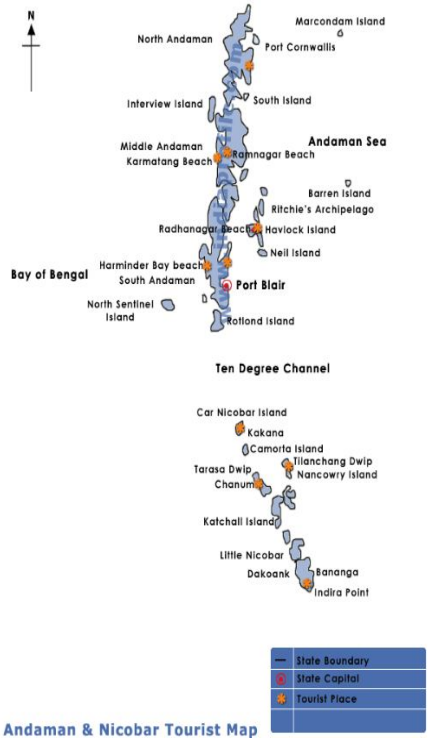

अंडमान निकोबार द्वीप पुंजों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति की देवी ने अपने कर–कमलों से, पन्ना की हरे रंग की माला बिखेर कर बंगाल की खाड़ी में 780 कि.मी. के क्षेत्र में फैला दी हो और प्रत्येक पन्ना का नग अलग–अलग छोटे–छोटे द्वीपों में परिणित हो गया हो। यहॉ के द्वीप पुंज –'नील–हरी, काली–मखमली, कलकल करता अद्भुत अनुपम शीतल सुन्दर मनोहारी छटा बिखेरता 'बंग सागर' के स्वर्ग रूपी स्वर्णिम आभा से आलोकित है।

अंडमान निकोबार केन्द्र शासित प्रदेश है यहॉ की राजधानी पोर्टब्लेयर है। यह रंगून (बर्मा), फूखेत (थाइलैण्ड) और मलेशिया, सुमात्रा के पास है। अंडमान निकोबार में 572 द्वीप पुंज है जिसमें से केवल 36 द्वीप पुंजों में ही लोग निवास करते है शेष सब रिक्त हैं। यहां का तापमान 23 डिग्री से 33 डिग्री तक रहता है यहां का कुल क्षेत्रफल 8.073 वर्ग किलोमीटर है मई से सितम्बर तक घनघोर वर्षा होती है अक्टूबर में हल्की–हल्की बौछारें पडती हैं। यहॉ का सबसे ऊंचा शिखर सैण्डल पीक है जो 732 मीटर ऊंचा है। निकोबार को वर्तमान समय में पर्यटकों के आवाजाही के लिए सरकार की ओर से बंद करने का आदेश दिया गया है क्योंकि 26 दिसम्बर, 2004 में, समुद्र में जो सुनामी आयी थी उससे सबसे ज्यादा जान–माल की क्षति निकोबार में हुई थी। अब वहां केवल सरकार के

आदेशानुसार वही सरकारी कर्मचारी जा सकते हैं जिन्हें सरकार की ओर से उन आदिम जनजातियों को जो बच गई हैं फिर से बसाने की जिम्मेदारी का निर्देश दिया गया है। भ्रमण में दिलचस्पी रखने वाले सरकारी कर्मचारियों को सरकार द्वारा एल.टी.सी. के माध्यम से विशेष आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। हम सभी अधिक से अधिक पहाडों की सुन्दरता से आकर्षित होकर अक्सर पहाड़ों की यात्रा को ही प्रथम प्राथमिकता देते हैं किन्तु यह कदापि भूलना नहीं चाहिए कि ऐसा ना हो कि ऊंचाई को स्पर्श करने की इच्छा हमें–'हमारे समक्ष, हमारी धरती पर बिछाए दैविक, प्राकृतिक चमत्कारों से निर्मित प्राकृतिक स्थलों की अनुपम शोभा के दर्शन से वंचित कर दे। मेरी हार्दिक इच्छा है कि हम जिस मिट्टी पर चलकर बडे हुए उसके सम्मुख विराजमान रोमांचकारी नैसर्गिक सुन्दरता का साक्षात् दर्शन–मेरे सभी साथी कर्मचारी भी करें। इसी उददेश्य से सर्वप्रथम मैं उन्हें आवाजाही के विकल्पों से अवगत कराना चाहती हूँ। अंडमान निकोबार पहुंचने के दो ही विकल्प हैं 1.आकाश पथ एवं 2. समुद्र पथ।

<u>समुद्र पथः–</u>

1.कोलकाता से पोर्टब्लेयर की दूरी–1255 कि.मी.

2.विशाखापटटनम से पोर्टब्लेयर की दूरी–1200 कि.मी.

3.चेन्नई से पोर्टब्लेयर की दूरी–1190 कि.मी.

कोलकाता–चेन्नै से प्रतिमाह 3–4 बार जलयान पोर्टब्लेयर चलता है। विशाखापट्टनम से प्रतिमाह एक बार जलयान पोर्टब्लेयर चलता है। कोलकाता, विशाखापटनम से पोर्टब्लेयर तक की दूरी जहाज 72 से 80 घण्टे में पूरी करता है। यही दूरी चेन्नै से पोर्टब्लेयर तक जहाज 50

से 60 घण्टे में पूरी करता है। जहाज से समुद्री सफर में सी सिकनेस का भय हो तो वायुयान से भी यात्रा कर सकते हैं। कोलकाता से पोर्टब्लेयर तक की हवाई यात्रा केवल दो घण्टे में पूरी होती है।

द्वीप पुंज प्राकृतिक सौंदर्य के साथ–साथ आकर्षणीय है यहां के स्थानीय निवासियों का मधुर व्यवहार। जिनमें सरलता, सादगी एवं ईमानदारी की झलक दिखती है। उनके संस्कार की यही गरिमा है–जिसे अभाव के अपार अन्धकार में भी सरल मुस्कान की किरण बिखेरकर पयर्टकों को भावविभोर और मंत्रमुग्ध कर देती हैं।

अंडमान निकोबार की विशाल संपदा है– हजारों प्रजाति के छोटे–बड़े वृक्ष और प्रदूषण से मुक्त आदिम जनजातियों से घिरा द्वीप पुंज। आदिम जनजातियों में प्रमुख है–

1. जरोआ 2. सेन्टिन लिज 3. ओंगे
3. ग्रेट अन्दामानिज।

ये सभी आज भी परिधानरहित जंगल में विचरण करते हैं, जंगली पशुओं एवं कंद–फलमूलों को खाकर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। ये सदैव तीर–कमान सहित रहते हैं। छोटे गोलाकार जालों से मछलियों का शिकार करते हैं सरकार की तरफ से इन्हें शिक्षित और आधुनिकता में ढालने की कोशिश सदैव व्यर्थ सिद्ध हुई। सबसे अधिक संख्या में अब केवल जरोवा जनजाति है। इनकी कुल संख्या लगभग 200 तक रह गयी है। सरकार इनके संरक्षण की पूरी व्यवस्था कर रही है

<u>प्रथम दिनः</u> पोर्ट ब्लेयर में प्रथम दिन हमने वहां के स्थानीय स्थलों का दर्शन किया जिसमें प्रमुख है :–

1. सागरिका 2.समुद्रिका 3.भारतीय सर्वेक्षण एवं वन विभाग 4.साइंस सेंटर 5.फिशरिज म्यूजियम 6.एन्थ्रोपोलोजिकल म्यूजियम 7. सेल्यूलर जेल।

इन सभी में विभिन्न प्रकार के सामुद्रिक जीव, रंग–बिरंगी विभिन्न प्रकार की मछलियॉ तथा विभिन्न आकारों वाला कोराल का अदभुत एवं असंख्य विशाल उद्यान का संरक्षित संग्रह देखा। वन विभाग में सुंदर दृश्यों के साथ–साथ लकडी के बने सजावट के साजो–सामान देखने को मिला। एन्थ्रोपोलोजिकल म्यूजियम में आदिम जनजातियों के मॉडल उनके रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा एवं उनके द्वारा निर्मित कलाकृतियों से हमारा परिचय हुआ। दोपहर बाद सेल्यूलर जेल देखने गए।

<u>सेल्यूलर जेलः</u> इसका अपना एक वृहद इतिहास है। इसके दर्शन के बिना अंडमान यात्रा अपूर्ण है क्योंकि यह दर्शनीय स्थल ही नहीं भारतवर्ष के अनेक तीर्थों का महातीर्थ है, जहां हमारी स्वाधीनता संग्रामी देश–भक्तों की महान आत्माएं हमें कुछ समय के लिए–भूले–बिसरे स्वाधीनता संग्राम की याद दिलाकर, उनकी अथक परिश्रम एवं यातनायुक्त जीवन बलिदान से प्राप्त 'आजाद हिन्दुस्तान' की वास्तविक एवं मार्मिक इतिहास की छवि से परिचय करवा कर हमें भावुक तथा हमारे तन–मन में त्वरित विद्युत शक्ति प्रवाहित कर देती है।

1857 तक 'ब्रिटिश एम्पायर' नामक नक्शे में यह एक छोटा सा बिन्दु मात्र था। 1896 में एन.एम.टी.हमफोर्ड ने बर्मा से यहां ईंटें मंगवा कर इसका निर्माण कार्य शुरू किया। अपने कारीगरों के साथ–साथ 600 कैदियों के सहयोग से इस जेल का निर्माण किया। हमारा दुर्भाग्य है कि काले पानी की सजा काटने वाले महान देशभक्तों को हम जीवित नहीं देख पाए परन्तु देशभक्तों की यंत्रणायुक्त चीख–पुकार की मर्मस्पर्शी वेदना को अपने भीतर समाए 150 वर्ष से भी पुराना केवल एक पीपल का वृक्ष जो मूकदर्शी था, उसका दर्शन कर हम धन्य हुए जो जेल के प्रवेश द्वार पर आज भी सीना ताने ज्यों का त्यों खड़ा है।

सायंकाल को 5 से 6 बजे तक इस जेल परिसर में 'प्रकाश और ध्वनि' का कार्यक्रम देखा जिसे इस तरह पेश किया गया मानों पीपल का वृक्ष ही स्वाधीनता संग्राम की कहानी अपनी जुबानी बयॉ कर रहा हो। इसमें प्रस्तुत किया गया कि 'किस तरह देशभक्त क्रांतिकारियों को अंग्रेज यातनाएं देते थे। जेलर डेविड बेडियों और जंजीरों से बंधे कैदियों पर हावी होकर मूर्छित कर देता था। उन्हें मानसिक प्रताडनाएं भोगने को विवश करता था'। महान वीर सावरकर के सम्मुख उनके भाई गणेश सावरकर को किस तरह यंत्रणाएं देकर सावरकर को मानसिक रूप से दुर्बल करने की पुर–जोर कोशिश जारी रखी।

सेल्यूलर जेल को तारा मछली की तरह से बनाया गया था। जिसमें पहले सात खण्ड थे।

1941 में भूकम्प से दरारें पड़ने के कारण चार खण्डों को तोड़ दिया गया। अब केवल तीन खण्ड शेष है, जो हमारे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में विराट महत्वपूर्ण स्मारक के रूप में विराजमान है। इसमें 698 सेल है। प्रति सेल 13.5/7 फिट है। 23 मार्च 1942 तक यहां जापानियों का कब्जा था इन्होंने भी अंग्रेजों की ही तरह भारतीयों को कैदी बनाकर उनपर भीषण यंत्रणाओं का सिलसिला जारी रखा। 30 दिसम्बर 1943 को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने यहां सर्वप्रथम अपना कब्जा किया और समस्त विप्लवियों, देशभक्तों को छुड़वाकर अंडमान को स्वतंत्र राज्य घोषित किया। 'सुभाष जी के नेतृत्व में– भारत का यह प्रथम भूखण्ड– अंडमान द्वीप पुंज था जिसपर उन्होंने कब्जा किया था' और वे आज भी अंडमान में प्राण के देवता के रूप में पूजे जाते हैं। फरवरी 1979 में हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने इसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया।

दूसरा दिनः सर्वप्रथम हमने नेताजी सुभाष स्पोर्टस कॉम्प्लेक्स देखा। जहां वाटर स्पीड बोट का आनंद लिया। यहां नौकायन, विंड सर्फिंग, पैरासेलिंग, स्कूबा डाइविंग, स्नोरकिलिंग आदि की व्यवस्था है। दोपहर में 1–2 घण्टे विश्राम करके थकान मिटाकर फिर घूमने निकल पडे। **छत्तम सॉ मिलः** यह एशिया का सबसे पुराना और सबसे बडा लकड़ी का कारखाना है। जहां लकड़ी का बना सुंदर–सुंदर कलाकारी का सामान देखा। फिर हैवलॉक द्वीप के लिए रवाना हो गए।

हैवलॉक द्वीपः यह पोर्टब्लेयर से 70 कि.मी. दूर है वहां पहुंचने में दो घण्टे लग गए। सूर्यास्त हो जाने के कारण राधा नगर में जो हैवलॉक बीच के पास है–एक कॉटेज रात्रि में विश्राम के लिए रिसॉर्ट में आरक्षित किया। और भोजन के उपरान्त अपने कॉटेज में विश्राम करने के लिए चले गए।

तीसरा दिनः प्रातः काल उठकर वाहन द्वारा सीधे हैवलॉक बीच पहुँचे जो रिसॉर्ट से 8–10 कि.मी. दूरी पर है। वहां पहुॅचकर सर्वप्रथम एक दुकान में अल्पाहार किया और छोटे–छोटे कोराल से बने आभूषण और सजावट का सामान खरीदा। बाद में ठंडी लहरों का आनन्द लेने हेतु बीच में पहुॅच गए। हैवलॉक बीच भारत का प्रथम, दुनिया में सातवॉ और एशिया में दूसरा सबसे सुंदर और साफ–सुथरे बीच के रूप में प्रसिद्ध है। लहरों का पास आना, छूकर चले जाना पूरे वातावरण को अनोखा और अविस्मरणीय बना गया। सायं को हम अपने गंतव्य स्थल पोर्टब्लेयर फेरी से वापस आ गए।

चौथा दिनः चौथे दिन 'नौर्थ बे' के कोराल द्वीप और रॉस द्वीप की यात्रा पर निकल पडे।

नार्थ बेः इसमें लाइफ जैकेट पहनकर बोट के ग्लास बोटम से समुद्र के जल के नीचे तैरते हुए स्पष्ट रूप से दिखते हुए रंग–बिरंगी मछलियां और कोरालों को देखना जीवन का पहला रोमांचकारी अनुभव था। यहां बच्चों के लिए स्नोरकिलिंग एवं स्कूबा डाइविंग की भी व्यवस्था है। वापस लौटते समय नॉर्थ बे से दूसरे द्वीप पर, जो हमारे द्वीप से दूर

था,–भारत के नक्शे का अंतिम बिंदु इंदिरा प्वाइंट है, उसका दुर्लभ एवं सुंदर चित्र अपने कैमरे में कैद करने में देरी नहीं की । इंदिरा प्वाइंट, लाइट हाउस है जो अंतर्राज्यीय जहाजों को दिशा–निर्देश देता है। यही चित्र आपको हमारे रिजर्व बैंकों द्वारा मुद्रित बीस रूपये के नोट के पीछे अंकित मिलेगा।

रॉस द्वीपः यह द्वीप नारियल एवं सुपारी के बड़े–बड़े वृक्षों से भरा हुआ है। यह द्वीप ब्रिटिश काल में अंडमान की राजधानी थी। अब यह खंड़हर में परिणित है। उस समय के ऑफिसर्स क्वार्टर, सरकारी मकान, चर्च, स्वीमिंग पुल आदि खंडहर में तब्दील हो चुके हैं। यहां छोटा सा स्मृतिका म्यूजियम है तथा जगह–जगह पर हिरण पर्यटकों का मनोरंजन करते हैं।

पांचवा दिनः वैसे तो अंडमान में देखने के लिए बहुत द्वीप है परन्तु समय के अभाव में समस्त द्वीपों को देख पाना असंभव है। आज बाराटंग एवं चिड़िया टापू देखने निकल पडे।

बाराटंगः यह पोर्टब्लेयर से 120 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। 50 कि.मी. की दूरी तय करने के बाद एक फाटक के आगे सभी वाहनों के काफिले को रोक दिया जाता है क्योंकि इस समय यात्रियों को कई औपचारिकताओं से अवगत कराया जाता है। यह क्षेत्र जरवा जनजातिय बहुल क्षेत्र माना जाता है। इसलिए प्रदूषण से इन्हें कोई क्षति ना हो–वाहनों की खिडकियों को खुला रखने, खाने–पीने का कोई भी सामान देने तथा फोटो खींचने की यहां सख्त मनाही है आधुनिकता से परे, ये आज भी परिधानरहित जंगल में स्वच्छंद विचरण करते हैं। जंगली जानवरों का शिकार और कंद फलमूलों को खाकर जीवन निर्वाह करते हैं क्योंकि इनकी संख्या लगभग 200 तक रह गई है। इसलिए कभी–कभी 70 कि.मी. की पूरी यात्रा इन्हें देखे बिना ही लौटना पड़ता है। गाइड के अनुसार हम भाग्यशाली रहे क्योंकि यात्रा में आते–जाते

समय 6–7 जरवा जनजाति जो इस पृथ्वी पर सबसे पुरानी मंगोल जाति की मानी जाती है, साक्षात देखकर हम धन्य हो गए। सचमुच यह जीवन का दुर्लभ अनुभव था। कहा जाता है कि गलती से कोई जंगल में पहुंच जाए, फिर उसका लौटना नामुमकिन है। इसलिए वाहनों के काफिले के आते–जाते समय 70 कि.मी. की दूरी पुलिस अपनी सुरक्षा प्रदान कर वाहनों को पार कराती है। वहां पानी के जहाज से उतरकर मोटर बोट द्वारा दोनों तरफ घने वृक्षों के बीच से जिसे उष्णकटिबंधीय वर्षा वन कहा जाता है, के मध्य से गुजरकर हम अपने गंतव्य स्थल पहुंचकर, बोट से उतरकर, बांस के हिलते–डुलते पुल पार करके लाइम–स्टोन की अनोखी, अंधेरी गुफा में प्रवेश करते हैं। यह गुफा देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति ने अपने हाथों से संगमरमर को विभिन्न रूपों में जैसे शिवलिंग, कहीं शेर का पंजा एवं कहीं गणेश के रूप में तराशा है। मोटर बोट से वापस आकर फिर अपने वाहनों द्वारा पूरी सुरक्षा के बीच 70कि.मी. पार करके पोर्टब्लेयर वापस आते हैं। पोर्टब्लेयर से 140 कि.मी. दूर **बैरन द्वीप** है जहां 177 वर्ष पुराना ज्वालामुखी आज भी धुआं और आग उगल रहा है। परन्तु वन विभाग की अनुमति लिए बिना वहां जाना मना है।

<u>छठा दिनः</u> यह अंडमान यात्रा का अंतिम दिन है अतः अल्पाहार करके माउंट हैरियट पहुंचे जो अंडमान का सबसे ऊंचा स्थान है। फिर चिड़िया टापू देखने गए। यह सबसे शांत जगह है। यहां के स्थानीय निवासी अक्सर पिकनिक मनाने आते हैं। यहां से सूर्यास्त का दृश्य स्पष्ट दिखाई देता है।

अंडमान यात्रा स्मृतिपटल पर इस तरह अंकित हो गया है कि स्मृति के बंधन से बाहर निकलने का नाम ही नहीं ले रहा। सचमुच वहां की अलौकिक, मनोहारी, रमणीय, प्राकृतिक दृश्य एवं जरवा जनजाति की वो हैरतभरी चमकती आंखें, सेल्यूलर जेल का परिदृश्य, देशभक्तों की देश के लिए निःस्वार्थ बलिदान गाथा रूधिर के कण–कण में समाकर अंड़मान की यात्रा को चमत्कारिक, त्वरित, चिरस्मरणीय एवं स्वर्णिम यात्रा बनाकर जीवन को सार्थक बना दिया है।

✦ ✦ ✦

वो त्रासदी के पल

लेख– द्वारा श्रीमती सुमंगला चचड़ा,
पत्नी श्री राजेश चचड़ा
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून

16 जून की रात से ही बादलों की गर्जना के साथ बारिश ने केदारनाथ धाम में उपस्थित सभी भक्तों, पंड़े–पुजारियों आदि को चिन्तित कर दिया था। बारिश लगातार होती रही और साथ में बादलों की तेज गर्जन–आवाज ने रात को लोगों को ठीक से सोने न दिया। जिस बात का डर लोगों को डरा रहा था वो सुबह 7.40 पर सच साबित हुआ। केदारनाथ मंदिर के पीछे ऊपर पहाड़ों पर बादल फटा और ग्लेशियर से पानी का सैलाब फूटकर मंदिर की तरफ तेजी से बढ़ने लगा। पानी के साथ–साथ मलबा और बड़ी–बड़ी चट्टानें भी टूट–टूटकर अपने मार्ग में आने वाली हर वस्तु चाहे वो मानव हो, चाहे पशु–पक्षी, दुकानें, घर, होटल, धर्मशालायें, बड़ी–बड़ी गाड़ियॉ, बसें आदि सबको तहस–नहस करने लगीं।

उस समय मंदिर के बाहर सैकड़ों–हजारों भक्तों की लंबी–लंबी कतारें लगी हुई थीं। मंदिर के अंदर के गर्भगृह में भी अनेक भक्त भोलेनाथ की पूजा में लीन थे। बाढ़ मौत बनकर टूटी और लोगों को संभलने का मौका भी नहीं मिला। कुछ लोग भाग्यशाली रहे जो जान बचाकर ऊपर की पहाड़ी को ओर भागे। मंदिर के पास कम–से–कम दस–ग्यारह फुट तक का भाग मलबे व कीचड़ से पट चुका था। अंदर कुछ लोगों ने नंदी की मूर्ति तथा खंभों को पकड़कर अपनी जान बचाई।

4 किलोमीटर दूर रामबाड़ा का वो बाजार जहां पूजा की सामग्री तथा दैनिक वस्तुओं की अनेकों दुकानें थीं, देखते–ही–देखते अनेक भक्तों की भीड़ के साथ वो दुकानें, सामान, होटल, अनेक मंदिर, धर्मशालायें आदि सब मलबे के नीचे दफन हो गया और कुछ सैलाब में बह गये। गौरीकुंड वहां से 14 किलोमीटर दूर था। जहां गर्म पानी का ऐतिहासिक 'कुंड' था, उस समय अनेकों शिवभक्त उस गर्म पानी के पवित्र कुंड में स्नान कर रहे थे, कुछ मंदिरों में पूजा कर रहे थे, लगता नहीं कि इस प्रलय के बाद वहॉ कुछ शेष रहा हो। किस्मत के धनी और जिनकी जिंदगी अभी बाकी थी, वे लोग ही अपनी जान बचा पाए। कई पिताओं ने अपने बच्चों को मौत के मुंह में समाते देखा और वे कुछ न कर पाए। बच्चों ने उनकी गोद में दम तोड़ दिया। हज़ारों पत्नियों ने अपनी आंखों के सामने अपने पतियों को हमेशा के लिए खो दिया और वहीं दूसरी तरफ हजारों ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी आँखों के सामने अपने परिजनों के मृत शवों को वहीं पर छोड़कर अपनी जान बचाई। जो जीवित बचे, वे हमेशा इस त्रासदी को बुरे सपने की तरह याद रखेंगे और उस पल को कोसेंगे जब वे पूरे परिवार के साथ चारधाम यात्रा पर निकले थे। जिन्होंने इस आपदा में अपनों को अपनी आंखों से मिट्टी में मिलते देखा वो तो जानते हैं कि उनके अपने इस दुनियां में नहीं हैं परन्तु जो हजारों लोग इस त्रासदी में लापता हो गए उनका क्या होगा वे जीवित हैं या मृत्यु को प्राप्त हो गए, उनके नाते–रिश्तेदार कभी जान ही नहीं पाएंगे।

वैसे तो प्रथम दृष्टया यह प्राकृतिक आपदा मानी जाती है, पर देखा जाए तो इसका पूरा–पूरा उत्तरदायी मानव ही है चाहे वो आम आदमी हो या सरकार के गणमान्य जन। राज्य सरकार को मौसम विभाग ने समय रहते ही 16 व 17 जून 2013 को भारी बारिश की चेतावनी दे दी थी और साथ ही चारधाम यात्रा को रोकने के लिए भी कहा गया था। परन्तु राज्य सरकार ने मौसम विभाग की चेतावनी को पूरी तरह से नजरअंदाज़ किया और आपदा हेतु कोई ठोस उपाय या कदम नहीं उठाये, जिसका खामियाजा वहां गए भक्तों को भरना पड़ा। यही नहीं उत्तराखण्ड सरकार के पास चारधाम यात्रा पर जाने वालों की कोई नाम–सूची ही नहीं थी। सरकार को जम्मू राज्य से सबक लेना चाहिए जहां अमरनाथ यात्रियों की पूरी नाम–सूची आदि का ब्यौरा होता है। उनका मेडिकल चेकअप किया जाता है कि वे ऊंचाई पर जाने के लिए शारीरिक रूप से सक्षम हैं या नहीं। वहां पर जाने वालों की न्यूनतम आयु सीमा 13 वर्ष तथा अधिकतम 70 साल होनी चाहिए थी। अगर ये सब आवश्यक नियम व कागजी कार्यवाही बहुत समय पहले ही आरम्भ कर दी जाती तो लोगों की अंधाधुंध भीड़ वहां न जाया करती। पर लगता है कि सरकार को केवल अपनी जेबें भरने से ही मतलब था। ये सब सरकारी, तंत्र की घोर लापरवाही की ओर इशारा करती है और सरकार की नाकामी दिखाती है। दुर्घटना के तीन–चार दिन बाद की तो छोड़िये आज एक माह बाद भी वहां के आपदा प्रभावित गॉववासियों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति केवल खानापूर्ति बनकर ही रह गई है।

रास्तों की दशा ऐसी बदहाल हो चुकी है जिसे ठीक करने में कम–से–कम दो से तीन वर्ष तो लग ही जाएंगे। लाशों के अंबार अब भी केदारनाथ घाटी, रामबाड़ा बाजार, गौरीकुंड में यहॉ–वहॉ पड़े दिख जाते हैं। इस आपदा में सैकड़ों तो मलबों के नीचे हमेशा के लिए दफन हो चुके हैं साथ ही कई गांव व सड़कें आदि पूरी तरह से उत्तराखण्ड के मानचित्र से गायब ही हो चुके हैं।

सरकार की ओर से आपदा प्रभावित गांवों तक सहायता मार्गों की क्षति होने से धीमी गति से पहुंचायी जा रही है। भले ही उत्तराखण्ड सरकार द्वारा आपदा में मारे गये लोगों तथा लापता लोगों के परिजनों को कितनी भी सहायता राशि प्रदान कर दी जाए, परन्तु इस प्राकृतिक आपदा की भरपाई कभी नहीं हो सकती। यह त्रासदी कई दशकों में सबसे बड़ी त्रासदी है और इस त्रासदी के पलों को याद करते ही पूरे शरीर में एक भय की लहर दौड़ जाती है।

"हे ईश्वर! मृत लोगों की आत्मा को अपने में समाहित करना,
खोया है जिन लोगों ने अपनों को, उन्हें भी शांति प्रदान करना।"

* * * * *

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का निर्णय किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र का है।

डॉ कालूलाल श्रीमाली

अपनों की तलाश में

द्वारा श्रीमती सुमंगला चचड़ा,
पत्नी श्री राजेश चचड़ा मसका ।

केदारनाथ की उस भक्तिमय, पावन धरा पर,
वेदों, शास्त्रों में पूजनीय शिवनगरी बाबा के सदन पर,
भोलेनाथ के धाम पर करने गये नमन,
वृद्ध गात, संताप, कठिन था आवागमन,
दुधमुँहे बालगोपाल, कुछ बड़े, कुछ नौनिहाल,
भिन्न वर्ग, भिन्न आयु, भिन्न राज्य, देश एक,
पर सभी के चित्त में थी भावना एक,
शीश नवाने, शिव को मनाने की थी चाह,
झुकती कमर, चढ़ती सांसें, अशक्त तन, रोक न सके राह,
सहसा! जाने किस कारण शिवशंभू ने खोला अपना त्रिनेत्र,
पहाड़ों पर विनाश का तांडव मचा, खोला अपना त्रिनेत्र,
आया सैलाब नदियों में, भीषण तबाही मचाई,
पावन केदारभूमि मासूमों के रक्त से नहाई,
देखते ही देखते छूटा अपनों का साथ,
पिता का बेटे से, पत्नी का पति से, छूटा हाथ से हाथ,
किसी बेटे ने तोड़ा पिता की आंखों के सामने दम,
हज़ारों माताओं ने छोड़ा मासूमों का संग,
चहुं ओर फैली भयावह, मरघट सी खामोशी,
जिधर भी दृष्टि जाती लाशों का था अंबार,
श्मशान के स्वामी ने बना डाला पल में,
अपने प्रिय भक्तों को श्मशान का निवासी,
हे प्रभु! इतनी भयावह विभिषिका क्यूं ?
असंख्य प्रश्न पूछती, असंख्य अपनों की आंखें,
हे शिव! इतनी हृदयविदारक दर्दनाक मौत क्यूं ?
न मिल सका अपनों को स्वजनों का अंतिम दर्शन,
कुछ तो दयनीय, शोचनीय स्थिति में थे गुम,
जाने अपने उनके जीवित हैं या मृत, वे हो गए गुम,
अपलक दृष्टि कर रही थी अपनों की तलाश,
कुछ भाग्यशाली जीवित मिले, अपनों से पूरी हुई आस,
पर असंख्य इस भीषण तबाही में हुए लापता,
हजारों मील चले, चप्पे–चप्पे से पूछा उनका पता,
वो जो सुप्तावस्था में थे बाबा की गोद में
मलबों के ढेर में आज भी हैं अपनों की तलाश में,
पथराई आंखें, टूटती सांसें, खोजती हैं अपनों को।

*****

अति तृष्णा न कीजे

डी.पी.एस. माटा
जी. एंड आर. बी.

बहुत समय पहले की बात है, किसी गांव में एक गरीब किसान अपने परिवार के साथ रहता था, अत्यधिक मेहनत, मजदूरी करके भी उसे दो जून की रोटी भी मुश्किल से नसीब होती थी।

एक दिन उसके घर के आगे से साधू बाबा गुजर रहे थे। उन्होंने उससे भिक्षा मांगी, किसान ने उसकी सेवा बहुत अदब और अपनी हैसियत से भी अधिक करने का प्रयास किया, साधू बाबा बहुत खुश हुए और बोले '' बच्चा कुछ मांग'' किसान ने अपने सीधे –साधे लहजे में उत्तर दिया '' महाराज बस आपकी कृपा–दृष्टि हमेशा बनी रहे''। बाबा ने उसे भेंट स्वरूप एक साधारण कंकड़,पत्थर प्रदान किया, बोले बेटा जब तुम्हें धन की आवश्यकता होगी तो इस पत्थर को लेकर उत्तर दिशा की ओर चलना, जहां तुम्हें इच्छा करे रास्ते में चलते समय कंकड़ गिरा देना और कंकड़ के गिरने के स्थान को कुछ गहरा खोदने पर तुम्हें तुम्हारे जीवन यापन लायक खजाना मिल जाएगा फिर इस पत्थर का इस्तेमाल कभी मत करना। किसान परिवार ने साधू बाबा को प्रणाम किया और साधू बाबा अगले गांव की ओर भ्रमण पर निकल पड़े।

अगले दिन किसान की बीबी ने अपने पति को कहा कि जो कंकड़ बाबा दे गए थे उसका उपयोग उसी प्रकार करो जैसा कि उन्होंने बताया था ताकि हम गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकल सकें। किसान अपनी पत्नी का कहना मानते हुए उत्तर दिशा की ओर निकल पड़ा कुछ कोस चलने के बाद उसने वह कंकड़ रास्ते में गिरा दिया उसे बाबा की बात ध्यान में आयी कि जहां पत्थर गिरेगा वहीं तेरे जीवन यापन करने लायक खजाना मिल जाएगा। किसान कंकड़ गिरने के स्थान से कुछ दूरी पर स्थित एक मकान में गया, ताकि गैंती फड़वा मकान वाले से लेकर कंकड़ गिरने वाले स्थान की खुदाई कर सके। उस मकान के मालिक ने गैंती फड़वा दे दिया लेकिन साथ ही वह किसान द्वारा खोदे जाने वाले स्थान को भी देखने लगा, तो उस गड्ढे में से चांदी के अनगिनत सिक्के निकले किसान के द्वारा प्राप्त धन को देखकर गैंती–फडवा देने वाले के मन में लालच आ गया कहने लगा '' अरे भाई तूझे तो अब धन मिल गया इस पत्थर को अब मेरे को दे दो'' किसान ने अपनी सादगी और सरलता का परिचय देते हुए उसे वह कंकड़ सौंप दिया वह बहुत खुश और संतुष्ट था कि अब उसे अपने जीवन यापन लायक धन मिल चुका था।

गैंती–फड़वे का मालिक, किसान से पत्थर लेकर अगले दिन वह भी उत्तर दिशा की ओर चल दिया उसने भी रास्ते में एक जगह पत्थर गिराया तो उस स्थान की खुदाई पर उसे सोने की अशरफियां मिली उसने उस स्थान को मिट्टी से ढक कर निशानी लगा दी और पुनः उत्तर दिशा की ओर चल दिया कुछ कोस चलने के बाद उसने फिर वह कंकड रास्ते में गिराया उस स्थान पर भी खुदाई करवाई तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा उस गड्डे में उसे हीरे जवाहरात मिले उसने उस स्थान को भी ढक कर निशानी लगा दी और मन में सोचने लगा कि उत्तर दिशा ओर आगे बढ़ूं तो कुछ और बहुमूल्य

वस्तुएं आदि प्राप्त होंगी, जिसको पा लेने से मैं दुनिया में सबसे धनाड्य व्यक्ति बन जाऊंगा और मन ही मन उसकी जीभ मारे लालच और खुशी के लप लपा रही थी। उस व्यक्ति द्वारा पुनः उत्तर दिशा की ओर बढ़ने पर चलते–चलते एक विशाल पहाड़ आ गया जिसमें एक बहुत लम्बी गुफा थी उसके अन्दर बहुत अधिक प्रकाश होने के कारण गुफा बहुत सुन्दर और कई रंगों की चमक से ओत–प्रोत हो रही थी। वह व्यक्ति उत्तर दिशा की ओर चलते–चलते उस कंकड़ को लेकर पुनः विशाल पहाड़ की लम्बी गुफा में प्रविष्ट हो गया जो अत्यधिक प्रकशवान थी तथा उसमें रंग बिरंगी प्रकाशमान किरणें चक्राकार रूप में घूम रही थी।

वह व्यक्ति गुफा में कुछ दूर चला तो उसे गुफा में हीरे–जवाहरातों से जड़ा एक सिंहासन दिखाई दिया जिस पर एक सुन्दर मानव विराजमान था और उसके शीश पर महंगे हीरे रत्नों और जवाहरात से जड़ित मुकुट था जिसके पीछे एक विशाल प्रकाशमान चक्र लगातार चल रहा था तथा शरीर पर सच्चे मोतियों से लदे वस्त्र धारण किए हुए था उस मुकुट का प्रकाश इतना तीव्र और सुन्दर था कि इस कंकड़ को धारण करने वाले मानव की आंखें चकाचौंध होने लगी कि काश ये ताज मैं भी पहन कर देखूं लेकिन जो मानव सिंहासन पर विराजमान था उसके आगे एक पारदर्शी वस्तु का मजबूत द्वार था। कंकड़ धारण करने वाले व्यक्ति ने गुफा में स्थित सिंहासनधारी व्यक्ति से पूछा कि ''महाराज आप यहां कब और कैसे आए'' तो सिंहासनारूढ़ व्यक्ति ने कहा कि मैं तुम्हें सारी कथा बताता हूं पहले इस मुकुट को अपने शीश पर धारण करके इस सिंहासन पर बैठ जाओ ।

कंकड़ धारण करने वाला व्यक्ति उसके मुकुट को अपने शीश पर धारण करके और सिंहासन पर बैठकर कुछ क्षणों के लिए बहुत खुश हुआ वही दूसरी ओर गुफा में स्थित चक्रधारी मानव गुफा के द्वार पर वापिस आ गया और गुफा का पारदर्शी द्वार अचानक धीरे धीरे बन्द होने लगा। इस सिंहासन व मुकुट को धारण करने वाले व्यक्ति ने पुनः चिल्लाकर कहा महाराज आपने मेरी बात का जवाब नहीं दिया कि आप इस गुफा तक कैसे पहुंचे थे और अब मैं कैसे यहां से बाहर निकलूंगा।

गुफा छोड़ कर जाने वाले व्यक्ति ने जोर–जोर से चिल्लाकर कहा कि ''जब तुमसे ज्यादा लालची इंसान यहां तक पहुंचेगा तभी तुम इस गुफा से भविष्य में निकल पाओगे।'' इतना कहकर वह पीछे गुफा को देखे बिना सरपट भागने लगा। गुफा का पारदर्शी द्वार पुनः बन्द हो चला था। पहाड़ पर सांझ का सन्नाटा धीरे–धीरे पसर रहा था परन्तु गुफा के द्वार पर रंग बिरंगा प्रकाश अब भी सदैव की तरह विद्यमान था वह कंकड़ धारण करने वाला व्यक्ति सिंहासनारूढ़ होने के बावजूद कैद हो चुका था। अतः महात्मा कबीर जी का दोहा इस कहानी को चरितार्थ करता प्रतीत होता है।

सांई इतना दीजिए जां में कुटुम्ब समाए।
मैं भी भूखा न रहूं साधू न भूखा जाए।।

* * * * *

केदारनाथ में तबाही

टीकम सिंह,
सीनियर रिप्रोग्राफर, स्था.–1

केदार बाबा धाम यह तेरा
श्रद्धालुओं का पड़ गया डेरा
गये थे सब माथा नवाने
लेकिन पहुंचे जान गवांने।
जून सत्रह की थी बात
मंदाकिनी बैठी लगाए घात
चार पहर जैसे हुए हवाई
केदारनाथ में हुई तबाही।
इन्द्र देव ने खोला द्वार
उफनती गंगा ने किया प्रहार
हुई प्रलयकारी गंगा माई
मची चारों ओर त्राही त्राही।
पत्थर पानी मिट्टी गाद
अन्तिम सांसे आई याद।
बच्चे बूढ़े और जवां
बहने लगे जहां के तहां।
था मौत का जो नजारा
कांप जाता बदन सारा।
बचाओ बचाओ चीख पुकार
बह गए जहां सपरिवार।
बचे खुचों की आगे कहानी
सुनकर होती बड़ी हैरानी।
किस्मत यात्रियों की ऐसी फूटी
पूरे जिले की सड़कें टूटी।
फोन करने को वे थे मजबूर
संचार साधनों का चकनाचूर।
ऐसी मुसीबत से कौन उबारे
नदियों पर पुल भी टूटे सारे।
तीव्र बुद्धि भी हो गई मन्द
आवागमन भी हो गया बन्द।
राहत कार्य की आई बारी
उत्तराखण्ड की बढ़ी जिम्मेदारी।
केन्द्र ने भी बढ़ाया हाथ
राज्य सभी दे रहे साथ।
मौसम खराब से हो गई देर
राहत सामग्री के लग गए ढ़ेर।
अन्न का दाना दाना आया याद
हैली पैड पर राशन बर्बाद।
छूटे ऐशो आराम व सुख भोग
बीहड़ जंगलों में फंस गए लोग।
बचने का कोई रहा न चारा
दुर्भाग्य कैसा रहा हमारा।
फरिश्ता बन कर सेना आई
मार्ग ढूंढ़े तब हवाई।
बीसों हैलिकॉप्टर उड़ाये जब
फंसे हुए यात्री छुड़ाए तब।
फैला सब जगह बजरी रेत
ढह गए मकान बह गए खेत।
लाशों का जो मंजर देखा
नहीं हो सकता उसका लेखा।
उजड़ गए हैं सहस्त्रों घर
गिद्ध मंडराते लाशों पर।
डंगर भैंसे खच्चर घोड़े
जहां के तहां प्राण छोड़े।
हुई दुर्गन्ध की सीमा पार
रहना वहां हुआ दुश्वार।
जो भी डाक्टर पहुंचे जाए
बीमार होकर वापस आए।
महामारी का हो गया डर
जनता वहां की छोड़ रही घर।
लूट मार का हुआ जैसा काम
धर्म ईमान का रहा न नाम।
गए थे यात्री दर्शन देब
मुरदों के वहां टटोले जेब।
मुवावजे की जब आई बात
गऐ फर्जी प्रमाण पत्र ले कर साथ।
चारधाम यात्रा और ऐसे मरना
आगे प्रभु कभी न करना।
वीरान जिन्दगी का है क्या सार
दुखड़ों को सभी के करना पार।
प्रार्थना मेरी यह कर स्वीकार लेना
आत्माओं को उनकी शान्ति देना।

दर्द दामिनी

सुरेश चन्द्र
सीनियर रिप्रोग्राफर, अभिलेख अनुभाग
अंकीय मानचित्रण केन्द्र, देहरादून

ऐ दुनिया के बादशाह, ऐ दुनिया के बादशाह,
मैंने तुझे कभी देखा नही, ना मैं तुझे जानती
पर ये दुनिया हद से ज्यादा तुझे फिर भी क्यों मानती,
तूने तो मुझे ऐसा दर्द दिया
जिसे देख दुनिया भी कांप गई
आखिर तेरे ही बनाए दरिन्दों को
खूब अच्छी तरह मैं भांप गई
कसूर सिर्फ ये है कि मैं नारी हूं
पृथ्वी सी सब दुख सहने वाली बुत सी चित्रकारी हूं
पर पुरुष के लिए फलती–फूलती क्यारी हूं
सच ये है कि जीवन में मरते मरते भी नहीं हारी हूं
कहते हैं तू दया का सागर है
पर तू तो सागर में छुपी हुई गागर है।
गागर से अमृत तो दे ना सका, विष ही पिला देता
पर इन दरिन्दों के चंगुल से, ऐसी सजा तो ना देता
दुनिया का हर दर्द तेरे से छुप ना सका
सब देखकर भी पापों का अन्त रुक ना सका
इसीलिए तू इस दुनिया में नहीं उदास है
सारी दुनिया को कैद कर खुद तू सबके पास है
इस समाज को मेरे जन्म से घृणा है
इस समाज को मेरे यौवन की तृष्णा है
इस समाज को मैंने सब समर्पण किया है
इस समाज को सिर्फ नारी के शोषण की तृष्णा है
इस समाज ने पवित्र रिश्ते क्यों बना दिए
मां बहन,बेटी, सब रिश्तों को क्यों जला दिए
क्या ये समाज यौवन की भाषा ही जानता है
यौवन के सिवा दूजी भाषा क्यों नही पहचानता है
इस दुनिया में नारी तो नारी वो अमर लता है
जिस लता से पुरुष फलता–फूलता पत्ता पत्ता है
पर अब भविष्य में सब रिश्ते हो रहे लापता हैं
आज दर्द दामिनी देखने वाली आंखों का ही नहीं पता है।

* * * * *

'एक अनुभव'

मै और मेरे पिता

(संकलनकर्ता)
के. एस. नेगी
हिन्दी अनुवादक,
महासर्वेक्षक का कार्यालय।

जब मैं 3 वर्ष का था तब समझता था कि मेरे पिता दुनिया के सबसे मजबूत और ताकतवर व्यक्ति हैं।

जब मैं 9 वर्ष का था तब मैंने महसूस किया कि मेरे पिता दुनिया के ताकतवर, समझदार और दुनियां की हर चीज के बारे में ज्ञान रखने वाले इन्सान हैं।

जब मैं 12 वर्ष का हुआ तब मैं महसूस करने लगा कि मेरे मित्रों के पिता मेरे पिता के मुकाबले ज्यादा समझदार हैं।

जब मैं 15 वर्ष का हुआ तब मैंने महसूस किया कि मेरे पिता को दुनिया के साथ चलने के लिए कुछ और ज्ञान की आवश्यकता है।

जब मैं 20 वर्ष का हुआ तब मैंने महसूस किया कि मेरे पिता किसी और दुनिया के हैं वे हमारी सोच के साथ नहीं चल सकते।

जब मैं 25 वर्ष का हुआ तब मैने महसूस किया कि मुझे किसी भी काम के बारे में अपने पिता से सलाह नहीं लेनी चाहिए। क्योंकि उन्हें मेरे हर काम में कमी निकालने की आदत सी पड़ गई है।

जब मैं 30 वर्ष का हुआ तब मैं महसूस करने लगा कि मेरे पिता को मेरे काम करने के तरीके से कुछ समझ आ गई, क्योंकि उन्होंने मेरे काम में कमियां निकालनी छोड़ दी है।

जब मैं 35 वर्ष का हुआ मैं महसूस करने लगा कि उनसे छोटी–मोटी बातों के बारे में सलाह ली जा सकती है।

जब मैं 40 वर्ष का हुआ मैंने महसूस किया कि कुछ जरुरी मामलों में भी पिताजी की सलाह ले लेनी चाहिए।

जब मैं 50 वर्ष का हुआ तब मैंने फैसला किया कि मुझे अपने पिता की सलाह के बिना कोई भी बड़े कार्य नहीं करने चाहिए क्योंकि मुझे ज्ञान हो चुका था कि मैं पैसे की दौड़ में बहुत आगे निकल गया था और संस्कार, रिश्तों को भूलता जा रहा था साथ ही कुछ रोगों से भी घिरता जा रहा था। परिवार के सभी सदस्य अपने कामों में व्यस्त थे, मैं उदास और अकेले रहने लगा तब मुझे उन रिश्तों की याद आई जिन्हें मेरे पिता मुझे उंगली पकड़ कर टहलाते हुए समझाते थे अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि मेरे पिता वास्तव में बहुत समझदार व्यक्ति हैं। लोग भी उनकी उम्र उनके अनुभव का सम्मान करते हैं पर इससे पहले कि मैं अपने इस फैसले पर अमल कर पाता मेरे पिताजी इस संसार को अलविदा कह गए और मैं अपने पिता की हर सलाह और तजुर्बे से वंचित रह गया।

*****

हिंदी शब्दों का अशुद्ध त्रुटिपूर्ण प्रयोग सरकारी लापरवाही और उपेक्षा के कुछ उदाहरण

डॉ. नीलम कुमार बिड़ला
अभिलेखपाल ग्रेड–।।
आन्ध्र प्रदेश भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, हैदराबाद।

यद्यपि हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुए साठ वर्ष से अधिक बीत चुके हैं, फिर भी इसके उपयोग में सरकारी लापरवाही के अनेक उदाहरण जनता के सामने आते हैं और एक क्रूर विडंबना यह भी है कि उसको सुधारने की या उनका स्पष्टीकरण करने में स्वयं संबंधित केन्द्रीय मंत्रालय अक्षम सिद्ध होते हैं।

भारत सरकार के केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय द्वारा अरसे से देश–विदेश में प्रचार माध्यमों द्वारा श्रव्य–दृश्य व मुद्रित मीडिया में अतुल्य भारत के साथ–साथ समानार्थक शब्दावली इनक्रेडिबल इण्डिया प्रयुक्त की जाती है। क्या अतुल्य शब्द का अँग्रेजी अनुवाद इनक्रेडिबल या अविश्वसनीय सही है? इसी तरह यदि इनक्रेडिबल मूल पाठ में है तो क्या इसका अनुवाद अतुल्य सही है? अनेक प्रबुद्ध नागरिकों ने सरकार से इसका स्पष्टीकरण करने को कहा है, पर शासन–व्यवस्था को इस प्रकार के सरोकारों से कोई मतलब नहीं रहा है।

इसी तरह केंन्द्रीय डाक तार विभाग द्वारा जारी करोड़ों लोगों के चिर परिचित अन्तर्देशीय पत्र का सीधा अन्तनिर्हित अर्थ 'इन्लैण्ड लेटर कार्ड' नहीं होता है। अन्तर्देशीय का सादा अर्थ है दो या अधिक देशों में उपयोग किया जाने वाला। इस तरह प्रयुक्त होने वाले पत्र का शाब्दिक अर्थ मात्र देश के भीतर उपयोग में लाया जाने वाला कैसे हो गया? वर्षों पहले अनेक भाषाविदों ने ऊपर जैसे शब्दों के संशयपूर्ण प्रयोग पर आधारित आवाज उठाई थी पर सरकार के उच्चतम भाषायी निर्णय लेने वालों ने उपयोग की अस्पष्टता पर लापरवाही दिखायी।

यदि देश के फ्लोमिश मूल के विश्वविख्यात भाषा विद् डॉ. फादर कामिल बुल्के के मानक शब्द कोष में इनक्रेडिबल शब्द का अरसे से प्रयुक्त अर्थ देखे तो वह अतुलनीय या तुलना न किया जाने वाला होगा। इसी तरह इन्लैण्ड पर घरेलू या अन्तर्देशीय पत्र तो हो सकता है परंतु अन्तर्देशीय कभी नहीं हो सकता है। जिसका समानार्थी सही अर्थ होगा अनेक देशों के बीच उपयोग में लाया जाने वाला प्रचलित बंद पत्र।

एक ओर सरकारी हिंदी द्वारा असावधानी से इतर भारतीय भाषाओं को बोलने वालों के लिए असंवेदनशील शब्द वह है जो एयरपोर्ट के लिए प्रयुक्त होता है। वह शब्द है विमान पत्तन जो अनेक लोगों को अटपटा लगता है क्योंकि इसमें वायुमान के गिरने या पतन का सूचक भाव है। इसके लिए कई भाषा शक्तियों ने हवाई पतन या वायु सेवा स्थानक आदि शब्द सुझाया था।

भारत सरकार के राजभाषा अधिनियम के अंतर्गत आज भी अंतराल में स्थापित प्रावधानों के बावजूद बोधगम्यता के नाम पर हिंदी में उर्दू और अंग्रेजी शब्दों द्वारा

निर्लज्जता से इसे विकृत किया जा चुका है। स्पष्ट है हिंदी पर निरंतर पड़ने वाले आघातों ने सांस्कृतिक नि–रक्षता तो बढ़ाई ही है, देश को अपनी जड़ों से काटने का जो असंवैधानिक कुठाराघात किया है वह आज की युवा पीढ़ी की समझ से पूर्णतः बाहर है।

*****

तीर्थ स्नान

राकेश जैन
उत्तरी मुद्रण वर्ग

पंडित जी !
मै गंगा स्नान को
जा रहा हूं
ताकि अधिक से अधिक
पुण्य कमा सकूं
गंगा मैया के
चरणों में समा सकूं
शास्त्रों में क्या लिखा है
कृपया अध्ययन करके समझाइएं
स्नान करते समय मै अपना मुंह
किस दिशा में रखूं
यह बतलाइए
पंडित जी बोले–
शास्त्रों में क्या लिखा है
छोड़ बेटा
इन पुराने रीति रिवाजों को
तोड़ बेटा
मैने देखा है
घाट पर स्नान करते हुए भक्तों को
जैसे किसी आशंका से
डरे हुए हों
तू अपना मुंह
उधर रखना प्यारे
जिधर तेरे कपड़े धरे हों।

लोन

राकेश जैन
उत्तरी मुद्रण वर्ग

बेटा बोला बैंक से
लेलो पापा लोन
मै बोला–बेटा
ले तो लूं चुकाएगा कौन
दौलतमंद भाई अथवा
रिश्तेदारों की भीड़ नहीं
पैसों का कोई ट्री उगता हो
ऐसा भी कोई सीड नही
बोला बेटा–पापा
इसका सारा रिस्क कवर्ड है
यह तो माल है अपने बाप का
लेन लेने की नीड़ नहीं
लाखों लेकर बैठो घर पर
धेला एक नहीं भरना है
जिज्ञासा से मैने पूछा
फिर मुझको क्या करना है
आंख नचा कर बोला बेटा
बाकी तो खुद हो जाएगा
सिर्फ आपको मरना है।

**

त्रुटियां केवल उससे ही नहीं होंगी जो कोई काम करे ही नहीं।

लेनिन

'काजा' की रोमांचक यात्रा

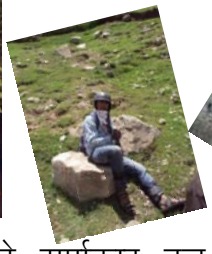

अनिल मेहता,
सहायक,
महासर्वेक्षक का कार्यालय

टेढ़े–मेढ़े, सर्पाकार, बल खाते पहाड़ी मार्गों पर बाइक्स द्वारा हम कुछ मित्र प्रकृति की अप्रतिम सुन्दरता के निकट दर्शन और उससे प्राप्त अनन्त अद्भुत आनन्द की अनुभूति को सदैव तत्पर रहते हैं। हम हिमाचल प्रदेश के लाहौल क्षेत्र होते हुए जम्मू–कश्मीर व लेह तक घूम चुके हैं, परन्तु विपरीत परिस्थितियों के कारण पिछले 3 वर्षों से स्पिति वैली घूमने की इच्छा को पूर्ण करने में असमर्थ रहे। इस वर्ष भी शायद यह इच्छा अपूर्ण ही रहती, परन्तु भाग्यवश महासर्वेक्षक कार्यालय में ही कार्यरत हमारी पहली लेह यात्रा के मेरे सहयात्री व मेरे मित्र श्री राजेन्द्र प्रसाद, मेरे साथ स्पिति वैली में **काजा** की यात्रा पर चलने को तैयार हो गये। हमने यात्रा का दिन मंगलवार दिनांक 18–06–2013 व रूट चकराता से त्यूनी होते हुए हिमाचल प्रदेश में प्रवेश कर किन्नौर के रेकान्गपियो से पूह–नाको–हुरलिंग–ताबो होते हुए काजा पहुंच मनाली की ओर से वापिस आना तय किया और इस यात्रा पर अपने–2 पुत्रों को भी साथ ले जाने का निश्चय कर यात्रा की तैयारियों में जुट गये।

यह जरूरी नहीं कि जो हम चाहते वैसा ही हो। शुक्रवार 14–06–2013 से शुरू हुई वर्षा रूकने का नाम नहीं ले रही थी और इंद्र देवता पिछले सारे रिर्काड्स ध्वस्त करने पर अडिग थे। हम अपनी यात्रा के सपने संजो रहे थे पर ईश्वर और प्रकृति अपना कहर बरसाने की तैयारी कर रहे थे। शुक्रवार, शनिवार और फिर रविवार का दिन भी वर्षा में ही बीत गया और हम इस आस में दिन गिनते रहे कि शायद आज वर्षा रूक जायेगी। ईश्वर ने हमारी सुन ली और सोमवार दिन में वर्षा का वेग कम हुआ और फिर थम गया। हम चारों खुश थे कि हमारी यात्रा से पहले ही वर्षा रूक गई, इस बात से पूर्णतः अन्जान की 16 और 17 जून को ईश्वर और प्रकृति ने केदारघाटी, बद्रीनाथ और हेमकुण्ड में कितना कहर ढाया था और कितनी विनाशकारी थी वह तेज वर्षा। खराब मौसम से केबल नेटवर्क न आने के कारण हमें इस प्रलय का कोई आभास भी नहीं था।

18–06–2013 प्रातः – 7:30 अपने–अपने रूकसैक बाइक्स पर बाँध, एक पर मैं व मेरा पुत्र – अर्चित व दूसरी पर श्री राजेन्द्र व उनका पुत्र–विनायक, चल दिए अपनी यात्रा पर। मन में यह संदेह लिए कि चार दिन तक हुई तेज वर्षा के कारण त्यूनी तक का मार्ग बन्द भी हो सकता है, हम हर्बटपुर, विकासनगर होते हुए हरिपुर पहुंचे जहां हमें ज्ञात हुआ कि त्यूनी की ओर जाने वाला मार्ग भूस्खलन के कारण बंद है। अतः कालसी, चकराता होते हुए त्यूनी जाने का निश्चय कर हम चकराता की ओर बढ़ चले। आकाश में छाये काले–2 बादल मार्ग अवरूद्व होने की आशंका को और बल दे रहे थे। कालसी से कुछ ही आगे हमारा सामना मार्ग की पहली बाधा से हो गया। भूस्खलन के कारण ट्रैफिक रूका हुआ था, परन्तु कुछ ही देर में जे.सी.बी. द्वारा मलवा हटा कर बंद मार्ग को खोल दिया गया।

यात्रा पुनः आरम्भ हो गई और चकराता (11:50 बजे) को पीछे छोड़ आशंकित मन से हम त्यूनी की ओर बढ़ते रहे। कुछ किमी चलने पर ही हमारी आशंका सत्य सिद्ध हुई। भूस्खलन से भारी मलबा व एक बड़ा सा चीड़ का पेड़ सड़क पर गिरने से ट्रेफिक रूका हुआ था। लोग मार्ग खुलने के लिए जे.सी.बी. की इंतजार में थे कि तभी एक युवक ने

भूस्खलन से सड़क पर आये मलवे पर कुछ पत्थर डाल कर जैसे–तैसे अपना स्कूटर पार उतार दिया और पीछे–2 उसके साथी ने अपनी बाइक भी पार उतार दी। उन दोनों को देख हमें भी जोश आ गया। हम सबने मिल कर मिट्टी पर पत्थर और चीड़ के पेड़ की टहनियां डालीं और किसी तरह मोटर साइकिल पार उतारने लायक रास्ता बना उस बाधा को पार कर गये। इस प्रयास में मिट्टी से लथपथ हुए अपने पैर व बाइक्स को आगे एक झरने पर साफ कर कुछ ही देर में कोटी–कनासर (2:45 बजे) पहुंचे व दोपहर का भोजन कर पुनः आगे बढ़ गये।

कुछ ही कि.मी. आगे एक नई बाधा हमारे सामने थी। रोटा खड्ड नामक स्थान पर पहाडी नाले का तेज पानी सड़क से होकर बह रहा था। हमने अपने–अपने पुत्रों को उतारा और पहले श्री राजेन्द्र ने अपनी बाइक पानी में उतार दी। एक ओर से मैंने व दूसरी ओर से एक स्थानीय युवक ने बाइक को पकड़ा और तेज गति से नीचे खड्ड में गिर रहे घुटनों तक ऊँचे पानी में किसी तरह बैलेंस बनाते वह बाधा पार की और इसी प्रकार मेरी बाइक भी पार ले आये। विनायक व अर्चित ने एक यूटिलिटी वैन के द्वारा पानी को पार किया। 'मार्ग में आने वाली अन्य बाधाओं को भी हम अवश्य पार कर लेंगे' मन में यह विश्वास लिए हम सांय लगभग 5:45 बजे त्यूनी पहुंच गये। रोहडू अभी 41 किमी दूर था, अतः लगातार ड्राइव करते आराकोट व हाटकोटी होते हुए सांय 7:30 पर **रोहडू** पहुंचे और बस स्टेंड के निकट ही एक होटल में कमरे में रात्रि–विश्राम हेतु रूक गये। टी.वी. पर न्यूज चैनल से हमें यह ज्ञात हुआ कि उत्तराखण्ड में दिनांक 16 व 17 जून की उस वर्षा से पहाडों में कुछ स्थानों में कई मकान, दुकान, होटल आदि को बहुत नुकसान पहुंचा है और कुछ भवन तो गंगा के पानी में बह भी गये हैं। परन्तु इस आपदा की गम्भीरता से हम अभी भी अन्जान थे। ईश्वर से यही प्रार्थना कर, कि सब कुशल मंगल रहे, रात्री भोजन के पश्चात हम बिस्तर में समा गये।

19–06–2013 प्रातः 7:30 – रूकसैक बाइक्स पर बाँध हमने पेट्रोल–पम्प से अपनी–2 बाइक्स के टेंक फुल करवाए और चल दिए रामपुर की ओर। टेढ़े–मेढ़े, सर्पाकार पहाड़ी मार्ग पर प्रकृति की अपूर्व सुन्दरता को अपने नयनों द्वारा मतिष्क की परमानेन्ट मैमोरी पर अपलोड़ करते 29 किमी दूर **सुंगरी** नामक सुन्दर स्थान पहुंचे और नाश्ता करने हेतु कुछ देर वहीं रूक गये। नाश्ते के दौरान रेस्टोरेन्ट के मालिक ने हमें बताया कि किन्नौर में बादल फटने से किन्नौर का मार्ग क्षतिग्रस्त हो गया है और मार्ग की सही जानकारी हमें रामपुर में टूरिस्ट ऑफिस से ही ज्ञात हो सकती है। नाश्ता कर आशा और निराशा के बीच झूलते हम आगे चल दिए। छोटे, ऊबड़–खाबड़ व घने पेड़ों से घिरे पहाड़ी मार्ग पर स्थित छोटे–2 गांवों को पीछे छोड़, धीमी गति से ड्राइव करते हुए हम दोपहर 2:00 बजे **रामपुर** (56 किमी) पहुंच गये। किन्नौर के द्वार 'रामपुर' में सुंगरी के मुकाबले बहुत तेज गर्मी के बावजूद भी बहुत चहल–पहल थी। टूरिस्ट ऑफिस से प्राप्त जानकारी से हमारी आशाओं पर तुषारापात हो गया। किन्नौर में बादल फटने से पाउडी, टापड़ी आदि स्थानों में मार्ग पूर्णतः क्षतिग्रस्त होने के कारण उस रूट से जाना असंभव था। समय की मांग के अनुसार हमने अपनी यात्रा के मार्ग में परिवर्तन कर जलौरी पास से मनाली होते हुए काजा जाने का निश्चय किया व रामपुर से 33 किमी दूर सैंज (3:15 बजे) पहुचं दोपहर का भोजन किया और चल दिये 50 किमी दूर जलौरी पास की ओर। क्षतिग्रस्त मार्ग व लगातार बढ़ती ऊँचाई के कारण श्री राजेन्द्र की बाइक गति नहीं पकड़ रही थी। धीरे–2

ऊपर बढ़ते आखिर सांय 6:10 पर हम पहुंच गये **जलौरी पास** (समुद्रतल से ऊँचाई 3135 मी.)। **जलौरी जोत** के नाम से भी पुकारे जाने वाले इस स्थान पर काली माता का एक मन्दिर स्थित है। चारों ओर बादल छाये हुए थे और ठंढ भी बढ़ गई थी, अतः एक–2 कप चाय का आनन्द ले हम आगे चल दिये। जलौरी जोत से उतराई शुरू हो गई थी परन्तु मार्ग पूर्णतः टूटे हुए मार्ग पर सावधानी से धीरे–2 ड्राइव करते हम ओट की ओर चल दिये। सांझ का अन्धेरा फैल रहा था, परन्तु शूजा से आगे का मार्ग ठीक था, अतः तेज गति से ड्राइव कर मार्ग पर स्थित लगभग 3 किमी लम्बी सुरंग को पार कर हम 8:15 बजे **ओट** पहुंच गये। दिनभर की थकानभरी ड्राइविंग और समय को ध्यान में रखते हुए हमने ओट में ही रूकने का निर्णय किया और एक होटल में कमरा बुक कर फ्रेश हो कुछ देर बाजार में घूमे और भोजन के पश्चात रात्रि–विश्राम हेतु निंद्रा की गोद में समा गये।

20–06–2013 प्रातः 8:00 – अपने–अपने रूकसैक बाइक्स पर बाँध ब्यास नदी के साथ–साथ बनी सड़क पर आगे बढ़ते हुए हम भुन्तर, कुल्लू को पार कर कटराईं नामक स्थान पर पहुंचे और नाश्ते के पश्चात आगे चल दिये। मार्ग में हमें ज्ञात हुआ कि शायद मनाली की ओर से भी काजा का रास्ता अभी बंद ही है। अतः आज मनाली रूक वहीं घूमने और मार्ग खुलने का इंतजार करने का निर्णय कर लगभग 11:50 पर हम **मनाली**

पहुंच गये। परन्तु भाग्य हमारे साथ था, टूरिस्ट ऑफिसर की सलाह पर मार्ग की सही जानकारी के लिए हम बस स्टेण्ड पहुंचे और वहां से हमें ज्ञात हुआ कि कुछ छोटी गाडियां आज काजा से मनाली के लिए चली हैं और शाम तक उनके मनाली पहुंचने की सम्भावना है। यह जानकारी हमारे लिए आशा का एक नया सन्देश ले कर आयी। हमने मनाली रूकने का विचार त्याग दिया आगे जाने का निर्णय किया और अपनी बाइक्स के टैंक पुनः भरवाये और धीरे–2 ड्राइव करते हम 3:15 बजे अधिकतर बर्फ से ढ़के रहने वाले **रोहतांग पास** (51 कि.मी.) पहुंच गये। कुछ देर प्रकृति की अनुपम सुन्दरता का आनन्द ले लेह मार्ग पर स्थित ग्राम्फू (13 कि.मी.) की ओर चल दिए जहां से लेह और स्पिति के मार्ग अलग–2 हो जाते हैं। एक ओर से बर्फ से ढ़के मार्ग पर नीचे उतरते हुए बाइक के व्यू मिरर में एक सरदार युवक पल्सर बाइक पर हमारे पीछे आते दिखे। साथ–2 ड्राइव करते हुए उनसे कुछ बातचीत हुई तो उन्होंने बताया कि उनका नाम कुंवर सिंह है और वे अमृतसर से आए हैं। हमने भी उन्हें अपने विषय में बताया कि हम देहरादून से हैं और काजा जा रहे हैं। हमें यह जान कर अत्यन्त खुशी हुई कि वे भी काजा जा रहे हैं। श्री कुंवर सिंह की पत्नी काजा स्थित नवोदय विद्यालय में शिक्षिका के पद पर कार्यरत हैं। अभी अब तक हम केवल चार जन थे परन्तु श्री कुंवर के साथ आने से हम चार नहीं बल्कि पांच प्यारे हो गए थे। 3:45 बजे हम **ग्राम्फू** पहुंच गये और वहीं स्थित एक मात्र टेंट रूपी रेस्टोरेंट में दाल–चावल और चाय का आनन्द ले आगे के सफर पर विचार करने लगे। रेस्टोरेंट की संचालक महिला ने बताया कि आगे स्थित एक ग्लेशियर के कारण मार्ग बन्द हैं और उससे आगे स्थित दो नालों में काफी तेज पानी है, अतः आगे जाना काफी मुश्किल होगा। आपस में विचार विमर्श के बाद हमने तय किया कि हम किसी भी बाधा से हार नहीं मानेंगे, आगे जायेंगे और आज अपने अगले पडाव छतडू (17 किमी) तक पहुंचने का पूरा प्रयास करेंगे। इसी जोश के साथ हम अभी 4–5 किमी आगे बड़े थे कि पहली चुनौति सामने थी। मार्ग लगभग 20–25 फुट ऊँचे ग्लेशियर के कारण बन्द था। इसी बाधा के कारण काजा से कोई वाहन अब तक मनाली नहीं आ पाया था। बी.आर.ओ. की टीम जे. बी.सी. मशीन द्वारा ग्लेशियर को काट कर मार्ग साफ करने में जुटी थी। काजा से मनाली आने वाले 10–12 वाहन उस ओर, और इधर बाइक्स पर हम पांच व सामान से लदे दो अन्य स्थानीय वाहन, मार्ग खुलने के इंतजार में थे। लगभग डेढ घण्टे की मेहनत के बाद बी.आर.ओ. की टीम ने ग्लेशियर के बीच से छोटे वाहन जाने लायक रास्ता बना दिया। पहले ऊपर से आने वाले वाहनों ने एक–2 करके नीचे उतरना शुरू किया, परन्तु यह इतना आसान भी न था, क्योंकि ग्लेशियर पिघलने के कारण मार्ग पर बहते बर्फ के अति ठण्डे पानी में काफी बड़े–2 पत्थर भी थे। धीरे–2 सभी वाहन इस ओर आ गये थे और अब हमारी बारी थी। अर्चित व विनायक ने बाइक्स का बैलेंस बनाने हेतु हमारी सहायतार्थ बाइक्स को पीछे से पकड़ा

हुआ था और पत्थरों व ठण्डे बर्फीले पानी में पैर टिकाते एक–एक कर हम तीनों बाइक्स ने वह बाधा पार कर ली। सांझ का अन्धेरा आसमान में दस्तक देने लगा था। धीरे–2 हम आगे बढ़ रहे थे कि आ गई अगली बाधा। आगे छोटे–बडे पत्थरों से भरा एक और नाला था जिसका बर्फीला ठण्डा पानी मार्ग पर बहता हुआ तेजी से नीचे खाई में गिर रहा था। पहले की तरह ही तीनों बाइक्स नाले के पार उतार हम आगे बढ़ गये। चुनौती अभी समाप्त नहीं हुई थीं। कुछ ही आगे एक और बड़े झरने का मार्ग पर बहता पानी हमारे इंतजार में था। उसे और आगे ऐसे ही एक अन्य छोटे झरने को भी पूर्व की तरह पार कर हम सांय 7:30 पर आज के पड़ाव **छतडू** पहुंच गये । पूर्णतः निर्जन स्थान छतडू पर केवल तीन टेंट लगे हुए थे। एक टेंट के आगे हमने बाइक्स रोकी और टेंट के संचालक से रात्री विश्राम हेतु पूछा। वह महाशय हमें सामने पा कर बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि इस सीजन में काजा जाने वाले हम पहले टूरिस्ट थे। ग्लेशियर के कारण मार्ग बंद होने के कारण अब तक कोई टूरिस्ट वहां नहीं आ पाया था। टेंट के पीछे ही एक पक्का कमरा बना था जो कि यात्रियों के रात्री विश्राम हेतु वे किराये पर देते थे। अपना सामान कमरे में रख संचालक से उनकी व उस स्थान की जानकारी लेते हमने चाय का आनन्द लिया।

आकाश में चांद अपनी छटा बिखेर रहा था और समीप ही बह रही चंद्रा नदी के

कल–कल करते जल की तेज आवाज दोनों ओर ऊँचे–2 पहाड़ो से घिरे उस निर्जन स्थान की निस्तब्धता को चीर रही थी। टेंट के बाहर बहुत ठण्डा परन्तु अन्दर अपेक्षाकृत कुछ गर्म था। टेंट संचालक व उसके सहायक के अतिरिक्त वहां केवल हम पांच लोग थे। संचालक ने हमें बताया कि उन पहाड़ों पर कभी–2 भूरे भालू दिख जाते हैं, जो कि वहां डेरा डाले चरवाहों की भेड़–बकरियां उठा कर ले जाते हैं। कुछ ही देर में संचालक ने भोजन परोस दिया। टेंट में बैठ कैंडल–नाइट डिनर करने में जो आनन्द हम महसूस कर रहे थे, वह शायद बड़े से बड़े रेस्टोरेंट में भी मिलना संभव नहीं। भोजन के पश्चात हम अपने–2 बिस्तरों में समा गये।

21–06–2013 प्रातः 8:00 – अपने–अपने रूकसैक बाइक्स पर बाँध, सांय तक काजा पहुंचने का निश्चय कर हम 19 किमी दूर अपने पहले लक्ष्य बातल की ओर चल दिये। मार्ग से कुछ ही दूर चंद्रा नदी का जल भी अपनी मित्र भागा नदी के जल से मिलने को आतुर एक निश्चित गति से ग्राम्फू की ओर बह रहा था। और हम भी एक निश्चित गति बनाये रखने की कोशिश करते उस टूटे– फूटे, ऊबड़–खाबड़, ऊँचे– नीचे मार्ग पर स्थित छोटे–बड़े नालों व ग्लेशियरस् को पार कर उसकी विपरीत दिशा में बढ़ते, लगभग 11:10 बजे हम **बातल** पहुंच गये। यहां भी छतडू की तरह केवल 2–3 टेंट रूपी रेस्टोरेंट ही थे। नदी के निकट ही स्थित एक टेंट में हमने फ्राइड राइस और चाय का आनन्द लिया और कुछ देर के बाद चल दिये कुंजुम पास की ओर। बातल स्थित पुल को पार कर अब हम

चंद्रा नदी के दूसरी ओर पहुंच गये। कुछ आगे बढ़ते ही चंद्रा नदी का साथ छूट जाता है, नदी के साथ–2 एक अन्य छोटा सा मार्ग है, जो चंद्रा नदी के उद्गम स्थल चंद्रताल तक जाता है।

मार्ग अब ऊँचा, ऊँचा और अधिक ऊँचा होता जा रहा था। अत्यधिक ऊँचाई और आक्सीजन की कमी से श्री राजेन्द्र की बाइक के गति न पकड़ पाने के कारण कभी–कभी निश्चित गति से चलने में हमें कठिनाई हो रही थी। अतः धीरे–2 ड्राइव करते और चारों ओर फैली अपूर्व सुंदरता को मन–मस्तिष्क व कैमरों में संजोते हुए हम 1:15 बजे **कुंजुम पास** (समुद्रतल से ऊँचाई 4551 मी.) पहुंच गये। यह स्थान कुंजुम जोत के नाम से भी जाना जाता है। जलौरी पास के समान यहां भी एक मन्दिर स्थित है, परन्तु वहां की अपेक्षा यह अधिक ऊँचा, निर्जन और मैदान जैसा स्थान है। मन्दिर मुख्य मार्ग से कुछ हट कर बना हुआ है और किसी मान्यता अनुसार अथवा शायद श्रद्धा के कारण यात्री अपने वाहन से ही मन्दिर की परिक्रमा करते हैं और मंदिर में शीश नवाने के बाद ही आगे की यात्रा प्रारम्भ करते हैं। इसी आशय से अनुरोध स्वरूप एक बोर्ड पर भी कुंजुम माता की परिक्रमा करने हेतु यह अंकित किया गया है। कुंजुम जोत के विषय में यह भी मान्यता है कि मंदिर में रखे एक पत्थर पर सच्चे हृदय से एक रूपये का सिक्का लगाने से सिक्का पत्थर पर ही चिपक जाता है अन्यथा नीचे गिर जाता है। परिक्रमा के बाद हमने मन्दिर में दर्शन किये व कुछ देर वहां के सुरम्य वातावरण का आनन्द लेते उन सुन्दर दृश्यों को अपने कैमरे में कैद कर हम अपने अगले लक्ष्य लोसर की ओर चल दिये। कुंजुम जोत से आगे भी मार्ग पूर्व की तरह ही क्षतिग्रस्त, परन्तु ढलान वाला है। सावधानी से नीचे की ओर बढ़ते व कभी–2 कुछ देर रूक मार्ग की सुन्दरता को अपने नयनों में समेटते हम 3:00 बजे स्पीति घाटी के द्वार **लोसर** (18 किमी) पहुंच गये। एक रेस्टोरेंट में दोपहर के भोजन व कुछ देर के विश्राम के बाद हम पुनः आगे चल दिये। हमारा आज का अन्तिम लक्ष्य काजा अभी भी 60 किमी दूर था। मार्ग कहीं ऊँचा व कभी ढलान वाला परन्तु पहले की अपेक्षा कुछ ठीक था। झरनों–नालों, घाटियों को पार करते व राह में आने वाले

छोटे–2 गांव हन्से, रंगरीक आदि को पीछे छोड़ स्पीती नदी पर बने पुल को पार कर हम सांय 6:10 पर **काजा** पहुंच गये।

हमारे नये मित्र श्री कुंवर सिंह का घर मुख्य सड़क के निकट नवोदय विद्यालय के सामने ही था। हम श्री कुंवर सिंह से विदा ले, जल्दी से होटल पहुंच कर, फ्रेश हो अपनी थकना उतारना चाहते थे, परन्तु वे पहले हमें अपने घर ले जाने व नाश्ते के पश्चात ही छोडने की जिद पर अड़ गए। बहुत कोशिश के बाद भी हम उनके आग्रह को टालने में असमर्थ रहे। अतः उनके निवास पर गर्म–2 नाश्ते का आनन्द लेने के बाद हम बस स्टेण्ड के निकट स्थित होटल पहुंचे और कुछ देर विश्राम के बाद बाजार घूमने चल दिये।

काजा एक छोटे से पहाडी नाले के दोनों ओर बसा एक सुन्दर स्थान है। नाले के दोनों ओर के निवासी अपने–2 क्षेत्र को आर काजा व दूसरी ओर को पार काजा पुकारते हैं। बाजार अधिकतर पहाड़ी टूरिस्ट स्थानों से कुछ अलग व छोटा है। सीजन के दौरान यद्यपि बाजार भारतीय व विदेशी टूरिस्ट से भरा रहता है, परन्तु काजा आने का मार्ग दोनों ओर से बन्द होने के कारण बाजार में घूमने वाले केवल हम चार टूरिस्ट ही थे। अधिकतर दुकानों में स्थानीय लोग रोजमर्रा की वस्तुओं की खरीदारी में व्यस्त थे। टूरिस्टस् का आर्कषण कुछ अन्य दुकानें भी हैं, जहां से आप देशी–विदेशी सामान के अतिरिक्त बौद्ध धर्म व संस्कृति की छाप युक्त स्थानीय ट्रेडिशनल वस्त्र, क्राकरी, मूर्तियां आदि की शॉपिंग कर सकते हैं। कुछ देर बाजार घूम रात्री भोजन के पश्चात हम होटल पहुंच गये व दिनभर के अनुभवों व अगले दिन के प्रोग्राम की चर्चा करते न जाने कब नींद की आगोश में समा गये।

22–06–2013 प्रातः 8:00 – यदि आप काजा घूमना चाहते हैं तो यहां आने का सही समय मई–जून से सितम्बर तक है। अक्टूबर से मार्च तक कई–2 फुट बर्फ गिरने के कारण काजा में अत्याधिक ठंड होती है, अतः यहाँ रहना बहुत कठिन होता है। इसी लिए यहाँ के अधिकतर निवासी सितम्बर–अक्टूबर में काजा से कुल्लू–मनाली, मण्डी आदि अन्य स्थानों पर चले जाते हैं।

आज हमारा प्रोग्राम काजा स्थित विभिन्न प्रसिद्ध स्थानों पर भ्रमण का था और सबसे पहले हम विश्व के '**सबसे ऊँचे वाहन योग्य सड़क युक्त गांव**' (**World's Highest Inhabitated Village with Motorable Road**) '**कीब्बर**' जाना चाहते थे। परन्तु होटल संचालक श्री हैली ने हमें बताया कि अब 'विश्व के सबसे ऊँचे वाहन योग्य सड़क युक्त गांव' के निवासी होने का गौरव कीब्बरवासियों को नहीं अपितु '**कौमिक**' नामक गांव के निवासियों को प्राप्त है, क्योंकि अब कीब्बर से अधिक ऊँचाई पर स्थित कौमिक गांव तक भी वाहन जाने योग्य मार्ग का निर्माण हो चुका है। हमने पूर्व कार्यक्रमानुसार पहले कीब्बर और बाद में कौमिक भ्रमण का भी निश्चय किया और नाश्ते के बाद काजा के एकमात्र

पेट्रोल–पम्प पर अपनी–2 बाइक्स के टैंक फुल करवा लगभग 11:00 बजे चल दिये 19 किमी दूर कीब्बर की ओर।

काजा से बाहर आते ही मार्ग दो दिशाओं में बंट जाता है – एक सीधे किब्बर की ओर व दूसरा बांयी ओर का मार्ग स्पीती नदी पर स्थित पुल को पार कर रंगरीक की ओर। प्रारम्भ में तो कीब्बर की ओर जाने वाला मार्ग कुछ ठीक है, परन्तु कुछ आगे बढ़ते ही अधिकतर टूटी हुई सड़क ऊँची व और अधिक ऊँची होती जाती है। कीब्बर से 5 किमी पूर्व एक रास्ता कीह मॉनेस्ट्री की ओर मुड़ जाता है। पहले कीब्बर व बाद में कीह मॉनेस्ट्री घूमने का विचार कर धीरे–2 ड्राइव करते हम आगे बढ़ते रहे और लगभग 12:30 पर समुद्रतल से 4205 मीटर की ऊँचाई पर स्थित एक छोटे परन्तु व्यवस्थित रूप से बसे गांव **कीब्बर** पहुचं गए। गांव में प्रवेशद्वार के निकट ही एक सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल स्थित है। कुछ देर गांव के शांत व सुन्दर वातावरण में व्यतीत कर हम वापिस नीचे की ओर चल दिए और लगभग 20 मिनट में **कीह मॉनेस्ट्री** पहुंच गए।

कीह मॉनेस्ट्री एक पहाड़ी पर बना सुन्दर सा बौद्ध गोम्पा है। गोम्पा मे पूजा व अन्य मुख्य कक्षों में महात्मा बुद्ध एवं अन्य बौद्ध धर्म गुरूओं की सुन्दर मूतियाँ व कृतियां लगी हुई हैं। गोम्पा के मुख्य पूजा कक्ष का निर्माण अमेरिकी निवासी श्रीमती एवं श्री थामस ज. रिट्जकर के संरक्षण में हुआ था और इसका उद्घाटन 3 अगस्त, 2000 को तिब्बत के चौदहवें धर्म गुरू पूज्यपाद दलाई लामा द्वारा किया गया था। मन्दिर व मुख्य पूजा कक्ष के दर्शन मुख्य लामा पुजारी की अनुमति व उनके साथ ही किये जा सकते हैं। पूजा कक्षों में दर्शन के पश्चात पुजारी जी हमें रसोईघरनुमा एक अन्य कक्ष में ले गये जहां एक अन्य लामा ने हमें प्रसादस्वरूप हर्बल चाय पीने को दी। प्रसाद ग्रहण करने के पश्चात हम वापिस नीचे काजा की ओर चल दिये।

अब हमारा अगला लक्ष्य था 31 किमी दूर कौमिक गांव जो कि वर्तमान में '**विश्व का सबसे ऊँचे वाहन योग्य सड़क युक्त गांव**' (**World's Highest Inhabitated Village with Motorable Road**) है।

गांव तक जाने के लिए सड़क यद्यपि छोटी, काफी चढ़ाई वाली, ऊबड़–खाबड़ परन्तु वाहन चलाने लायक है। अतः धीरे–2 ड्राइव करते हम आगे बढ़ते रहे और 18 किमी दूर **लांगजा** नामक गांव पहुंच गये। लांगजा समुद्रतल से 4200 मीटर की ऊँचाई पर स्थित एक सुन्दर गांव है, जहां की कुल जनसंख्या 142 प्राणी है। गांव के अधिकतर निवासी खेतों में कार्य करने में व्यस्त थे। कुछ देर वहां के मनोरम दृश्यों का आनन्द ले हम पुनः आगे चल दिये और 3:45 पर **कौमिक** पहुंच गए। समुद्रतल से 4513 मीटर की ऊँचाई पर बसे इस गांव से कुछ ऊपर एक बौद्ध गोम्पा बना हुआ है। कौमिक गांव देखने की चाह में यद्यपि हम पहाड़ की चोटी पर पहुंच चुके हैं, परन्तु इसके बावजूद भी हम स्वयं को एक बड़े से मैदान में ही पाते हैं, जिसके एक ओर वालीबॉल कोर्ट भी बना है। कोर्ट के निकट ही गोम्पा स्थित है। अभिनेता जॉन अब्राहम द्वारा अभिनीत हिन्दी फीचर फिल्म '**पाप**' की शूटिंग इसी मॉनेस्ट्री में हुई थी। हमारे अतिरिक्त दिल्ली का एक परिवार – पति–पत्नि व उनके दो पुत्र भी कार द्वारा कौमिक घूमने आये हुए थे। कुछ देर बाहर घूमने और वहां के शान्त व सुन्दर दृश्यों को अपने कैमरों में सहेजने के बाद हम मॉनेस्ट्री के दर्शनार्थ अन्दर पहुंच गए। मॉनेस्ट्री के मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही सामने एक बड़ा सा आंगन है जिसके चारों ओर दो मंजिले कक्ष बनाये गये हैं और सामने बनी सीड़ियां चढ़कर आप ऊपर बने पूजा कक्ष में प्रवेश कर सकते हैं। अन्य सभी गोम्पाओं की तरह ही पूजा कक्ष में महात्मा बुद्ध तथा अन्य बौद्ध धर्म गुरूओं की सुन्दर मूतियाँ लगी हैं व दीवारों पर सुन्दर चटक रंगों से सजी कृतियां बनी हुई हैं। कीह मॉनेस्ट्री की तरह ही मन्दिर में दर्शनों के समय एक पुजारी लामा हमारे साथ मौजूद रहे। दर्शनों के पश्चात वे भी हमें अपने साथ अपने कक्ष में ले गये और प्रसाद में चाय प्रदान की। उन्होंने हमें बताया कि भोजन के समय पर वहां आने वाले टूरिस्ट्स को वे भोजन भी अवश्य कराते हैं। चाय का आनन्द ले 4:30 पर हमने उनसे विदा ली और 6:00 बजे काजा पहुंच गए।

कुछ देर होटल में विश्राम के बाद हम बाजार घूमने चल दिए। बाजार में शापिंग के दौरान एक दुकान की संचालिका, ने यह जानने के बाद कि हम देहरादून से बाइक्स पर काजा घूमने आए हैं, हमें बताया कि उत्तराखण्ड के मुख्य सचिव श्री सुभाष कुमार भी

काजा के हैं और उनके रिश्तेदार हैं। उन्होंने हमें यह भी बताया कि वे अपने परिवार सहित हर वर्ष देहरादून आती हैं और माण्डूवाला में उनकी जमीन है और शीघ्र ही वहां वे अपना घर भी बनाने वाले हैं। हमारे नये मित्र श्री कुंवर सिंह भी अपनी पत्नी व पुत्र के साथ हमें बाजार में घूमते हुए मिले। कुछ देर बाजार घूमने के बाद रात्री भोजन किया और वापिस होटल पहुंच गए।

काजा का प्रवास समाप्त कर अगली सुबह हमने वापिस मनाली के लिए निकलना था। जैसे–2 दिन बीतता है सूरज की गर्मी से पिघलते ग्लेशियरों के कारण नालों व झरनों में पानी का स्तर व बहाव भी बढ़ जाता है। काजा से मनाली तक मार्ग में मौजूद बहुत से ऐसे नाले व झरनों को आसानी से पार करने के लिए सुबह सूर्योदय से पूर्व ही अपनी यात्रा प्रारम्भ करना आवश्यक था। अतः हमने प्रातः 4–5 बजे तक तैयार हो काजा छोड़ने का निश्चय किया और अपने मित्र कुंवर सिंह के घर जाकर उन्हें अपने वापसी के कार्यक्रम से अवगत करा, और पुनः मिलने का वादा कर उनसे विदा ली व होटल पहुंच कर सामान पैक किया और रात्री विश्राम हेतु अपने–2 बिस्तर में समा गये।

22–06–2013 प्रातः 5:10 – शाम तक मनाली पहुंचने का निश्चय कर हमने अपने–अपने रूकसैक बाइक्स पर बाँधे और चल दिये 60 किमी दूर अपने पहले लक्ष्य लोसर की ओर। सूर्योदय न होने के कारण अभी अंधेरा ही था, अतः उस ऊँचे–नीचे मार्ग पर एक निश्चित गति से धीरे–धीरे ड्राइव करते हम आगे बढ़ रहे थे। तेज बर्फीली हवा से ठंड के कारण हमारे हाथ–पैर सुन्न हो रहे थे, परन्तु लगातार ड्राइव करते 8:00 बजे हम **लोसर** पहुंच गए और एक रेस्टोरेंट में नाश्ता करने के पश्चात 9:30 पर स्पीती वैली के द्वार लौसर को पीछे छोड़ हम चल दिए, अपने अगले लक्ष्य कुंजुम जोत की ओर। अधिकतर टूटे–फूटे और चढ़ाई वाले मार्ग पर सावधानी से ड्राइव करते हम धीरे–2 लगातार ऊपर की ओर बढ़ते रहे और 11:00 बजे **कुंजुम जोत** पहुंच गए। पूर्व की तरह मन्दिर की परिक्रमा कर दर्शनों के बाद कुछ देर वहां के सुरम्य वातावरण का आनन्द लेते आसपास के सुन्दर दृश्यों को को पुनः आँखों के रास्ते अपने हृदय व मस्तिष्क में समेट हम अपने अगले लक्ष्य बातल की ओर चल दिए। कुंजुम जोत से अधिकतर ढ़लान वाले मार्ग पर धीरे–2 नीचे उतरते हुए हम 11:30 पर

बातल पहुंचे व कुछ देर वहां रूक कर आगे बढ़ गए। बातल से छतडू तक मार्ग चन्द्रा नदी के किनारे से कुछ दूर व अपेक्षाकृत समतल परन्तु टूटा–फूटा हुआ ही है। छतडू तक मार्ग में छोटे–बड़े झरनों व ग्लेशियर में पानी अभी कम ही था, अतः लगातार ड्राइव करते हम 1:15 पर **छतडू** पहुंच गए और 5–10 मिनट के विश्राम के बाद इस रूट की सबसे कठिन चुनौतियों का सामना करने और अपने अगले लक्ष्य ग्राम्फू की ओर चल दिए। अभी हमें चार मुख्य बाधाएं पार करनी थी। ऊपर पहाड़ी पर मौजूद ग्लेशियर के पिघलने से तेज गति से नीचे बहते बर्फ के अति ठण्डे पानी वाला एक छोटा और दो बड़े नाले और चौथा छोटे–बडे पत्थरों से भरा 20–25 फुट ऊँचा ग्लेशियर वाला वह नाला जिसके कारण यह मार्ग तीन दिन पूर्व तक पूर्णतः बन्द था।

धीरे–2 आगे बढ़ते सावधनी से पहला नाला पार कर हम कुछ ही देर में दूसरे नाले पर पहुंच गए। अपने पुत्र को नीचे उतार कर पहले मैंने अपनी बाइक नाले में उतारी। श्री राजेन्द्र ने मेरी सहायतार्थ एक ओर से मेरी बाइक पकड़ी और पत्थरों व बर्फीले ठण्डे पानी में किसी तरह बैलेंस बनाते हमने नाला पार कर लिया। इसी प्रकार श्री राजेन्द्र की बाइक भी हमने नाले के पार पहुंचा दी। विनायक और अर्चित ने पैदल ही नाला पार किया। झरना पार करने के प्रयास में हम सभी की पैन्ट घुटनों तक भीग गई थीं और पैर भी सुन्न हो गए थे। परन्तु अभी दो बाधाए और थी पार करने को, अतः आगे चल दिए व कुछ ही क्षणों में अगले झरने के निकट पहुंच गए। झरने के ठीक बीच में चण्डीगढ़ की एक कार पत्थरों के बीच फंसी हुई थी। चालक की भरपूर कोशिशों के बाद भी कार के पहिए एक ही स्थान पर घूम रहे थे और कार के बाहर पानी में असहाय खड़े तीन यात्री, उसे प्रयास करते देख रहे थे। हम दोनों मित्रो ने उनकी सहायता का निश्चय किया और अपनी बाइक्स किनारे लगा पानी में उतर गए। हम पांचों ने मिलकर कार को पीछे से धक्का लगाया और चालक ने कार की गति तेज की और आखिर हम सब के प्रयासों से किसी तरह कार झरने को पार कर गई। हमने भी अपनी–2 बाइक्स पानी में उतारी व झरने को पार कर चल दिए इस मार्ग की अन्तिम बाधा की ओर। कुछ ही देर बाद हमारे सामने था ग्लेशियर वाला नाला। छोटे–बड़े पत्थरों के बीच तेज गति से बहते अति ठण्डे बर्फीले पानी में अपनी बाइक्स उतार जैसे–तैसे हमने उस नाले को भी पार कर लिया। तीन दिन पूर्व की अपेक्षा नाले को पार करने में आज हमें कम कठिनाई का सामना करना पड़ा। इस रूट की सबसे कठिन बाधाओं को हम सफलतापूर्वक पार कर चुके थे और आगे की यात्रा अब कुछ आसान थी। एक निश्चित गति से ड्राइव करते सांय 3:20 पर हम **ग्राम्फू** पहुंच गए और बिना रूके रोहतांग दर्रे की ओर चल दिए। आसपास के ग्लेशियरों से बहते पानी के कारण टूटे–फूटे मार्ग पर ड्राइव करते हम 4:15 पर **रोहतांग पास** पहुंच गये।

समुद्रतल से 3978 मीटर की ऊंचाई पर स्थित रोहतांग दर्रे का मौसम वैसे तो पल–पल करवट बदलता है, परन्तु सांय 3 बजे के बाद यहां अक्सर बादल और धुंध छा जाती है। अतः सभी टूरिस्ट्स वापिस मनाली लौट जाते हैं और इसी के साथ वहां टेंट्स में बने रेस्टोरेंट भी बन्द होने लगते हैं। कुछ देर बादलों से भरे उस सुन्दर रमणीक स्थान को अपने कैमरो में भर हमने हल्का नाश्ता किया और मनाली की ओर चल दिए। रोहतांग से मनाली जाते हुए मार्ग यद्यपि ढलान वाला है, परन्तु कई जगह टूटा हुआ है। चारों ओर

छाये बादलों के कारण विजिब्लिटी बहुत कम थी, अतः हम सावधानी से धीरे–2 मनाली की ओर बढ़ते रहे और मड़ी, स्नो प्वाइंट, कोठी, पालछन आदि को पीछे छोड़ 6:15 पर **मनाली** पहुंचे और माल रोड़ पर स्थित होटल में अपना सामान रखने के बाद कुछ देर विश्राम किया और फ्रेश हो बाजार घूमने चल दिए। मनाली का मुख्य बाजार माल रोड़ के निकट ही है। भारत का एक अति सुन्दर एव प्रसिद्ध पर्यटन स्थान होने के कारण पर्यटन सीजन में यहां देसी–विदेशी टूरिस्ट्स की भारी भीड़ होती है और बाज़ार देर रात तक खुले रहते हैं। आज भी बाज़ार टूरिस्ट्स से गुलजार था। भोजन के बाद हम भी रात्री 12:30 तक बाज़ार घूमते रहे और फिर होटल पहुंच अपने–2 बिस्तरों में नींद की आगोश में समा गये।

23 जून 2013 प्रातः – 8:00 बजे – आज दोपहर तक मनाली घूमने के बाद हमने वापिस देहरादून की यात्रा प्रारम्भ करने का प्रोग्राम बनाया और हिडिम्बा मन्दिर घूमने चल दिए। पाण्डव भाईयों में सबसे बलवान योद्धा भीम की पत्नी हिडिम्बा, को यहां देवी मान उनकी पूजा की जाती है। देवदार के बहुत ऊँचे–2 पेड़ों से घिरे सुन्दर बाग '**धुंगिरी वन**' में लकड़ी से बने पगोड़ानुमा इस मन्दिर का निर्माण सन 1553 में हुआ था। कुछ देर वहां के सुन्दर वातावरण में बिता और फिर बाजार घूमने के बाद लगभग 2:00 बजे मनाली से विदा ले हम कटराईं पहुंचे और दोपहर के भोजन के पश्चात पुनः आगे के सफर पर चल दिए। तेज गति से ड्राइव करते हम कुल्लू, भुन्तर, ओट, पण्डोह, मण्डी, सुन्दरनगर, बिलासपुर, नौनी को पीछे छोड़ते ब्रह्मपुखर पहुंच गये। सांझ का अन्धेरा घिरने लगा था, जिसके कारण हमारी स्पीड भी कुछ मन्द हो गई थी, परन्तु हमने अधिक से अधिक मार्ग आज ही तय करने का निश्चय किया और लगातार आगे बढ़ते रहे। रात्री के 9:00 बजे हम कचड़ी पुल नामक एक छोटे से स्थान पर पहुंचे और वहीं रूकने का निर्णय कर वहां स्थित एकमात्र होटल में रात्री भोजन किया और अगले दिन के सफर की चर्चा करते पहुंच गये निंद्रा की गोद में।

24 जून 2013: प्रातः 6:00 बजे – आज हमारी यात्रा का अन्तिम दिन था और हमें लगभग 258 किमी का मार्ग तय करना था, अतः अपने–2 रूकसैक्स बाइक्स पर बांधे और देहरादून की ओर चल दिये। लगातार ड्राइव करते शालाघाट, अर्की, कुनिहार, सुबाथू, धर्मपुर, कुमारहट्टी आदि स्थानों को पीछे छोड़ हम 9:00 बजे नैनाटिक्कर पहुंचे और नाश्ते बाद पुनः आगे चल दिए और सराँह, बनेथी, नाहन, पाँवटा सहिब होते हुए दोपहर 2.30 पर **देहरादून** पहुंच गये । मार्ग में लिखे एक कैप्शन **"Mountains are Pleasure, if you drive with Leisure"** को ध्यान में रख अपनी इस रोमांचक यात्रा में हमने लगभग 1600 किमी का सफर तय किया और भीड़ भरे रास्तों, भूस्खलन से बन्द मार्ग, हिमाचल के छोटे व सुन्दर कस्बों से गुजरते, कठिन चड़ाई वाले जलौरी जोत नामक दर्रे को पार कर मनाली तक राष्ट्रीय राजमार्ग पर और मनाली से आगे बर्फ से ढके बलखाते व कहीं–2 दरकते और टूटे–फूटे पहाड़ी मार्ग, ठण्डे जल से भरे झरनों–नालों व गलेशियर से पटे कठिन मार्ग और कहीं–2 सूखे निर्जन पठारों में कभी तेज कभी धीमी गति से अपनी बाइक्स दौड़ाई। इन अपूर्व सुन्दर परन्तु कठिन राहों पर बाइक्स ड्राइविंग में प्राप्त आनन्द का वर्णन शब्दों में करने में, मैं असमर्थ हूँ। कभी चांदी व कभी सूर्य के तेज से स्वर्ण का आभास देती बर्फ से ढ़की वह चोटियों तथा अत्यन्त दुलर्भ वे सुन्दर दृश्य, जिन्हें हम अति निकटता

से देखते हैं, केवल कैमरों ही नहीं अपितु ईश्वर प्रदत्त हमारे मन–मस्तिष्क की मैमोरी में भी अपनी अमिट छाप छोड़ देते हैं। सृष्टि रचयिता की कृपा से दिखे वे अद्भुद दृश्य निश्चित ही भविष्य में भी हमें ऐसे सुन्दर प्राकृतिक स्थानों को पुनः देखने के लिए मार्ग की सभी चुनौतियों पर विजयी होने की प्रेरणा देते रहेंगे।

* * * * *

वृद्धवस्था

(संकलित)

श्रीमती शुभा वी नायर
कार्यालय अधीक्षक,
आन्ध्र प्रदेश, भू स्था आं केन्द्र

सुबह होने पर बूढ़ा आदमी
धीरे–धीरे
पीड़ा से भरा
किसी तरह खड़ा
हो पाता है, छड़ी पर
जोर से मुट्ठी बांधे
जबकि आंसू और
मुख के कोने
से निकली लार
एकाकार हो जाते हैं
उसके जले और
फटे, चिथड़े
मुश्किल से छिपा पाते हैं
उसके
तार–तार हुई लंगोटी को।
टेढ़े पैरों को
उनकी अधिकतम
पक्षाघात गति देने के लिए
वह दूसरे दिन की
लम्बी सड़क
पर निकल पड़ता है
कांपते हुए काटती हवा के
सम्बंध में अद्ध–ज्ञात ।

भोर

श्रीमती शुभा वी. नायर
कार्यालय अधीक्षक

ठेरका–सा चांद लटका हुआ
आसमान के गले में
बुझे–बुझे से तारक
कर रहे विलाप, पलकों के पत्तों से
टपक रही ओस
भीग रहा छोर–अछोर
चिड़ियों की चहचहाट से
बकरी ने आवाज दी
बेसुध सो रही गाय को
फिर गाय ने रंभाकर
जगाया किसान को
यूं शुरु हुआ सृष्टि का संलाप
बैलों के कंधं पर
डाल दिया जुआठ
और किसान ने खोला
कर्म मा पहला पाठ
धरती के तन से
लगा हल का फाल
और सृष्टि ने जलाया
अरबों वाट का न्यूनांन बल्ब।
सूरल ने पहनाई
कर्मरत किसान को
किरणों की जयमाल।

* * * * *

बेटी एक एहसास

राजेश वर्मा
तकीनीकी लिपिक
उत्तरी मुद्रण वर्ग

सच कहूं तो बेटी परियों का रूप होती है
कड़कडाती ठंड में सुहानी धूप होती है।
बेटी है उदासी के मरीज की दवा जैसी
या ओस शीतल हवा जैसी।
वो खग की चहचहाहट है, या निश्चल खिलखिलाहट है।
आंगन में फैला उजाला है वो
या गुस्से पे लगा ताला है वो।
पर्वत की चोटी पे सूरज की किरण है वो
या जिन्दगी जीने का सही आचारण है वो।
उसकी ताकत छोटे घर को महल बना दे
जैसे काफिया किसी गजल को मुकम्मल बना दे।
बेटी एक अक्षर है जिसके बिन, वर्णमाला अधूरी है
अक्षर भी वो जो सबसे ज्यादा जरूरी है।
यह भी नहीं कि वो हर वक्त साथ होती है
बेटियां तो सिर्फ एक एहसास होती हैं।
वो मुझसे न गुड़िया मांगती ना खिलौना
पूछती हैं पापा कब आओगे प्लीज जल्दी बताना।
अपनी मजबूरी छिपा, जब मैं देता हूं जवाब,
तारीख व समय पूछते हुए अपनी उंगली पर करने लगती हिसाब।
जब मैं नहीं दे पाता सही सही जवाब
अपने आंसू छुपाने को चेहरे पर ढक लेती है किताब।
नहीं मांगती परदेश में गाड़ी में घूमना, या मंहगे होटल में खाना
कीमती खिलौनें नहीं मांगती है
ना अपनी गुल्लक के लिए ढेर सारे पैसे मांगती है।
बस वो मेरे साथ कुछ देर खेलना चाहती है।
मैं बस समझाता हूं बेटी बहुत काम है
मेरे किए बिना नहीं चलेगा।
मजबूरी भरे दुनियादरी के जबाव देने लगता हूं
और बेटी, झूटा ही सही, मुझे अहसास दिलाती है
कि जैसे सब समझ गई हो, मगर आंखे बंद कर रोती है।
जिंदगी ना जाने क्यूं उलझ जाती है।
और हम समझते हैं
कि बेटियां सब समझ जाती हैं, बेटियां सब समझ जाती हैं।

*****

भारत का विज्ञान और प्रौद्योगिकी में योगदान

धीरज कुमार श्रीवास्तव
अवर श्रेणी लिपिक,
सतर्कता अनुभाग, म.स.का.

- ❖ हड़प्पा सभ्यता के समय की गणित में डेसिमल प्रणाली का प्रयोग होने लगा था।
- ❖ नारद विष्णु पुराण में जोड़, घटाना, गुणा, भाग और क्यूब रूट्स तक का उल्लेख है।
- ❖ नौवीं सदी में महावीराचार्य नाम के गणितज्ञ ने एल.सी.एम. के कैलकुलेशन का सूत्र निकाला था। उस सदी के अन्त में गणितज्ञ श्रीधर ने वाणिज्यिक कैलकुलेशन में योगदान दिया।
- ❖ भारतीय गणितज्ञ बुधायन द्वारा 'पाई' का मूल्य ज्ञात किया गया था और उन्होंने जिस संकल्पना को समझााया उसे पाइथागोरस का प्रमेय कहते हैं। उन्होंने इसकी खोज छठवीं शताब्दी में की, जो यूरोपीय गणितज्ञों से काफी पहले की गई थी।
- ❖ भास्कराचार्य ने खगोल शास्त्र के कई सौ साल पहले पृथ्वी द्वारा सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने में लगने वाले सही समय की गणना की थी। उसकी गणना के अनुसार सूर्य की परिक्रमा में पृथ्वी का 365.258756 दिन का समय लगता है।
- ❖ सिन्धु घाटी की सभ्यता के दौरान मेहरगढ़ के लोगों ने दंत चिकित्सा की पद्धति की खोज कर ली थी।
- ❖ प्राचीन चिकित्सक सुश्रुत को 'शल्य चिकित्सा का जनक' माना जाता है। लगभग 2600 वर्ष पहले सुश्रुत और उनके सहयोगियों ने मोतिया बिंद, कृत्रिम अंगों को लगाना, शल्य क्रिया द्वारा अस्थिभंग जोड़ना, मूत्राशय की पथरी, प्लास्टिक सर्जरी और मस्तिष्क की शल्य क्रियाएं आदि की।
- ❖ आयुर्वेद मानव जाति के लिए ज्ञात सबसे आंरभिक चिकित्सा शाखा विज्ञान के जनक माने जाने वाले चरक ने 2500 वर्ष पहले आयुर्वेद का समेकन किया था।
- ❖ स्मॉल पॉक्स (चेचक) से बचाव के तरीके भी आठवीं सदी में पहले भारत में ही खोजे गए।
- ❖ हड़प्पा सभ्यता के दौरान बना लोथल बन्दरगाह विश्व सभ्यता का पहला बन्दरगाह माना जाता है।
- ❖ वैदिक काल में राजस्थान के उदयपुर में जिंक की खान से खनन कार्य होता था।
- ❖ चाणक्य के समय में बॉस और लोहे की चेन की मदद से झूलते पुल बनने लगे थे।
- ❖ कपड़ों की रंगाई की कला भारत की देन है।
- ❖ चीनी का उत्पादन गुप्त काल में ही होने लगाा था।
- ❖ सूत कातने वाले चरखे की खोज भारत में ही हुई।

❖ बादशाह अकबर के समय (1582 में) इंजीनियर फातुल्ला शिराजी ने प्रथम आटोमेटिक बंदूक बनायी।

❖ 18 वीं सदी तक भारत में डाक सेवा काफी उन्नत हो चुकी थी।

❖ 20 वीं सदी की शुरूवात में पौधों की वृद्धि नापने वाले यंत्र क्रेसकोग्राफ का आविष्कार किया।

❖ सी0 वी0 रमन को 1930 में भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला। रोशनी की किरणों पर उनकी खोज को 'रमन प्रभाव' के नाम से जाना गया।

* * * * *

गज़ल

डॉ नीलम कुमार बिड़ला
अभिलेखपाल ग्रेड–।।
आंन्ध्र प्रदेश भू–स्था आं केन्द्र

किश्त दर किश्त कोई, कहर शेष है।
फिर प्रलय की घड़ी का, गज़र शेष है।।

सभ्यता की इमारत दरकने लगी।
कल कहा जाएगा, खंडहर शेष है।।

सारा अमृत सियासत, हजम कर गई।
अब तो हर ओर केवल जहर शेष है।।

यूं तो उम्मीद का, ज्वार थम सा गया।
फिर भी लगता है कोई, लहर शेष है।।

उठ रहा है धुआं, जल रही बस्तियां।
वे परेशान है कि मेरा, घर शेष है।।

छल कपट और दहशत के इस दौर में।
किससे पूछें 'नीलम' कितनी उमर शेष है।।

समय का महत्व

अनुराग भटनागर
रिटेचर फोटो–।।

छोटी–छोटी जल की बूंदें
सागर को भर देती हैं
बालू की रज नन्हीं–नन्हीं
सूध भूमि रज देती हैं।

क्षण–क्षण कल इकट्ठा होकर
लम्बा युग बन जाता है
क्षण को बेकार न समझो
यह जग का निर्माता है।

छोटी–छोटी सी भूलें हमको
बुरा बना देती हैं
निज सुधार के पथ से हमको
कोसों दूर भगाती हैं।

दया भरे लधु काम हमारे
और प्यार भरे मीठे बोल
कर देते है सबके जीवन को
सुन्दर सुखमई अति अनमोल।

* * * * *

सुविचार

धीरज कुमार श्रीवास्तव
अवर श्रेणी लिपिक,
सतर्कता अनुभाग, म.स.का.

- जीवन को सफल बनाने के लिये शिक्षा की जरूरत है, डिग्री की नहीं। हमारी डिग्री है–हमारा स्वभाव, हमारी नम्रता हमारे जीवन की सरलता। अगर यह डिग्री नहीं मिली, अगर हमारी आत्मा जागृत न हुई तो कागज की डिग्री व्यर्थ है।

- जब आप जीवन में सफल होते हैं तब आपके दोस्तों को पता चलता है कि आप कौन है। जब आप जीवन में असफल होते हैं तब आपको पता चलता है कि आपके दोस्त कौन हैं।

- चन्द्रगुप्तः–किस्मत पहले ही लिखी जा चुकी है तो कोशिश करने से क्या मिलेगा.....?
  चाणक्यः–क्या पता किस्मत में लिखा हो कि कोशिश से ही मिलेगा.....।

- लगातार हो रही असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिये.....
  कभी–कभी गुच्छे की आखिरी चाबी ताला खोल देती है।
  सदा सकारात्मक रहें।

- इंसान को नमक की तरह होना चाहिए जो खाने में रहता है, पर दिखाई नहीं देता। और अगर ना हो तो उसकी बहुत कमी महसूस होती है।

- ईश्वर से कुछ मांगने पर न मिले तो उससे नाराज ना होना क्योंकि ईश्वर वह नहीं देता जो आपको अच्छा लगता है बल्कि वह देता है जो आपके लिए अच्छा होता है।

- जिन्दगी में इतनी गलतियां न करो की पेन्सिल से पहले रबर घिस जाये,
  रबर को इतना मत घिसो की जिन्दगी का पेज ही फट जाये।

- आप अपनी आंख बंद करके ध्यान लगाएं और खुद से पूछें कि कौन सा काम करते समय आपको आनंद आता है। ऐसी कौन सी दुनिया है, जो आपको बुलाती है। तभी तुम सही फैसला कर पाओगे।

- अपनी उम्र और पैसे पर कभी घमंड मत करना क्योंकि जो चीजें गिनी जा सकें वो यकीनन खत्म हो जाती हैं ।

  जितने अच्छे से आप दूसरों के मां–बाप से, दूसरों के बच्चों से बात करते हैं, उतने ही अच्छे से यदि अपनों से बात करने लगें तो घर में ही स्वर्ग उतर आये ।

- प्रभु के सामने जो झूकता है, वह सबको अच्छा लगता है लेकिन जो सबके सामने झूकता है, वह प्रभु को अच्छा लगता है।

- कहते हैं शब्दों के दांत नहीं होते हैं लेकिन जब शब्द काटते हैं तब बहुत ही दर्द होता है और कभी–कभी घाव इतने गहरे होते हैं कि जीवन समाप्त हो जाता हैं परन्तु घाव नहीं भरते हैं।

* * * * *

देहरादून

डी.पी.माटा 'कोमल'
टेक्निकल सेक्शन (जी.एण्ड आर.बी.)

देहरादून इक शहरे सुकून
लोग रखते मन में इक जुनून
इस शहर को हुस्ने शहर बनाएंगे
विश्व गौरव का ताज पहनाएंगे।

यह नगरी आमों की बगिया
मिठासे–ए लीची ने सभी को ठग लिया
खुशबुदार बासमती के धान की खेती
चकरोते की खट्टी मीठी छांव सबकी चहेती।

पावन धामों के द्वार की धरती
रिमझिम बारिश फुहार की नगरी
गुरु द्रोण जी की तप धरती
गुरु रामराय की जप नगरी।

शिवालिक के सुन्दर पहाड़ की धरती
शिवालय के सुन्दर मुरार की नगरी
सौंग के सरित प्रवाह की धरती
टौंस के निर्मल दरिया की नगरी।

आई एम ए याद दिलाता
वतन पर कुरबां देश के शहीद
आई ए एस अकादमी याद दिलाती
प्रशासन चलाने के खतरों के शौकीन।

एफ आर आई, वन अनुसंधान का प्रतीक
रिसर्च का मंदिर, वनों का अतीत।

सर्वे चौक है प्रतीक
सर्वेक्षण विभाग का स्वर्णिम अतीत
जार्ज एवरेस्ट का पैगाम
माउंट ऐवरेस्ट था मकाम।

ओ एन जी सी खनिज तेल का प्रतिष्ठान
राष्ट्र का गौरव भविष्य का उत्थान
फील्ड कर्मी रिग पर काम करते हैं
कड़ी मेहनत से खनिज तेल उत्पन्न करते हैं ।

दून नगरी के मुकुट मसूरी के हीरे
सर्द रातों में खूब चमकते हैं
मानों दुल्हनियां की चुनरी पर
रंग बिरगें सितारे झिलमिल करते हैं।

नव जागरण

बिपिन चन्द पान्डेय
सर्वेक्षक
पूर्वी उ.प्र. भू–स्था आं केन्द्र

ऐसे उठो ऐ नव निहालों
कि देश में नव जागरण हो।

कर्म की पूजा जहां हो
व सज्ञान रूपी आचरण हो।

जाति धर्म से ऊपर उठें सब
व एकता का व्याकरण हो।

हर निरंकुश सोच की
छाया पर वन्दे मातरम् हो।

त्याग दें निर्मम प्रथा को
ऐसी हमारी धारणा हो।

चुनों ऐसे पथ को
जहां नव निर्माण की परिकल्पना हो।

देश प्रगतिशील बनें
इस संकल्प की अवधारण हो।

सब बढ़ें उन्नति करें
व राष्ट्र में नव चेतना हो।

ऐसे उठो ऐ नव निहालों
कि देश में नव जागरण हो।

मां भारती

अमरदेव बहुगुणा
भण्डार अनुभाग, म.स.का.

हे मां मेरी मां भारती
हे मां मेरी मां भारती
विश्व में फहरे तिरंगा
निज आन से निज बान से
जीव जग के जिएं जीवन
मान से सम्मान से
ना दिखे कोई जिन्दगी
अब भूख से कहीं हारती
हे मां मेरी मां भारती ।।1।।

रक्त बीजों को मिटा दो
बनके मां अब रण चण्डिका
इनसानियत की लाज रख ले
हे मां मेरी जगदम्बिका
भीड़ पड़ने पर हे माता
तू इन्हें संहारती
हे मां मेरी मां भारती ।।2।।

दूरियां मिट जाएं जग की
सब विश्व इक परिवार हो
बन्धुत्व हो सारे जगत में
हो तो केवल प्यार हो
सत्य पथ पर चलें सब ही
और हों सभी सत्यार्थी
हे मां मेरी मां भारती ।।3।।

इनसान की आखों में जननि
इक दया और शर्म हो
भूल कर भी फिर जगत में
ना कहीं दुष्कर्म हो
सद्भावना जागे हर हृदय में
हो सभी भावार्थी
हे मां मेरी मां भारती ।।4।।

आजादी हो यहां अमर अपनी
हर जीव यहां आजाद हो
हो आचरण में शुद्धता
और प्रेम का संवाद हो
है यही बस प्रार्थना मां
हों सभी लाभार्थी
हे मां मेरी मां भारती ।।5।।

सद्ज्ञान की गंगा बहे
जहां जग नहाए शान से
एक भी डुबकी लगाकर
झूमें स्वाभिमान से
हो यही आशीष मां अब
बनके मां भागीरथी
हे मां मेरी मां भारती ।।6।।

यह सदी मां अब जानी जाए
सभ्यता के नाम से
शिक्षित हो जन–जन यहां
सब रहें आराम से
अपना घर ना खोए कोई
ना बने शरणार्थी
हे मां मेरी मां भारतीं।।7।।

कर्तव्य का पथ हो हमारा
हम राष्ट्र हित चिन्तन करें
इनसानियत भी हो शिखर पर
पल–पल यही मन्थन करें
तू ही मां गुरु भी हमारी
हम तेरे विद्यार्थी
हे मां मेरी मां भारती ।।8।।

संकीर्णता से ना बंधे हम
विस्तीर्ण अपनी सोच हो
कोई काम ऐसा ना करें हम
जिसका हमें अफसोस हो
सब जनों में भावना जागे
सब बने भावार्थी
हे मां मेरी मां भारती ।।9।।

गौ गांव गंगा को बचाना
इनसानियत का धर्म हो
सब रुढ़ियों को छोड़कर
विज्ञान ही अब मर्म हो
सब आने वाली पीढ़ियां भी
हमको स्नेह सत्कारती
हे मां मेरी मां भारती ।।10।।

सुनीति के पथ पर बढ़े हम
यह लक्ष्य सबका एक हो
कर्म हो पूजा हमारी
और भावनाएं नेक हो

ध्यान तेरा ही हो हर पल
तेरी करें सब आरती
हे मां मेरी मां भारती ।।11।।

धर्म हो इनसानियत का
बस नेकनीयत ही कर्म हो
चोरी–बुरी के कामों से ही
इस जगत में शर्म हो
सब ही होंवे पास वे जन
जो भी हो अभ्यार्थी
हे मां मेरी मां भारती ।।12।।
धैर्य धरना सीखें सब ही
और सब ही चिन्तन शील हों
आचरण हो जो हमारा
वही पत्थर मील हो
हो कृपा तेरी जगत पर
हो सभी पुण्यार्थी
हे मां मेरी मां भारती ।।13।।

अब ना कोई माता खोए
अपने किसी भी लाल को
फिर ना दुश्मन काटने पाए
सैनिकों के भाल को
सचेत हों हम हर समय
शूरबीर महारथी
हे मां मेरी मां भारती ।।14।।

झटपट झपट कर अरिदल पर
हम कर देगें रण में दलदल
धरा का धरा रह जाए जो
रिपुदल का सारा छल बल
हम ज्ञान की अलख जगाने वाले
मानवता हमें पुकारती
हे मां मेरी मां भारती।।15।।

✦✦✦

समय की कद्र करें

सोमबाला
खलासी (ग्रुप सी)

अहोरात्राणि गच्छन्ति सर्वेशां प्राणिनामिह।
आयूंशि क्षपयंतयाषु ग्रीष्मजल मिवां षवः ।।

जैसे ग्रीश्म ऋतु में सूर्य की किरणें जल का क्षय करती हैं वैसे इस संसार में आने वाले दिन–रात सब प्राणियों की आयु का क्षय किया करते हैं।

नन्दत्युदित आदित्ये नन्दन्त्यस्त मिते हानि।
आत्मनौ नाव बुद्धयन्ते मनुश्या जीवित क्षयम् ।।

जैसे सूर्य के उदय होने पर मनुष्य आनन्दित होते हैं वैसे ही सूर्य के अस्त होने पर भी मनुष्य आनन्दित होते हैं, परन्तु इस उदयास्त के साथ अपने जीवन का क्रमशः क्षय हुआ करता है इसको मनुष्य समझते नहीं।

सर्वस्याः सरितावारि प्रयात्यायाति चाकरात् ।
देहनद्याः पयस्त्सायुर्यात्येवायाति नो पुनः ।।

सब नदियों का पानी बहकर चला जाता है तथा वर्षा ऋतु में मेघों द्वारा फिर से आता है। परन्तु देह रूपी नदी जल बह कर चला ही जाता है, वह फिर कहीं से भी वापिस नहीं आता।

✦✦✦

पंच परमेश्वर

भगत सिंह भण्डारी
सर्वेक्षण सहायक, उ.वि.त. एवं संगणन खण्ड
ज्यो. एवं अनु. शाखा, भारतीय सर्वेक्षण विभाग

1985 दिसम्बर का महीना था मेरे पहले प्रोडेक्टिव फील्ड ऑफिसर श्री वाइ. एस. तोमर जी थे प्रभारी अधिकारी श्री एल.एम. खन्ना साहब थे जोगिन्दर नगर हिमाचल के करीब ही मेरा कैम्प था दिसम्बर प्रथम सप्ताह के प्रभारी अधिकारी ने फील्ड कार्य का निरीक्षण किया तथा तोमर साहब को कहा कि इसका कार्य ठीक है इन्हें आगे भेजो, दूसरे दिन सरकारी जीप से मुझे जोगेन्दर नगर बस अडडे पर छोड़ा गया वहां से करीब 2 बजे अपराहन बरोट के लिए बस चलती थी सामान बस की छत पर लाद कर मैं अपने पूरे स्क्वाड के साथ बस में बैठ गया बस अपने नियमित समय पर चली 8–10 किमी मण्डी रोड़ पर चलने के बाद बरोट रोड़ पर मुड़ी, ड्राइवर कुछ नया था रोड़ बहुत संकरी थी, बार–बार ऐसा लग रहा था कि बस अब गिरी तब गिरी सबने आंखे बन्द कर रखी थीं अपना ध्यान बांटने के लिए मैंने नक्शा निकाला मेरा कार्यक्षेत्र टोपो सीट नं0 52डी/16 में था जो कि हिमाचल का घौला धार क्षेत्र अति दुर्गम बड़ा भंगार/छोटा भंगार में पडता है। मैंने अपने बगल में बैठे हुए सज्जन से टोपो मानचित्र में दर्शाए स्थान छोड़ालौटुनू के बारे में पूछा, यह जगह बरोट से कितनी दूर पडेगी, सज्जन पहले चुप रहे फिर बोले आपको क्या करना है। मैंने जवाब दिया–मैंने धोड़ालौटुनू जाना है, वह थोड़ा रूके फिर बोले आपकी उम्र क्या है मैं असमंजस में पड़ गया मेरी उम्र करीब 29 साल थी फिर भी मैंने पूछ लिया मेरी उम्र का इस जगह से क्या वास्ता, सज्जन समझदार थे आराम से बोले मैं बरोट इण्टर कालेज में फिजिक्स का लैचरर हूं आप जिस जगह पर जाने की बात कर रहे हैं वहां पर आज कल चिड़िया भी नहीं रहती है मैं आपकी उम्र न पूछूं तो क्या करूं मैं सुन कर चुप हो गया, ठन्ड बहुत थी करीब 7.00 बजे सांय हम बरोट पहुंचे किसी तरह हिम्मत जुटा कर हमने टेन्ट लगाए रात काटने के बाद दूसरे दिन लोकलों की मदद से लुहार डीह कच्ची सड़क के साथ चल कर फिर 2 किमी की चढ़ाई चढ़ने के बाद स्वार वन विभाग के रेस्ट हाउस तक पहुंचे जो कि हिमाचल प्रदेश का सबसे दूरस्थ एवं दुर्गम गांव भूजलिंग हिमाचल प्रदेश के अन्तिम छोर के गांव से सिर्फ 1.5 किमी दूरी पर था।

क्षेत्रीय कार्य वन विभाग के लिए वन क्षेत्रों को विकसित करने तथा पुरानी आर.एफ की सीमाओं के पड़ताल के लिए किया जा रहा था उसी के कारण बीड वन क्षेत्र अधिकारी श्री वशिष्ट जी, डिप्टी रेंजर श्री कठोच जी व फोरेस्ट गार्ड श्री कृपाल सिंह भी सांय को रेस्ट हाउस में पहुंच गए रात्रि विश्राम से पहले रिजर्व फोरेस्ट कियाली गोठ के बारे में वार्ता हुई तथा दूसरे दिन क्षेत्रीय कार्य में मदद के लिए वन राखाओं को मेरे साथ चलने के लिए वन क्षेत्र अधिकारी ने आदेश किया, सुबह जब हम आठ बजे तैयार हुए तो मौसम बहुत सुहाना था मै अपने स्क्वाड व बन राखाओं के साथ क्षेत्रीय कार्य के लिए चल दिया चलते–चलते कार्य क्षेत्र में पहुंचने तक दिन के 12 बज चुके थे। बर्फानी हवाएं ऐसी चल रही थी कि मानो नाक, कान, सब काट खाएंगी किसी तरह अपनी पी.टी. सैट करने के पश्चात् स्पाट हाइट निकाली जो कि 3774.3 मीटर थी हाथ भी ठन्ड से सिकुड़ रहे थे मेरा

चेहरा पीला पड़ने लगा था इस बीच राखा दोनों समझदार थे उन्होंने झाउ घास (यह कच्ची भी जल जाती है) जला कर थोडा शरीर में गर्मी पैदा की, करीब आधे घन्टे बाद हवाएं चलना बन्द हुई मैंने आस–पास की डिटेल चैक की व Height throw की बर्फ बहुत थी मेरा स्क्वाड भी बर्फ उठा–उठा कर खेल रहा था मेरी इच्छा वहां रात रुकने की थी पर राखा ने मना कर दिया कि आज यहां कम से कम 10–12 फीट बर्फ गिरेगी मैं हंसने लगा क्योंकि मेरे गांव में भी बर्फ पड़ती है मैंने भी बचपन से बर्फ देखी है जब राखा ने 10–12 फीट बर्फ की बात की तो मैंने मजाक समझा लेकिन वह सत्य कह रहा था क्योंकि, 4 बजे सांय कार्य समाप्ति के बाद जब हम कैम्प की तरफ को वापस लौटे तो डेढ़ घंटे बाद बर्फ पड़नी शुरु हो चुकी थी, कैम्प पहुंचते–पहुंचते करीब रात्रि 8 बजे स्वार रेस्ट हाउस के आस–पास डेढ़ फीट बर्फ जम चुकी थी जो कि 2700 मीटर की उंचाई पर था। रात्रि विश्राम के बाद जब हमने सुबह बाहर देखा तो रेस्ट हाउस पूरा बर्फ के अन्दर ढका था रेस्ट हाउस के आस–पास करीब 7 फीट बर्फ थी दिन के समय जब राखा आया तो उन्होंने कहानी सुनाई, कि साहब आपसे पहले भी सन् 1962–63 के आस–पास गुप्ता साहब इसी कार्य के लिए आए थे किन्तु आप तो मानकर घोड़ालौटुनू से रात को ही वापस आ गए किन्तु वो साहब (गुप्ता जी) पूरी स्क्वाड व 5 लोकलों सहित वहीं गुफा में रुक गए वे अपना पूरा सामान लेकर गए थे रात को भयंकर बर्फबारी की वजह से वे लोग वहां फंस गए जब एक हफ्ता से ज्यादा समय हो गया था तो हमारे पांच गांवों (भुजलिंग, पोलिंग, स्वार, समालिंग एवं लोहारडीह) के पंचों ने मिलकर मीटिंग की व देवी के स्थान में जाकर देवी से मन्नत की कि हे देवी यदि हमारा साहब वापस आ जाएगा तो हम पांचों गांव वाले आपकी पूजा करेंगे व खाडू चढ़ाएंगे, कुदरत का करिश्मा कहे या देवी की कृपा रात को मौसम खुल जाता है पूर्ण चांदनी रात थी, गांवो के लोग भी ग्रुप में उन लोगों की खोज में निकल पड़े ठीक उसी तरह मौसम का फायदा उठाकर गुप्ता जी व उनके साथ के लोगों ने भी देखा कि चांदनी रात में पाला पड़ने से बर्फ सख्त हो चुकी है वे लोग भी रात्रि में ही हिम्मत जुटाकर वापसी के लिए चल दिए और आधे रास्ते में हमें मिले तो उनके बुझे चेहरों पर जो रौनक आई वह बयां करने लायक नहीं थी। तत्पश्चात दूसरे दिन पंचों की राय के मुताबिक देवी की पूजा की, आज भी वहां पर कोई भी मामला पंचो की राय से सुलझाया जाता है।

* * * * *

हिन्दी केवल हिन्दुओं की भाषा नहीं है,
अपितु वह हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई आदि
जो भारत में जन्म पाए हैं,
उन सब की भाषा है।

सातवलेकर

धनु–थ्उड़ा (धनुष–बाण की प्रतियोगिता)

एक पौराणिक विलुप्त प्रायः कला

सतीश. चंद्रा

उत्तराखण्ड एवं प. उ. प्र. भू–स्था आं केन्द्र देहरादून।

विश्व में उत्तराखण्ड देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध है, देहरादून जनपद का पर्वतीय क्षेत्र जौनसार–बावर का ऐतिहासिक, आर्थिक, धार्मिक, पौराणिक दृष्टि से आज भी विकासशील समाज की तुलना में अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक, पारम्परिक रीति–रिवाजों व वसुधैव कुटुम्बकम की परम्पराओं को जीवित रखें हुऐ हैं। जौनसार–बावर क्षेत्र देवभूमि के नाम से अपनी अलग पहचान बनाऐं हुऐ है, जहॉ पॉच पाण्ड़वों का वास रहा और चार देवताओं का निर्वाण स्थान रहा। इस पुनीत पावन क्षेत्र की दैव्य शक्ति चार महासू देवताओं के आशिर्वाद का प्रत्यक्ष प्रमाण इस परिक्षेत्र से जागृत व ख्यातिपूर्ण माना जाता है।

धनु–थ्उड़ाः–वस्तुतः यह धनुर्विद्या है जो कि इन क्षेत्रों में अर्थात् जौनसार–बावर तथा सीमान्त हिमाचल प्रदेश के सिरमोर जनपद के कुछ क्षेत्रों में कुछ अंशों में ही प्रचलित रह गया है। यहॉ के वृद्धजनों से इस संबंध में जानकारी प्राप्त करने पर पाया कि यह कला महाभारत कालीन है और अज्ञातवास के दौरान पाण्डवों के इस क्षेत्र में रहने के दौरान जो प्रथाएं प्रचलित हुई हैं उनमें से एक धनु–थ्उड़ा भी है।

सिरमोर जनपद एवं जौनसार–बावर क्षेत्रों में यह खेल बैसाखी के अवसर पर विसू के मेलों में प्रचलित है, तथा क्वानू एवं सिलई में प्रदर्शन देखने को मिला। खेल के आयुद्ध धनुष व बाण (तीर) बॉस का बना होता है तथा उसकी डोरी भी बॉस की खपचियों से निर्मित होती है, नियमों में घुटने से नीचे एवं ऐड़ी से ऊपर ही प्रहार किया जा सकता है शेष क्षेत्र में वार करना वर्जित होता है। दूसरा इसमें राजपूत राजपूत पर ही प्रहार करता है तथा प्रतिद्वंदी अलग–अलग गॉव के होते हैं। एक धनुर्धारी निशाना साधता है तो दूसरा प्रतिद्वंदी अपने स्थान पर गतिशील रहता है अर्थात हिलता–डुलता रहता है, इस प्रतियोगिता के लिए दूरी अब मात्र 10 से 15 फीट के मध्य रह गई है लोगों का मानना है कि पहले धनुर्धारी की एक टीम धनु से प्रहार करती हुई सामने से भागते प्रतिद्वंदी पर बांणों की बौछार करती थी, लेकिन धीरे–धीरे यह प्रचलन अब मात्र कुछ ही दूरी का रह गया है।

वेश–भूषा में अंगरखा की तरह का कुर्ता, ऊन का बना पैजामा जिसे जंगेल कहते हैं, हाथ की कोहनी की सुरक्षा के लिए पैड़ तथा अंगुलियों के खिंचाव के लिए कांगड़ी, पैरों की सुरक्षा के लिए ऊन अथवा टायरों से निर्मित जूते (खुर्सो) पहनते हैं। इस धनुष को खींचने व निशाना साधने के लिए काफी बल का प्रयोग किया जाता है अथवा अधिक बल की आवश्यकता पड़ती है, जिसके कारण ज्यादातर युवा इसे खेलने से कतराते हैं परन्तु कुछ वृद्धजनों एवं युवाओं में इतना उत्साह होता है कि वे लगभग 4 से 5 घंटों तक इस खेल को खेलते हैं। प्रतियोगिता के दौरान ढोल पर वीर रस की तालें बजाई जाती हैं, तथा चारों ओर एकत्रित जनसमूह उत्साहवर्द्धन करते रहते हैं। पूर्व में यह प्रतियोगिता युद्ध रूप में होती थी जिसमें कि छौड़ते भागते प्रतिद्वंदी पर निशाना शरसंधान किया जाता था बाण भी नोकिले होते थे जिनसे कि गलत निशाना लगने पर अक्सर घायल/बेहोश भी हो जाते थे, वर्तमान में नियमें में काफी परिवर्तन करके कुछ ढ़ील दी गई है। जैसे निशाना सिर्फ कुछ ही दूरी तक हलचल मात्र रह गई है और संधान की दूरी भी अब घटकर 5 से 7 फीट की रह गई है। ऊन का पैजामा जंगेल के अन्दर ऊन की पट्टीयां लिपटी रहती हैं, जिससे कि बाण की चोट न लग सके, इसी प्रकार बाण की नोक भी गोल होती है, ऊनी जूता खुर्सो जिन्हें मोजे कहना उपयुक्त होगा, खुर्सो के चारों ओर टायरों का कवर सा चढ़ाया जाता है जिससे चोट न लग सके, यूं भी ऐड़ी से नीचे बाण का प्रयोग वर्जित है अब यह खेल मात्र एक औपचारिकता बन गया है जो कि सरकारी संरक्षण एवं समर्थन के अभाव में विलुप्ति के कगार पर है।

धनु–थ्उड़ा प्रारम्भ करने से पूर्व मन्दिर अथवा घरों में इन युद्ध अस्त्र–शस्त्रों की पूजा अर्चना की जाती है एवं मीठा प्रसाद का भोग लगाकर बॉटा जाता है, तथा ढोल नगाड़ों के साथ आयोजित मेले में स्थित देवी–देवता का आशिर्वाद लेकर इस कला का प्रदर्शन किया जाता है, इस अवसर पर रण की ताल को भोण का ताल कहते हैं और ढोल की ताल में निम्न स्वर सुनाई देता है–जण जण तू जण ताण। धनु–धनुष, थ्उड़ा–बाण, बॉस की डोरी–पाणीच, पायजामा–जंगेल आदि शब्दों का स्थानीय बोली में प्रयोग किया जाता है। आवश्यकता है कुछ सरकारी एवं निजी सामाजिक संस्थाओं की जो आगे आकर इस पौराणिक लोक कला का संरक्षण करें जिससे महाभारत काल की अति प्राचीन परम्परा जीवित रह सके। (लेखक विलुप्त प्रायः पर्वतीय लोक संस्कृति, पर शोध, संकलन कर्त्ता हैं)।

उत्तराखण्ड आपदा– प्रकृति की चेतावनी

बचन सिंह
खलासी,
आर.टी.आई.सैल (म.स.का.)

मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ प्राकृतिक आपदाओं का भी इतिहास पुराना है। प्राकृतिक खतरों का प्रभाव जब मानव पर होने लगता है, तो उसे प्राकृतिक आपदा के नाम से जाना जाता हैं। इसके साथ साथ अवैज्ञानिक एवं अनियोजित विकास के कारण मानव–जनित आपदाओं का भी आरम्भ हुआ। आज सम्पूर्ण विश्व इन प्राकृतिक एवं मानव–जनित आपदाओं से प्रभावित हो रहा हैं।

16 एवं 17 जून, 2013 को उत्तराखण्ड में आयी आपदा ने भीषण तबाही मचाई जिसमें अपार जान–माल का नुकसान हुआ हैं। अगस्त, 2013 तक सरकारी आंकड़ों के हिसाब से 4500 से अधिक लोग इस आपदा में मारे गये व 5466 लोग लापता हुए है। इस आपदा में 1603 गांव प्रभावित हुए हैं, 2319 मकान आंशिक रूप से जबकि 1205 पक्के मकान पूर्णतया क्षतिग्रस्त हुए हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ पशुपालन को भारी नुकसान हुआ है। 9950 से अधिक छोटे बड़े पशु मारे गये। गृह मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक 1,08,653 लोगों को बचाया गया हैं। बादल, बारिश और पानी प्राकृतिक हैं, किन्तु असमय भारी बारिश, बादल का बम बनना, बर्फ कम पड़ना, ग्लेशियरों का तेजी से पिघलना, तापमान में वृद्धि होना, जलवायु परिर्वतन का सीधा कारण है। उत्तराखण्ड की आपदा प्राकृतिक हो सकती हैं लेकिन उससे हुआ विध्वंश मानव निर्मित है विद्वानों के अनुसार यह आपदा मानव निर्मित थी प्रकृति से छेड़–छाड़ व पर्यावरण प्रदूषित होने के कारण जो जलवायु परिर्वतन हुआ है, उससे हिमालय क्षेत्र प्रभावित हुआ है। पिछले कुछ वर्षों से उत्तराखण्ड में जलवायु परिर्वतन बड़ी तेजी से हो रहा है। अब कोई भी ऋतु एवं मौसम समय पर नहीं आ रहा है। सन् 2009 में उत्तराखण्ड में दशकों में सबसे ज्यादा सूखा पड़ा था, तो जुलाई 2010 तक सूखा एवं अगस्त–सितम्बर में इतनी वर्षा कि जितनी कई दशकों में नहीं हुई थी, अकेले देहरादून में 4 हजार एम.एल. से आधिक वर्षा हुई थी। उत्तराखण्ड में हर वर्ष पहाड़ों में बादल फटने की घटना आम हो गई है। जबकि पहले बहुत कम होती थी।

पर्यावरणविद् लम्बे समय से जंगल, नदी, जमीन, के प्रति की जा रही छेड़–छाड़ से चेता रहे है। चार दशक पूर्व उत्तराखण्ड में अगर चिपकों आन्दोलन सफल नहीं होता और जंगलों की हजामत पूर्व की भांति जारी रहती और साथ में चूना–पत्थर खनन भी जारी रहता तो 16–17 जून की आपदा की तस्वीर और भी डरवानी हो सकती थी। हम दिन प्रतिदिन अपनी बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रकृति से छेड़–छाड़ करते जा रहे हैं। हम किसी न किसी रूप में पर्यावरण को प्रदूषित करने का काम करते जा रहे हैं। कारखानों से निकलने वाला धुंआ वातावरण में गैसीय संतुलन बिगाड़ रहा है। अमेरिका एवं चीन जैसे विकसित देशों के लोगों को गैस–मास्क लगा कर घूमना पड़ रहा है। विकास की दौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में, हम अपनी धरोहर को नष्ट करते जा रहे है। अपनी जरूरत पूरा करने के लिए पेड़ों को काट कर वहां रिहायशी

कालोनी व नगर बसा रहे हैं। इससे मौसम का चक्र विगड़ा है। पर्यावरण भौतिक वातावरण का द्योतक है। आजकल के यान्त्रिक और औद्योगिक युग में इसको प्रदुषण से बचाना आवश्यक है। सामान्य जीवन प्रक्रिया में जब अवरोध उत्पन्न होता है तब पर्यावरण की समस्या जन्म लेती है। यह अवरोध प्रकृति के कुछ तत्वों के अपने मौलिक अवस्था में न रहने और विकृत हो जाने से प्रकट होता है। कल–कारखानों, उद्योगों, मोटर वाहनों का बढ़ता उत्सर्जन, खनिज ईंधनों के अंधाधुंध प्रयोग से कार्बनडाईऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रसऑक्साइड आदि गैसे निकलती हैं, इनके कारण से हरित–गृह नामक वायुमंडलीय प्रक्रिया को बल मिलता हैं, जो पृथ्वी के तापमान में वृद्धि करता है और मौसम में अवांछनीय बदलाव ला देता है, औद्यौगिक गतिविधियों से क्लोरोफ्लोरो कार्बन (सी.एफ.सी.) मानव निर्मित गैस का उत्सर्जन होता है। जो ओजोन परत को नुकसान पहुॅचाती है। ओजोन परत सूर्य की पराबैंगनी विकिरणों से हमें बचाती है। इन गैसों के उत्सर्जन से पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है। पिछले सौ वर्षों में वायुमण्डल का तापमान 3 से 6 डिग्री सेल्सियस बढ़ा है। एक अध्ययन के अनुसार दुनियां के प्रमुख 36 शहरों में वायु प्रदूषण से 57,779 लोगों की अकाल मृत्यु हो जाती है। हमारे देश में प्रदूषण के कारण 150 लोगों की मृत्यु प्रतिदिन होती है। और सैकड़ों लोग हृदय एवं फेफड़ों की जानलेवा बीमारियों के शिकार हो जाते हैं।

दुनियॉ भर में 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। सन् 1973 ई0 में सर्वप्रथम अमेरिका में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया था। हर वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में दो चार पोधे लगाकर अपने दायित्व की पूर्ति कर लेते हैं, ततपश्चात् हमें यह भी पता नहीं होता कि वह पौधा पेड़ भी बना अथवा सूख गया। बस पौधे रोपने तक ही हमारे दायित्व की पूर्ति हो जाती है। हमें वृक्ष लगाने होंगे लेकिन सरकारों की तरह कागजों पर नहीं। विश्व में प्रति वर्ष 1.1 करोड़ हेक्टेयर वन काटा जाता है। अकेले भारत में 10 लाख हेक्टेयर वन प्रतिवर्ष काटा जाता है। विकास की अंधी दौड़ के पीछे मानव प्रकृति का नाश करने लगा है। विश्व में बढ़ते पर्यावरण के नुकसान पर संयुक्त राष्ट्र की पर्यावरण संस्था (यूनेप) ने गहरी चिन्ता व्यक्त की है। यूनेप के अनुसार ''पर्यावरण के नुकसान से जो क्षति हो रही है वह हाल के दशक के मानव समाज की कई उपलब्धियों को छोटा बना रही है।''

उत्तराखण्ड में चल रहे अनेकों बांधों के निर्माण और सड़कों के निर्माण में इस्तेमाल होने वाले डायनामाइट की भारी बमबारी से पहाड़ों में हलचल पैदा हुई है। विकास के लिए जंगलों का विनाश किया गया है खनन ने अनेकों स्थानों पर भू–स्खलन व बाढ़ की समस्या को बढ़ा दिया है। बांध बनाने के लिए पहाड़ों में सुरंग खोदकर नदियों को एक जगह से दूसरे जगह पहुॅचाने का काम जारी है। प्रस्तावित सभी विद्युत परियोजनाएं अगर पूरी होती हैं, तो इससे लगभग 500 कि0मी0 की सुरगें पहाड़ों के अन्दर खोद कर बनेगी, जो उत्तराखण्ड के पहाड़ों के लिए खतरनाक है। उत्तराखण्ड को उर्जा प्रदेश बनाने की होड़ सब पर भारी पड़ रही है। प्रदेश में इस समय 4000 मेघावाट विद्युत का उत्पादन किया जा रहा है। और अधिक से अधिक बिजली पाने की ख्वाहिश में प्रदेश में जल विद्युत ऊर्जा परियोजनाओं की बाढ़ आई है। अलकनंदा और उसकी सहायक नदियों पर ही करीब 70 जल विद्युत परियोजनाएं प्रस्तावित हैं। नदियों कि किनारे बस्तियां बनना जारी

है, नदियों में कचरा–कबाड़ा फेंका जा रहा है जो पर्यावरण को नुकसान पहुॅचा रहा हैं। हिन्दु धर्म की आस्था की मुख्य धरोहर गंगा अपनी बदनसीबी के आंसू रो रही है, राजा भागीरथ ने कभी नहीं सोचा होगा कि जो गंगा मानव उद्धार के लिए आयी थी, वह आज खुद को तारने के लिए किसी भागीरथ की राह देखेगी। उत्तराखण्ड त्रासदी से चिंतित सर्वोच्च न्यायालय ने नई पनबिजली परियोजनाओं को शुरू करने पर रोक लगा दी है। तथा इन परियोजनाओं से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन करने का निर्देश दिया हैं।

उत्तराखण्ड आपदा एक प्राकृतिक चेतावनी के तौर पर हमें देखनी चाहिए। माना कि जल विद्युत परियोजनाएं देश की ऊर्जा आवश्यकता और राज्य की आमदनी के लिए जरूरी है लेकिन इस से पैदा होने वाली पारिस्थितिकीय प्रभाव को भी ध्यान में रखना होगा, इनका निर्माण करते समय हमें ध्यान रखना होगा कि जल तंत्र और पहाडों को कोई नुकसान न हो । हमें यह नहीं भुलना चाहिए कि पर्यावरण प्रभावित होता है तो पर्यटन भी प्रभावित होगा।, अनियंत्रित इमारतों व निर्माण पर रोक लगनी चाहिए। नदियों के किनारों से अतिक्रमण हटना चाहिए और प्रकृति से छेड़–छाड़ बन्द करनी चाहिए। हालांकि विकास जरूरी है परन्तु यह विकास कम से कम पर्यावरण के नुकसान पर नहीं होना चाहिए विकास के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण अति आवश्यक है। ताकि हम विकास की कीमत पर मानव विनाश की गाथा न लिख दें।

*****

हंसगुल्ले

जसबीर सिंह, खलासी
हिन्दी अनुभाग, मसका

डॉक्टर – आपके तीन दांत कैसे टूट गए।
मरीज – पत्नी ने कड़क रोटी बनाई थी।
डॉक्टर – तो खाने से इनकार कर देते ।
मरीज – डाक्टर साहब वही तो किया था।

***

सारी रात गायब रहने के बाद– सुबह जब पति घर पहुंचा तो पत्नी ने गुस्से में कहा अब सुबह के सात बजे किसलिए आए हो।
पति ने सिर झुका कर जबाब दिया– नाश्ता करने के लिए।

***

पिता –देखो बेटे, जुआ नहीं खेलते यह ऐसी आदत है कि यदि इसमें आज जीतोगे तो कल हारोगे। परसों जीतोगे तो उससे अगले दिन हार जाओगे।
बेटा –बस पिताजी मैं समझ गया। आगे से मैं एक दिन छोड़कर खेला करुंगा ।

***

गज़ल

डॉ नीलम कुमार बिड़ला
अभिलेखपाल ग्रेड–।।
आंन्ध्र प्रदेश भू–स्था आं केन्द्र

धूप के घर नौकरी की, अर्जियां लिखता रहा ।
एक सूरज था समय की, मर्जियां लिखता रहा।।

घूमता था साथ लेके, कहकहों की पुस्तकें।
आके मेरे गांव वो ही, मर्सिया लिखता रहा।।

लूटता है कौन आकर, गांव में बेटी की लाज।
एक बूढ़ा उत्तरों में, वर्दियां लिखता रहा।।

जल गई थी रस्सियां, एक ऐंठ बाकी थी अभी।
राख के इस ढ़ेर को वो,रस्सियां लिखता रहा।।

उनको जिद थी, बनके तूफां राह में आते रहे।
नीलम को जिद थी, खुद को नन्हा आशियां लिखता रहा ।

******

आरोग्य संबंधी दोहे

(संकलन कर्ता) श्रीमती पूनम काला
हिन्दी अनुवादक,मसका

1. शीतल जल में डालकर, सौंफ गलाओ आप ।
   मिश्री के संगकर मिटे दाह–संताप ।।
2. फटे बिवाई या मुँह फटे, त्वचा खुरदरी होय ।
   नींबू, मिश्री आंवला सेवन से सुख होय ।।
3. सौंफ इलाइची गर्मी में, लौंग सर्दी में खाय ।
   त्रिफला सदाबहार है रोग सदैव हर जाय ।।
4. लौंग इलायची चाबिये, रोजाना दस पांच ।
   हटे श्लेष्मा कण्ठका, रहो स्वस्थ, है सॉच ।।
5. खाँसी जब–जब भी करे, तुमको अति बेचैन ।
   सिकी हींग अरु लौंग से मिले सहज ही चैन ।।

महासर्वेक्षक कार्यालय में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन एक संक्षिप्त रिपोर्ट।

महासर्वेक्षक के कार्यालय में भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियम, नियम एवं निर्देशों के अनुपालन तथा कार्यान्वयन हेतु मुख्यालय स्तर पर सत्त प्रयास किए गए जिसकी संक्षिप्त रिपोर्ट निम्नवत् है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकों का आयोजन :–

वर्ष 2012–13 के दौरान महासर्वेक्षक के कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया गया उक्त बैठकों में संघ का राजकीय कार्य हिन्दी में करने के लिए सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विचार–विमर्श किया गया।

वार्षिक हिन्दी गृहपत्रिका ''सर्वेक्षण'' दर्पण के नवें अंक का प्रकाशनः–

राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार कर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के हिन्दी लेखन को सृजनात्मक बनाने के उद्देश्य से दिनांक 30 अक्टूबर, 2012 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका सर्वेक्षण दर्पण के अंक 09 का विमोचन अपर महासर्वेक्षक मेजर जनरल आर0 सी0 पाढ़ी द्वारा किया गया।

हिन्दी पत्राचार

वर्ष 2011–2012 के दौरान संघ का राजकीय कार्य हिन्दी में करने के लिए म.स.का. में सघन उपाय किए गए। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत सभी कागजात द्विभाषी जारी किए गए। हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया गया। जिसके फलस्वरूप वर्ष 2012 की अवधि में कार्यालय द्वारा 'क' 'ख़' 'ग' क्षेत्र के साथ हिन्दी पत्राचार का प्रतिशत निम्नवत् रहा :–

अवधि	'क' क्षेत्र में	'ख़' क्षेत्र मे	'ग' क्षेत्र में
30 जून, 2012	91.8%	91.1%	85.4%
30 सितम्बर, 2012	90.6%	89.8:	86.4%
31 दिसम्बर, 2012	89.5%	89.7%	85.7%
31 मार्च, 2013	89.5%	82.5%	86.9%

प्रशिक्षण :– रिपोर्टाधीन अवधि में हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत कार्यालय के 2 अवर श्रेणी लिपिकों ने हिन्दी टाइपिंग की परीक्षा उत्तीर्ण की।

प्रोत्साहन योजना

वर्ष 2012–2013 के दौरान सरकारी कामकाज मूलरूप से हिन्दी में करने के लिए टिप्पण और आलेखन तथा हिन्दी टाइपिंग की प्रोत्साहन योजना लागू रही हिन्दी में टिप्पण और आलेखन की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत कार्यालय के 3 कार्मिकों तथा हिन्दी टाइपिंग प्रोत्साहन भत्ता योजना के अंतर्गत 7 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया।

कार्याशालाः–

महासर्वेक्षक का कार्यालय में दिनांक 22.02.2013 को अधिकारियों/कर्मचारियों को कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य प्रशिक्षण देने हेतु हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

निरीक्षण :–

इस अवधि के दौरान महासर्वेक्षक कार्यालय के विभिन्न अनुभागों का हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति एवं कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा/समारोह का आयोजन

महासर्वेक्षक कार्यालय में 14 से 28 सितम्बर 2012 तक हिन्दी दिवस/पखवाड़ा मनाया गया। विभिन्न हिन्दी विषयक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को पुरस्कृत करने के लिए 30 अक्टूबर 2012 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता अपर महासर्वेक्षक मेजर जनरल आर. सी. पाढ़ी ने की। समारोह का शुभारंभ अपर महासर्वेक्षक महोदय ने दीप प्रज्वलित कर किया। तत्पश्चात् महासर्वेक्षक कार्यालय के स्टाफ द्वारा वंदना–गान के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया।

सहायक निदेशक (रा.भा.) ने वर्ष 2011–2012 के दौरान महासर्वेक्षक कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। अपर महासर्वेक्षक महोदय ने हिन्दी विषयक प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं अनुभाग में हिन्दी में सराहनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों को पुरस्कृत किया।

हिन्दी विषयक प्रतियोगिताओं का आयोजन

महासर्वेक्षक कार्यालय मे 10 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2012 तक आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नवत् हैं :–

(1) हिन्दी में श्रुतलेख (डिक्टेशन) :–

(ग्रुप 'ए' अधिकारियों के लिए)

1. श्रीमती जसपाल कौर प्रद्योत, निदेशक (प्रशा. एवं वित्त) – प्रथम
2. श्री आर. के. खरे, अधीक्षक सर्वेक्षक – द्वितीय
3. श्री चन्द्रपाल, अपर महासर्वेक्षक – तृतीय
4. श्री डी.बी. राणा, अधीक्षक सर्वेक्षक – प्रोत्साहन
5. श्री निरंजन सामंतराय, अधीक्षक सर्वेक्षक – विशेष प्रोत्साहन

(2) हिन्दी निबंध :–

1. श्री ए. के. सक्सेना, कार्या. अधी.,स्था.प्रशा. एवं वे. अनु. – प्रथम
2. श्री मनजीत सिंह पाल, जे.टी.एम.एस. ग्रेड–II, उप भ. अनु. – द्वितीय
3. श्री अमित कुमार वर्मा, अ. श्रे. लि., विधिक अनुभाग – तृतीय
4. श्री जय सिंह, सर्वेक्षक सहायक, तकनीकी अनुभाग – प्रोत्साहन

(3) चित्र के आधार पर कहानी लेखन :–

(ग्रुप 'डी' के लिए)

1. श्री बचन सिंह, खलासी, आर.टी.आई. अनुभाग – प्रथम
2. श्रीमती सोमबाला, खलासी, कार्य अध्ययन एकक – द्वितीय
3. श्री रामानुज, खलासी, स्था. प्रशा. एवं वे. अनुभाग – तृतीय
4. श्री अनुज कुमार, खलासी, हिन्दी अनुभाग – प्रोत्साहन
5. श्री कैलाश कुमार, दफादार, स्था.प्रशा. एवं वे. अनुभाग – प्रोत्साहन

(4) हिन्दी में श्रुतलेख (डिक्टेशन) :–

(ग्रुप 'डी' के लिए)

1. श्री रामानुज, खलासी, स्था. प्रशा. एवं वे. अनुभाग – प्रथम
2. श्री अनुज कुमार, खलासी, हिन्दी अनुभाग – द्वितीय
3. श्री हरि सिंह, खलासी, स्था. प्रशा. एवं वे. अनुभाग – तृतीय
4. श्रीमती सोमबाला, खलासी, कार्य अध्ययन एकक – प्रोत्साहन
5. श्री नवीन्द्र कुमार, खलासी, गोपनीय अनुभाग – प्रोत्साहन

(5) हिन्दी में टिप्पण और आलेखन :–

(तकनीकी संवर्ग के लिए)

1. श्री आर.के. थपलियाल, अधि0 सर्वे0, तकनीकी अनुभाग – प्रथम
2. श्री जय सिंह, सर्वेक्षण सहायक, तकनीकी अनुभाग – द्वितीय
3. श्री इन्द्रेश सचदेवा, मानचित्रकार, ग्रेड–।। तक अनुभाग – तृतीय
4. श्री अर्जुन सिंह, अधिकारी सर्वेक्षक, तकनीकी अनुभाग – प्रोत्साहन

(6) हिन्दी में टिप्पण और आलेखन :–

(मिनिस्टीरियल संवर्ग के लिए)

1. श्री ए. के. सक्सेना, का.अधी.,स्था.प्रशा.एवं वे. अनुभाग – प्रथम
2. श्री डी.एस. रावत, सहायक, स्था. प्रशा. एवं वे. अनुभाग – द्वितीय
3. श्री रणजीत सिंह, प्र.श्रे.लि., स्थापना–1 अनुभाग – तृतीय
4. श्री के.ए. सिद्दीकी, सहायक, स्था. प्रशा. एवं वे. अनुभाग – प्रोत्साहन

(7) कम्प्यूटर पर हिन्दी में वर्ड प्रोसेसिंगः–

1. श्री अनुज कुमार, खलासी, हिन्दी अनुभाग – प्रथम
2. श्री राजेश चचडा, प्र.श्रे.लि., विधिक अनुभाग – द्वितीय
3. श्री रणजीत सिंह, प्र.श्रे.लि., स्थापना–1 अनुभाग – तृतीय
4. श्री अमित कुमार वर्मा, अ.श्रे.लि., विधिक अनुभाग – प्रोत्साहन

(8) हिन्दी स्व रचित कविता :–

1. श्री टीकम सिंह, प्रुवर, ग्रेड–।।, स्थापना–1 अनुभाग – प्रथम
2. श्री एन. सी. जोशी, सर्वे. सहा., जी.आई.एस.टी. सेंटर – द्वितीय
3. श्री अमर देव बहुगुणा, भण्डार सहायक, भंडार अनुभाग – तृतीय

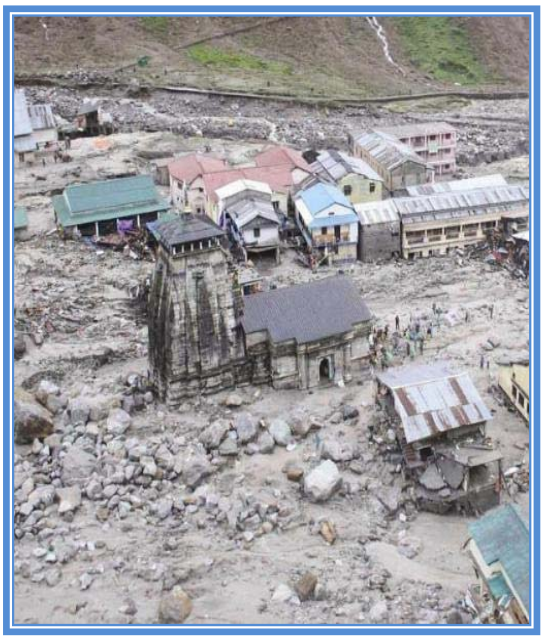

केदारनाथ घाटी, उत्तराखण्ड में आई
प्राकृतिक आपदा में दिवंगत आत्माओं को
भारतीय सर्वेक्षण विभाग की ओर से
भावभीनी श्रद्धांजलि।